केंद्रीय विद्यालय संगठन क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर

Kendriya Vidyalaya Sangathan Regional Office Raipur

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

HINDI

Class - XII

Question Bank Term- II 2021-22

केंद्रीय विद्यालय संगठन क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर

Kendriya Vidyalaya Sangathan Regional Office Raipur

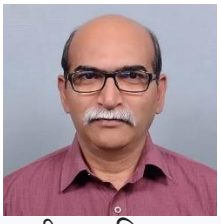

उपायुक्त का संदेश

रायपुर क्षेत्र के लिए दसवीं और बारहवीं कक्षा के विभिन्न विषयों के लिए अध्ययन सामग्री प्रकाशित करना मेरे लिए बहुत खुशी की बात है। सीबीएसई द्वारा जुलाई 2021 के महीने में जारी परिपत्र संख्या 51 और 53 के माध्यम से पाठ्यक्रम और मूल्यांकन प्रक्रिया में हालिया परिवर्तनों से परिचित और परिचित होने से छात्रों को परीक्षा के लिए खुद को बेहतर तैयार करने में मदद मिलेगी। अवधारणाओं को समझने, प्रश्नों को समझने के लिए इकाइयों और अध्यायों का अच्छा और गहरा ज्ञान आवश्यक है। अध्ययन सामग्री परीक्षा से ठीक पहले त्वरित संशोधन के लिए उपयुक्त और प्रभावी नोट्स बनाने में मदद करती है।

COVID-19 महामारी की अभूतपूर्व परिस्थितियों के कारण छात्रों और शिक्षकों को कक्षाओं में आमने-सामने बातचीत करने का बहुत सीमित अवसर मिल रहा है। ऐसी स्थिति में पर्यवेक्षित और विशेष रूप से तैयार किए गए मूल्य बिंदु छात्रों को उनकी समझ और विश्लेषणात्मक कौशल को एक साथ विकसित करने में मदद करेंगे। प्रश्न बैंक और अभ्यास पत्रों को पढ़ने के बाद छात्रों को अत्यधिक लाभ होगा। अध्ययन सामग्री एक विशेष बंधन का निर्माण करेगी और शिक्षकों और छात्रों के बीच जोड़ने वाली कड़ी के रूप में कार्य करेगी क्योंकि दोनों एक साथ निर्देशित और अनुभवात्मक अधिगम कर सकते हैं। यह छात्रों को रचनात्मक और महत्वपूर्ण सोच कौशल की खोज और विश्लेषण करने की आदत विकसित करने में मदद करेगा। केस स्टडी, तर्क और पता लगाने से संबंधित प्रश्न पैटर्न में पेश की गई नई अवधारणाएं छात्रों को विभिन्न स्थितिगत समस्याओं पर स्वतंत्र निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाएगी। विभिन्न अध्ययन सामग्री को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि छात्रों को उनकी आत्म-सीखने की गति में मदद मिल सके। यह महान शैक्षणिक सिद्धांत पर जोर देता है कि 'सब कुछ सीखा जा सकता है लेकिन कुछ भी नहीं सिखाया जा सकता है'। स्व-प्रेरित सीखने के साथ-साथ पर्यवेक्षित कक्षाएं उन्हें नई शैक्षणिक ऊंचाइयों को प्राप्त करने में मदद करेंगी।

मैं उन सभी प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों का तहे दिल से आभार व्यक्त करना चाहता हूं जिन्होंने सभी विषयों के लिए अध्ययन सामग्री तैयार करने की परियोजना को पूरा करने के लिए अथक प्रयास किया है। इस परियोजना को सफल बनाने में उनका अपार योगदान प्रशंसनीय है।

हैप्पी लर्निंग और शुभकामनाएँ!

(विनोद कुमार)
उपायुक्त

संरक्षक

श्री विनोद कुमार

उपायुक्त, केंद्रीय विद्यालय-संगठन,

रायपुर संभाग

मार्गदर्शक

श्रीमती बिरजा मिश्रा

सहायक आयुक्त, केंद्रीय विद्यालय-संगठन,

रायपुर संभाग

एवं

श्री ए.के.मिश्रा

सहायक आयुक्त, केंद्रीय विद्यालय-संगठन,

रायपुर संभाग

निर्देशक

श्री रमाकांत कौशिक

प्राचार्य, केंद्रीय विद्यालय बैकुंठपुर

रायपुर संभाग

सामग्री-विन्यास

श्री रविन्द्र कुमार यादव

स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी) केन्द्रीय विद्यालय सी.आई.एस.एफ. भिलाई

श्री दिनेश चन्द्र कौशिक

स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी) केन्द्रीय विद्यालय कांकेर

श्री शिव कुमार साहू

स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी) केन्द्रीय विद्यालय नं.1, रायपुर (प्रथम पाली)

श्रीमती मोहिनी साहू

स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी) केन्द्रीय विद्यालय खैरागढ़

कु0 नजमा फिरदोश

स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी) केन्द्रीय विद्यालय बैकुंठपुर

प्राक्कथन

विद्यार्थियों की उच्चतम शैक्षिक निष्पत्ति एवं सर्वोत्तम परीक्षा परिणाम की प्राप्ति शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के सफल निष्पादन का महत्वपूर्ण सूचकांक है। विद्यार्थियों के शत -प्रतिशत शैक्षिक प्रदर्शन को सुनिश्चित करने के लक्ष्य से प्रभावी नीति- निर्धारण एवं समुचित संसाधन उपलब्ध कराना केन्द्रीय विद्यालय संगठन की सर्वोच्च प्राथमिकता रही है।

प्रस्तुत प्रश्न बैंक का प्रयोग परीक्षा की तैयारी के रूप में किया जाना वांछित परिणाम की प्राप्ति हेतु अभिप्रेरित है। प्रस्तुत सामग्री के० मा० शि० बोर्ड द्वारा निर्धारित प्रश्न-पत्र के अद्यतन प्रारूप के अनुसार व्यवस्थित की गई है| जिसमें भाषागत सरलता एवं विषयगत स्पष्टता सुनिश्चित करना प्रमुख उद्देश्य रहा है। परीक्षा की दृष्टि से प्रमुख सुझाव प्रत्येक खंड के प्रारम्भ में दिये गए हैं। प्रश्नोत्तर विषय से संबन्धित विशिष्ट तकनीकी शब्दावली का सरलीकरण एवं अभ्यास हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न-कोश उपलब्ध कराया गया है| जिसका निरंतर अभ्यास विद्यार्थियों को अधिक आत्मविश्वास तथा सम्यक विषय ज्ञान से सुसज्जित कर सर्वोत्तम प्रदर्शन हेतु सक्षम बनाने में उपयोगी एवं सहायक सिद्ध होगा ।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन रायपुर संभाग के निर्देशानुसार दिनांक-18-01-2022 से दिनांक- 31-01-2022 तक छात्रों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर विशेष प्रश्न बैंक निर्माण की ज़िम्मेदारी दी गई। इसे पाँच भागों में विभाजित किया गया था | प्रश्न बैंक सभी तरह के विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए निर्मित की गई है, ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थी इससे लाभान्वित हों|

इस अवसर पर मै केंद्रीय विद्यालय संगठन रायपुर संभाग के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होने केंद्रीय विद्यालय- बैकुंठपुर के प्रति अपना विश्वास प्रकट करते हुए महत्वपूर्ण जिम्मेदारी कक्षा बारहवीं के हिंदी(केन्द्रिक) विषय में प्रश्न बैंक निर्माण का गुरुतर कार्य दिया और साथ ही मै संगठन के सभी पदाधिकारियों, शिक्षकों और विद्यार्थियों को इस पाठ्य सामग्री के संदर्भ में अपने बहुमूल्य सुझाव देने के लिए आमंत्रित करता हूँ। ताकि भविष्य में इस प्रकार की सामग्री को और भी अधिक उपादेय, समीचीन और सार्थक बनाया जा सके|

सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाओं सहित . . . .

रमाकांत कौशिक
प्राचार्य एवं संयोजक
केन्द्रीय विद्यालय, बैकुंठपुर (रायपुर संभाग)।

कक्षा 12वीं हिन्दी आधार परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन 2021-22 (कोड सं.-302) द्वितीय सत्र		
विषय-वस्तु		**अंक**
1.	**कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन (अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक के आधार पर)**	**20**
1.	दिए गए तीन नए और अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में रचनात्मक लेखन (5 अंक x 1 प्रश्न)	05
2.	औपचारिक विषय से संबंधित पत्र लेखन (विकल्प सहित) (5 अंक x 1 प्रश्न)	05
3.	कहानी / नाटक की रचना प्रक्रिया पर आधारित दो लघु उत्तरीय प्रश्न (विकल्प सहित) (3×1)+(2x1)	05
4.	समाचार लेखन / फीचर लेखन / आलेख लेखन पर आधारित दो लघु उत्तरीय प्रश्न (विकल्प सहित) (3×1)+(2x1)	05
2.	**पाठ्यपुस्तक**	**20**
	आरोह भाग – 2	
5.	**काव्य भाग**	
	कविताओं की विषयवस्तु से सम्बंधित तीन में से दो लघुत्तरात्मक प्रश्न (3×2)	06
6.	**गद्य भाग**	
	पाठों की विषयवस्तु पर आधारित चार में से तीन बोधात्मक प्रश्न (3×3)	09
7.	**वितान भाग – 2**	
	विषयवस्तु पर आधारित चार में से दो निबंधात्मक प्रश्न (3+2)	05
3.	**आंतरिक मूल्यांकन**	
(ख)	परियोजना कार्य	**10**
कुल		**50**

सत्र-2 2021-22 में निम्नलिखित पाठ सम्मिलित किए गए हैं-

पाठ्यपुस्तक – आरोह भाग- 2

काव्य खंड	**गद्य खंड**
शमशेर बहादुर सिंह – उषा	फणीश्वर नाथ रेणु – पहलवान की ढोलक
तुलसीदास – (i) कवितावली (ii) लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप	रजिया सज्जाद जहीर – नमक
फिराक गोरखपुरी - (i) रूबाइयाँ (ii) गजल	बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर - (i) श्रम विभाजन और जाति-प्रथा (ii) मेरी कल्पना का आदर्श समाज

अनुपूरक पाठ्यपुस्तक- वितान भाग – 2

1. ओम थानवी – अतीत में दबे पाँव
2. ऐन फ्रऐंक – डायरी के पन्ने

अभिव्यक्ति और माध्यम

1. कैसे करें कहानी का नाट्य रूपान्तरण 2. कैसे बनता है रेडियो नाटक
3. नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन 4. पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया
5. विशेष लेखन – स्वरूप और प्रकार

अप्रत्याशित विषय (रचनात्मक लेखन)

अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कम समय में अपने विचारों को संकलित कर उन्हें सुंदर और सुघड़ ढंग से अभिव्यक्त करने की चुनौती है।

लेखन का आशय यहाँ याँत्रिक हस्तकौशल से नहीं है। उसका आशय भाषा के सहारे किसी चीज पर विचार करने और इस विचार को व्याकरणिक शुद्धता के साथ सुसंगठित रुप में अभिव्यक्त करने से है।

ऐसे लेखन के लिए आपको जिस तरह के विषय दिए जा सकते हैं, उनकी संख्या असीमित है। आपके सामने की दीवार, उस दीवार पर टंगी घड़ी, उस दीवार में बाहर की ओर खुलता झरोखा- कुछ भी उसका विषय हो सकता है। ऐसे विषय भी हो सकते हैं, जिनमें इनके मुकाबले खुलापन थोड़ा कम हो और फोकस अधिक स्पष्ट हो। जैसे टी.वी. धारावाहिकों में स्त्री, बहुत जरूरी है शिक्षा, इत्यादि।

अब सवाल है कि ऐसा लेख प्रस्तुत करने की चुनौती सामने हो तो क्या करना चाहिए?

1. दिए गए विषय के साहचर्य से जो भी सार्थक और सुसंगत विचार हमारे मन में आते हैं, उन्हें हम यहाँ व्यक्त कर सकते हैं।
2. शुरूआत आकर्षक हो। हाँ, ये खयाल रहे कि वह शुरूआत आकर्षक होने के साथ-साथ निर्वाह योग्य भी हो।
3. सुसंबद्धता किसी भी तरह के लेखन का एक बुनियादी नियम है।
4. विवरण-विवेचन के सुसंबद्ध होने के साथ-साथ उसका सुसंगत होना भी अच्छे लेखन की एक खासियत है। आपकी कही गई बातें न सिर्फ आपस में जुड़ी हुई हों, बल्कि उनमें तालमेल भी हों।
5. इस तरह के लेखन में 'मैं' की आवाजाही बेरोकटोक चल सकती है। यहाँ विषय की प्रकृति में ही निहित होता है कि लेख में व्यक्त विचारों में आत्मनिष्ठा और लेखक के व्यक्तित्व की छाप होगी।

आइए, अब आपके सामने कुछ नमूने पेश करें-

1. परीक्षा के दिन

हम सबके विद्यार्थी-जीवन में परीक्षाओं का सामना करना बिल्कुल आम बात है। इसके बावजूद भी परीक्षा के कठिन दिन का सामना करना मेरे लिए बहुत डरावना रहता है। मैं बहुत घबराए रहता हूँ। मैंने जो कुछ भी पढ़ा या याद किया उस हर चीज को बार-बार दोहराना चाहता हूँ। मैं प्रश्न-पत्र के बारे में सोचते रहता हूँ। मेरा विश्वास है कि यदि मैं पहले दिन अच्छा करूँगा तो परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकता हूँ। इसलिए परीक्षा का कठिन दिन भयानक लगता है। कुछ छात्र परीक्षाओं के कठिन दिन के पहले की रात सो नहीं पाते। बोर्ड-परीक्षा का मेरा परीक्षा का कठिन दिन भी ऐसा ही था।

परीक्षा के दिन मैं अपनी समस्त शक्ति अध्ययन की ओर केन्द्रित कर एकाग्रचित होकर सम्भावित प्रश्नों को कंठस्थ करने के लिए लगा देता हूँ। ये दिन मेरे लिए परीक्षा देवो को प्रसन्न करने के लिए अनुष्ठान

करने के दिन जैसा है, गृहकार्यों से मुक्ति, खेल-तमाशों से छुट्टी और मित्रों- साथियों से दूर रहने के दिन हैं।

परीक्षा परीक्षार्थी के लिए भूत है। भूत जिस पर सवार हो जाता है उसकी रातों की नींद हराम हो जाती है, दिन की भूख गायब हो जाती है और घर में सगे-सम्बन्धियों का आना बुरा लगता है। दूरदर्शन के मनोरंजक कार्यक्रम, मनपसन्द एपीसोड, चित्रहार आदि समय नष्ट करने के माध्यम लगते हैं।

परीक्षा के इन कठिन दिनों में परीक्षा-ज्वर (बुखार) चढ़ा होता है, जिसका तापमान परीक्षा-भवन में प्रवेश करने तक निरन्तर चढ़ता रहता है और प्रश्न-पत्र हल करके परीक्षा-भवन से बाहर आने पर ही सामान्य होता है। फिर अगले विषय की तैयारी का स्मरण होता है। ज्वरग्रस्त परीक्षार्थी निरन्तर विश्राम न कर पाने की पीड़ा से छटपटाता है। परीक्षाज्वर से ग्रस्त परीक्षार्थी क्रोधी बन जाता है, चिन्ता उसके स्वास्थ्य को चौपट कर देती है।

2. दीया और तूफान

मिट्टी का बना हुआ एक नन्हा सा दिया जब जलता है। तो रात्रि के अंधकार से लड़ता हुआ उसे दूर भगा देता है। अपने आसपास हल्का सा उजाला फैला देता है। जिस अंधकार में हाथ को हाथ नहीं सूझता उसे भी दीया अपने मंद प्रकाश से अकेला रास्ता दिखा देता है। हवा का झोंका जब दिए से लोगों को शोभा देता है। तब ऐसा लगता है कि इसके बुझते ही अंधकार फिर आ जाएगा और फिर हमें उजाला कैसे मिलेगा? दीया चाहे छोटा सा हो या बड़ा पर वह अकेला अंधकार के संस्कार का सामना कर सकता है। तो हम इंसान जीवन की राह में आने वाली कठिनाइयों का भी उसी तरह से मुकाबला क्यों नहीं कर सकते। यदि वह तूफान का सामना करके अपने टिमटिमाती लौ से प्रकाश फैला सकता है। तो हम भी हर कठिनाइयों में कर्मठ बनकर संकटों से निकल सकते हैं।

महाराणा प्रताप ने सब कुछ खोकर अपना लक्ष्य प्राप्त करने की ठानी थी। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने भी दिये की तरह सामान्य जीव की कठोरता का सामना किया था और विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र भारत का प्रधानमंत्री पद प्राप्त कर लिया था। हमारे राष्ट्रपति कलाम ने अपने जीवन टिमटिमाते दीये के समान आरंभ किया था पर आज वही दीया हमारे देश की मिसाइलें प्रदान करने वाला प्रचंड अग्नि बम है। उन्होंने देश को जो शक्ति प्रदान की है वह सत्युतु है। समुद्र में एक छोटी सी नौका तूफानी लहरों से टकराती हुई अपना रास्ता बना लेती है और अपनी मंजिल पा लेती है। एक छोटा सा प्रवासी पक्षी साइबेरिया से उड़कर हजारों लाखों मिल दूर पहुंच सकता है। तो हम इंसान भी कठिन से कठिन मंजिल प्राप्त कर सकते हैं।

अकेले अभिमन्यु ने चक्रव्यूह में कौरवों जैसे महारथियों का डटकर सामना किया था। कभी-कभी तूफान अपने प्रचंड वेग से दीए की लौ को बुझा देता है पर जब तक दीया जगमगाता है तब तक तो अपना प्रकाश फैलाता है और अपने अस्तित्व को प्रकट करता है। मरना तो सभी को 1 दिन है। मैं तो जीवन में आने वाली तमाम कठिनाइयों का डटकर मुकाबला करता हूँ, और मानता हूँ कि श्रेष्ठ मनुष्य वही होता है जो समाज में तूफानों की परवाह ना करें और अपनी रोशनी से संसार को प्रज्ज्वलित करता रहे।

3. रेलगाड़ी की पहली यात्रा

ज़िन्दगी में रेल यात्रा करना हर किसी को रोमांच से भर देता है। हम हमेशा कामना करते है कि हमारी यात्रा सुखमयी हो। भारत की लगभग नब्बे फीसदी लोग रेल से सफर करते है। मेरी प्रथम रेल यात्रा मेरे लिए यादगार है। मैं इसे कभी नहीं भूल सकती हूँ। वह यात्रा मेरे लिए स्मरणीय अनुभव है। मैं महज़ 10 साल की थी जब मैंने अपनी प्रथम रेल यात्रा की थी। मैं रेलवे स्टेशन जाने के लिए बड़ी उत्सुक थी क्योंकि उसके पहले मैंने सामने से ट्रेन कभी नही देखी थी। मैं अपने चाचा चाची के साथ रेलवे स्टेशन पहुंची थी। बहुत सारे कुली रेलवे प्लेटफार्म पर आवाज़ लगा रहे थे। चाचा ने एक कुली को बुलाकर ट्रैन में सामान रखने के लिए कहा था। ट्रैन रेलवे प्लेटफार्म पर खड़ी थी। मैं गुवाहाटी से हावड़ा जा रही थी। ट्रैन की बोगी में घुसकर चाचा- चाची ने सामान अंदर रखा और मैं खिड़की के पास वाले बर्थ पर जाकर बैठ गयी।

ट्रैन के खिड़की के बाहर मैंने खूबसूरत दृश्य देखा जैसे पहाड़, पेड़-पौधे, हरे -भरे लहलहाते खेत भी देखे । मेरा मन ख़ुशी से झूम उठा और चाची ने मुझे कहा कि मुझे अपना हाथ ट्रैन के खिड़की से बाहर नहीं निकालना है। पास ही के बर्थ में मेरी उम्र की एक लड़की खेल रही थी। मैं उसके पास चली गयी और हम दोनों की अच्छी दोस्ती हो गयी और हम अपने गुड़ियों के साथ खेलने लगे थे। फिर चाची ने लंच के लिए आवाज़ लगायी। बीच बीच में ट्रैन की छुक-छुक आवाज़ मेरे मन को भा जाती थी।

उसके बाद कुछ खिलौने बेचने वाले लोग ट्रैन पर चढ़े थे। मैंने अपने चाचा से ज़िद्द कि मुझे नयी गुड़िया दिला दे। चाचा को मेरे जिद्द के समक्ष विवश होना पड़ा और उन्होंने खिलौने दिलवाये। खिड़की से बाहर का दृश्य बेहद खूबसूरत था। मैं बहुत उत्सुकता से चारो और देख रही थी। क्यों कि यह रेल यात्रा मेरे लिए प्रथम थी और इसकी सारी मीठी यादें मेरे दिल के बेहद करीब है। मेरे लिए यह सफर रोमांच से भरा हुआ था। खिड़की से बाहर की हरियाली बेहद आकर्षक थी और देखने वालों का मन मोह लेती थी। मेरे बर्थ के पास जो लड़की थी उसका नाम रौशनी था। हम दोनों अंताक्षरी खेल रहे थे और उसके बाद हमने लूडो भी खेला था। शाम होने को आयी थी ट्रैन की खिड़कियों से ठंडी -ठंडी हवा आ रही थी और उसका आनंद हर कोई ले रहा था।

फिर गरमा गर्म कचोरी और समोसे वाला ट्रैन में आ गया था। हमने मज़े से गरमा गर्म कचोरी खाये और चाचा ने चाय भी मंगवाई थी। फिर चाची ने मुझे कहानियों के किताब पढ़ने के लिए दिए था और मैंने परियों और जादुई वाली कहानियां पढ़ी थी। मेरा मन उत्साह से भर चुका था। चाचा अखबार पढ़ने में ज़्यादा व्यस्त

थे। फिर रात होने को आयी और चाचा ने ट्रैन पर ही रात के खाने का आर्डर दे दिया था। हमने रोटी, सब्ज़ी और मिठाई खायी थी। उसके बाद चाची ने बर्थ पर चादर बिछाई और तकिया लगा दिया और मुझे सोने के लिए कहा। मैं रौशनी के साथ मज़े कर रही थी।

फिर रात बहुत हो गयी थी और चाची का कहना मानकर मैं सोने के लिए चली गयी। सुबह पांच बजे मेरी नींद खुली तो देखा चाचा चाय की चुस्कियां ले रहे थे। सफर लम्बा था लेकिन ऐसा प्रतीत हो रहा था कि पल भर में समाप्त हो गया।

ट्रैन अपनी रफ़्तार से भाग रही थी। सफर में भूख बड़ी लग जाती है। फिर गरमा गर्म नाश्ता किया और इस बार थोड़ी मैंने कॉफ़ी भी पी। यहीं मेरी रेल की पहली यात्रा समाप्त हो गई।

4. नौका-विहार

नौका विहार करना एक अच्छा शौक, एक स्वस्थ खेल, एक प्रकार का श्रेष्ठ व्यायाम तो है ही साथ ही, मनोरंजन का भी एक अच्छा साधन है। सुबह-शाम या दिन में तो लोग नौकायन या नौका-विहार किया ही करते हैं, पर चांदनी रातों में ऐसा करने का सुयोग कभी कभार ही प्राप्त हो पाता है।

गत वर्ष शरद पूर्णिमा की चांदनी में नौका विहार का कार्यक्रम बनाकर हम कुछ मित्र (पिकनिक) मनाने के मूड में सुबह-सवेरे ही खान-पान एवं मनोरंजन का कुछ सामान लेकर नगर से कोई तीन किलोमीटर दूर बहने वाली नदी तट पर पहुँच गए।

वर्षा बीत जाने के कारण नदी तो यौवन पर थी ही, शरद ऋतु का आगमन हो जाने के कारण प्राकृतिक वातावरण भी बड़ा सुन्दर, सुखद, सजीव और निखार पर था। लगता था कि वर्षा ऋतु के जल ने प्रकृति का कण-कण, पत्ता-पत्ता धो-पोंछ कर चारों ओर सजा सवार दिया है। मन्द-मन्द पवन के झोंके चारों ओर सुगन्धी को बिखेर वायुमण्डल और वातावरण को सभी तरह से निर्मल और पावन बना रहे थे।

उस सबका आनन्द भोगते हुए आते ही घाट पर जाकर हमने नाविकों से मिलकर रात में नौका विहार के लिए दो नौकायें तय कर लीं और फिर खाने-पीने, खेलने, नाचने गाने, गप्पे और चुटकलेबाजी में पता ही नहीं चल पाया कि सारा दिन कब बीत गया शाम का साया फैलते ही हम लोग चाय के साथ कुछ नाश्ता कर, बाकी खाने-पीने का सामान हाथ में लेकर नदी तट पर पहुँच गए। वहाँ तय की गई दोनों नौकाओं के नाविक पहले से ही हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। सो हम लोगों के सवार होते ही उन्होंने चप्पू सम्हाल कलकल बहती निर्मल जलधारा पर हंसिनी-सी तैरने वाली नौकायें छोड़ दीं।

तब तक शरद पूर्णिमा का चांद आकाश पर पूरे निखार पर आकर अपनी उजली किरणों से अमृत वर्षा करने लगा था। हमने सुन रखा था कि शरद पूर्णिमा की रात चाँद की किरणें अमृत बरसाया करती हैं, सो उनकी तरफ देखना एक प्रकार की मस्ती और पागलपन का संचार करने वाला हुआ करता है।

इसे गप्प समझने वाले हम लोग आज सचमुच उस सबका वास्तविक अनुभव कर रहे थे। चप्पू चलने से कलकल करती नदी की शान्त धारा पर हंसिनी-सी नाव धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी। किनारे क्रमश: हमसे दूर छिटकते जा रहे थे । दूर हटते किनारों और उन पर उगे वृक्षों की झाड़ों की परछाइयां धारा में बड़ा ही सम्मोहक सा दृश्य चित्र प्रस्तुत करने लगी थीं।

कभी-कभी टिटीहरी या किसी अन्य पक्षी के एकाएक चहक उठने, किसी अनजाने पक्षी के पंख फड़फड़ा कर हमारे ऊपर से फुर्र करके निकल जाने पर वातावरण जैसे कुछ सनसनी सी उत्पन्न कर फिर एकाएक रहस्यमय हो जाता। हैरानी और विमुग्ध आंखों से सब देखते सुनते हम लोगों को लगता कि जैसे अदृश्यश्र्व परी लोक में आ पहुँचे हों।

चाँद नशीला होकर कुछ और ऊपर उठ आया था। हमारी नौका अब नदी की धारा के मध्य तक पहुँच चुकी थी। नाविक ने लग्गी से थाह नापने का असफल प्रयास करते हुए बताया कि वहां धारा जल अथाह है, अमाप है। हमने उस पारदर्शी जल के भीतर तक देखने का प्रयास किया कि जो नाव के प्रवाह के कारण हिल रहा था। उसके साथ ही हमें परछाई के रूप में धारा में समाया बैठा चांद और असंख्य तारों का संसार भी हिलता-डुलता नजर आया। ऐसा अनुभव हुआ कि जैसे धारा का भीतरी भाग उजली रेशम पर जड़े तारों और चाँद का ही बुना या बना हुआ है। तभी कहीं दूर से पपीहे का स्वर सुनाई दिया और इसके साथ ही नाविकों ने विरह की कोई सम्मिलित तान छेड़ दी।

नाविकों ने अब चप्पू चलाना बन्द कर दिया था। लगातार खुम्मार में वृद्धि पाती उस चांदनी रात में हमारी नौकाएं अब मन की मौजों की तरह स्वेच्छा से बही चली जा रही थीं। पता नहीं कहाँ या किधर? चारों ओर का वातावरण और भी नशीला हो गया था। हम जो नौकाओं में बजाने-गाने के लिए अपने वाद्य लाए थे, उनकी तरफ देखने-छूने तक की फुर्सत हमें अनुभव नहीं हुई।

चांदनी रात और उसमें जलधारा पर विहार करती नौका के कारण जिस एक मादक प्राकृतिक गीत-संगीत की सृष्टि हो रही थी कि उसके सामने और कुछ याद रख या कर पाना कतई संभव ही नहीं था। बस, एक-दूसरे की तरफ देखते हुए हम लोग केवल बहते-अनकही कहते रहे। इस तरह रसपान करते हुए नदी से बाहर आकर अपने अपने घर चल दिये।

5. यदि मैं जिला कलेक्टर होता तो

सबसे पहले मैं बताना चाहूँगा कि 'कलेक्टर' जिले में राज्य सरकार का सर्वोच्च अधिकार संपन्न प्रतिनिधि या प्रथम लोक-सेवक होता है। जो मुख्य जिला विकास अधिकारी के रूप में सारे प्रमुख सरकारी विभागों- पंचायत एवं ग्रामीण विकास, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, आयुर्वेद, अल्पसंख्यक कल्याण, कृषि, भू-संरक्षण, शिक्षा, महिला अधिकारता, ऊर्जा, उद्योग, श्रम कल्याण, खनन, खेलकूद, पशुपालन, सहकारिता, परिवहन एवं यातायात, समाज कल्याण, सिंचाई, सार्वजनिक निर्माण विभाग, स्थानीय प्रशासन आदि के सारे कार्यक्रमों और नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन करवाने के लिए अपने जिले के लिए अकेले उत्तरदायी होता है।

मैं सर्वप्रथम जिला में कुछ प्रमुख क्षेत्रों पर ज़्यादा ध्यान केंद्रित करता। जैसे-

1. शान्ति और कानून व्यवस्था बनाये रखना। कहीं भी किसी भी तरह की आपत्तिजनक या अनुशासन हीनता पूर्ण व्यवहार न होने देता। सबसे पहले शराब की सारी दुकानों पर बैन लगा देता। जो कि हमारी युवा पीढ़ी को गर्त की ओर ले जा रहे है और शराब पीकर समाज की शांति को भंग करते हैं।
2. नागरिकों को चिकित्सा सुविधाएं और सेवाएं प्रदान करने के लिए जिले के सभी क्षेत्रों में दवाखानों का प्रबन्ध करना तथा दवाखानों में मिलने वाली समस्त सुविधाएं- डॉक्टर की उपस्थिति, दवाओं का उचित वितरण, चिकित्सालयों की साफ सफाई आदि पर शख्ती से पालन करवाता।
3. शिक्षा विभाग की देखभाल- विद्यालयों में शिक्षकों की उपस्थिति, कक्षा शिक्षण का समय समय पर निरीक्षण, विद्यालय की साफ सफाई, पौष्टिक मध्यान्ह भोजन दिया जा रहा या नही, छात्रों की उपस्थिति आदि का निरीक्षण का कार्य जिला शिक्षा अधिकारी को सौपता तथा उस पर स्वयं निगरानी रखता। शिक्षा के मामले में किसी तरह की कोई ढिलाई न होने देता।
4. पानी की भी व्यवस्था पर गौर करूँगा कि गांव में पर्याप्त मात्रा में हैंड पम्प है या नहीं, तथा कितने खराब है और कितने इस्तेमाल में है। खराब हैंडपम्प को तुरंत रिपेयर करवाता और शहरी क्षेत्र में पानी की सप्लाई समय अनुसार करवाता और टंकी की साफ सफाई का भी ख्याल रखता।
5. सरकारी इमारतों का निर्माण व देखरेख की जिम्मेदारी लोकनिर्माण विभाग से समय समय पर सूचना एकत्रित करता तथा उनके कार्यान्वयन का निरीक्षण करता।
6. पंचायती राज तथा अन्य संस्थाओं का प्रबन्ध व नियन्त्रण भी करता।
7. जिलास्तर पर मैं प्रशासन को नेतृत्व प्रदान करता, क्योंकि कलेक्टर जिला प्रशासन की धुरी हैं। जिला स्तरीय प्रशासन में समन्वय स्थापित करने के दायित्व को पूर्ण करता हैं। जिलाधीश राज्य, जिला प्रशासन तथा जनता के मध्य कड़ी का कार्य करता हैं।
8. संकटकालीन प्रशासक के रूप में जिलाधीश की भूमिका मसीहा के समान हो जाती हैं। इसलिये प्राकृतिक विपदाओं में घायलों के उपचार, निवास, भोजन आदि की व्यवस्था, विस्थपितों के पुनर्स्थापन व उन्हें मुआवजा राशि देना आदि का भी ख्याल रखूंगा।

इस प्रकार मैं राज्य सरकार की आँख व कान तथा बाहों की भांति अपने कार्य का निर्वहन करता।

अभ्यास हेतु कुछ अन्य विषय-

1. यदि मैं अध्यापक होता तो
2. कक्षा में मेरी पहली शरारत
3. घोसलों से झांकते चिड़ियों के बच्चे

4. मेरी जिंदगी में कोचिंग का स्थान

5. घड़ी की टिक-टिक आवाज

6. बारिश की पहली बूंद

7. सुकून के कुछ पल

8. आसमान में टिमटिमाते तारे

9. आकाश में उड़ते परिंदे

10. समुद्र की खामोशी

11. मैं और खुला आसमां

12. सैलून वाला

13. मेरे स्कूल का पहला दिन

14. खुद से मेरी उम्मीदें

15. मेरी दुनिया

16. मैं पापा की एक नन्ही परी

17. मेरे अधूरे सपने

18. मेरी जिंदगी के खास पल

औपचारिक पत्र

ध्यान देने योग्य बातें-

- पत्र के शीर्ष पर लिखने वाले का नाम और पता होना चाहिए।
- जिसे पत्र लिखा जा रहा है उसका नाम, पता आदि बांई तरफ लिखा जाता है। कई बार अधिकारी का नाम भी दिया जाता है।
- 'सेवा में' का प्रयोग धीरे-धीरे कम हो रहा है।
- 'विषय' शीर्षक के अंतर्गत संक्षेप में यह लिखा जाता है कि पत्र किस प्रयोजन के लिए या किस संदर्भ में लिखा जा रहा है।
- विषय के बाद बांई तरफ 'महोदय' संबोधन लिखा जाता है।
- पत्र की भाषा सरल एवं सहज होनी चाहिए। क्लिष्ट शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए।

- अनेक बार सटीक अर्थ प्रेषित करने के लिए प्रशासनिक शब्दावली का प्रयोग करना ही उचित होता है।
- पत्र के अंत में 'भवदीय' शब्द का प्रयोग अधोलेख के रूप में होता है।
- भवदीय के नीचे पत्र भेजने वाले के हस्ताक्षर होते हैं। हस्ताक्षर के नीचे कोष्ठक में पत्र लिखने वाले का नाम मुद्रित होता है। नाम के नीचे पदनाम लिखा जाता है।

1. आप अपने स्कूल के क्रिकेट टीम के कप्तान हैं और आप पड़ोसी विद्यालय के साथ मैच खेलना चाहते हैं। इसकी अनुमति के लिए अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखें।

केंद्रीय विद्यालय
अ..... रायपुर।
24/10/2021

सेवा में,

प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय
.....।

विषय- पड़ोस के विद्यालय के साथ मैच खेलने की अनुमति हेतु प्राचार्य को प्रार्थना पत्र ।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं विद्यालय के क्रिकेट टीम का कप्तान ..... आपको सूचित करना चाह रहा हूँ कि हमारा पड़ोसी विद्यालय 'सेंट मेरी' हमारे विद्यालय के साथ क्रिकेट मैच खेलना चाहता है। हम सभी खिलाड़ियों की तरफ से ये आश्वस्त करता हूँ कि हमारी टीम अवश्य जीतेगी। यदि आपकी अनुमति हो तो दोनों विद्यालय के बीच एक मैच का आयोजन किया जाए।

महोदय आपके जवाब की प्रतीक्षा हम सभी खिलाड़ियों को रहेगी।

धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
अ, ब, स.....।

2. सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान निषेध नियम के उल्लंघन को लेकर अपने राज्य के पर्यावरण मंत्री को पत्र लिखें।

घड़ी चौक
कोरिया, छत्तीसगढ़।
23/82021

सेवा में,

राज्य पर्यावरण मंत्री,
छत्तीसगढ़।

विषय- धूम्रपान निषेध नियम के हो रहे उल्लंघन की ओर ध्यान केंद्रित करना।

महोदय,

श्रीमान! मैं आपका ध्यान सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान निषेध नियमों का उल्लंघन के संबंध में आकर्षित करना चाहता हूं। धूम्रपान की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करने के लिए सरकार द्वारा कानून बनाया गया था जिसके अंतर्गत सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान न करने का प्रावधान था। इसका उल्लंघन करने वालों पर जुर्माना लगाने, जेल भेजने दोनों को ही प्रावधान किया गया। उसका उद्देश्य युवाओं में बढ़ती धूम्रपान की प्रवृत्ति को रोकना, पर्यावरण को स्वच्छ एवं स्वस्थ रखने के अलावा लोगों को स्वास्थ्य संबंधी बीमारियों से बचाना था। पर कुछ लोग धूम्रपान संबंधी नियम की परवाह न करके खुलेआम सार्वजनिक स्थानों धूम्रपान सेवन करते हैं। ऐसा लगता है कि वो नियम कानून का मजाक उड़ा रहें तथा ऐसा करके समाज और विशेषकर युवाओं के सामने गलत उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। ये ना उनके हित में है ना समाज के हित में है। धूम्रपान निषेध नियम का उल्लंघन करने वालों से सख्ती से निपटने का समय आ गया है। अतः आपसे प्रार्थना है कि युवाओं और समाज के साथ पर्यावरण के लिए हानिकारक धूम्रपान तथा सार्वजनिक स्थानों पर उसका उपयोग करने वालों के विरुद्ध ठोस कार्रवाई करने का कष्ट करें।

धन्यवाद सहित

भवदीय

ब,द,स....

3. आपके क्षेत्र में स्थित एक औद्योगिक संस्थान का गंदा पानी आपके नगर की नदी को दूषित कर रहा है। इस समस्या से अवगत कराते हुए प्रदूषण नियंत्रण विभाग के मुख्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

आदित्यपुर इंडस्ट्रियल रोड
पानीपत।

3/6/2021

सेवा में,

मुख्य अधिकारी
प्रदूषण नियंत्रण विभाग
पानीपत।

विषय- औद्योगिक संस्थानों के गंदे पानी से दूषित हो रही नदी की ओर ध्यान केंद्रित करने के लिए पत्र।

महोदय,

मैं आपका ध्यान औद्योगिक संस्थानों से निकलने वाले दूषित पानी से बढ़ रहे जल प्रदूषण की ओर आकर्षित करना चाहती हूं। श्रीमान जी पानीपत शहर में अनेक उद्योग धंधे हैं। वस्त्र तथा रसायनों का निर्माण करने वाले तथा अन्य कारखाने के प्रकार के अपशिष्ट पदार्थ उत्सर्जित करते हैं। जिसे नदी में डाल या बहा दिया जाता है इसे नदी का जल प्रदूषित हो रहा है। नदी में बढ़ते जल प्रदूषण से अन्य जीवजंतु तथा पक्षियाँ मरने लगी है। स्थानीय अधिकारियों से इस दिशा में कई बार शिकायत की जा चुकी। परंतु किसी ने अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की। आप से अनुरोध है कि ऐसे संस्थानों को प्रदूषण संबंधी नोटिस भेजकर उन पर जुर्माना लगाया जाए तथा एक कचरा ट्रीटमेंट प्लांट लगाने का भी आदेश दिया जाए।

धन्यवाद।

भवदीय

अ, ब,स

4. दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की समीक्षा एवं सुझाव देते हुए दूरदर्शन के निदेशक को पत्र लिखें।

बी एच यू रोड
बनारस।
2/9/2021

सेवा में,

दूरदर्शन निदेशक
फूल मार्ग न्यू दिल्ली।

विषय- दूरदर्शन के कार्यक्रमों की समीक्षा के संबंध में।

महोदय,

मैं आपका ध्यान दिल्ली दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की ओर आकर्षित करना चाहती हूँ। आजकल दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम में बदलाव नजर आ रहा है। पहले के मुकाबले आज कल के कार्यक्रम में विविधता गुणवत्ता में वृद्धि आकर्षक प्रस्तुतीकरण शैली का प्रयोग होता है। निजी चैनलों की तुलना में दूरदर्शन के कार्यक्रम अश्लीलता से कोसों दूर है। यह कार्यक्रम भारतीय संस्कृति की गरिमा को बनाए हुए हैं। इन सबके बावजूद दूरदर्शन के कार्यक्रम सभी आयु- वर्गों को प्रभावित नहीं कर पा रहे हैं। खासतौर पर बच्चे युवा वर्ग व गृहिणीयां अन्य चैनलों की तरफ अधिक आकर्षित हैं। इसका कारण दर्शकों की बदलती अभिरुचि तथा तथा दूरदर्शन की परंपरागत कार्यशैली भी हो सकती है। दूरदर्शन पर सरकारी दबाव भी उसे सभी तरह के कार्यक्रम प्रसारित करने की छूट नहीं दे सकता। कारण जो भी हो पर फिर भी आपसे अनुरोध है कि लोगो के रुचि का ख्याल रखते हुये कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाए।

धन्यवाद।

भवदीय

ब,द,स.....।

5. आपके क्षेत्र के कानून व्यवस्था इतनी बिगड़ गई है कि हर व्यक्ति अपने को असुरक्षित महसूस करता है। इसके कारणों की चर्चा करते हुए समाधान हेतु पुलिस आयुक्त को पत्र लिखें।

घंटाघर चौराहा
लखनऊ।
3/7/2021

सेवा में,

पुलिस आयुक्त
लखनऊ।

विषय- बिगड़ती कानून व्यवस्था की ओर ध्यान केंद्रित करने के संबंध में।

महोदय,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र में कानून व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति की ओर आकर्षित करने के उद्देश्य से कर रही हूँ। इस क्षेत्र के निवासी भय के साए में जीने को विवश हैं। कुछ शरारती तत्व स्थानीय दुकानदारों से हफ्ता वसूली भी करते हैं।उनकी मांग पूरी ना करने पर मारपीट पर उतारू हो जाते हैं। सूरज छिपने के बाद सड़कों पर सन्नाटा छा जाता है। गलियों में चोरी की घटनाएं बढ़ती जा रही है। स्थानीय पुलिस के पास शिकायत की जाती है तो ऊपर के दबाव या रिश्वत के कारण उनके खिलाफ कोई

कार्यवाही नहीं करते। शाम को बस स्टैंड के पास कुछ असामाजिक तत्व खड़े रहते हैं आती जाती महिलाओं में लड़कियों पर फब्तियां कसते हैं। आशा है कि आप इस समस्या पर गंभीरता से विचार करेंगे तथा ठोस कदम उठाएंगे ताकि क्षेत्र में शांति स्थापित हो सके।

धयन्वाद।

भवदीय

क, ख, ग....।

6. कल्पना कीजिए कि आप ने पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना अध्ययन पूरा कर लिया है और किसी प्रसिद्ध अखबार में पत्रकार पद के लिए एक आवेदन पत्र लिखे।

परीक्षा भवन
नई दिल्ली।
दिनांक 12 अप्रैल 2021

सेवा में,

संपादक
प्रभात अखबार
नई दिल्ली।

विषय- पत्रकार पद के लिए आवेदन पत्र।

महोदय,

आपके समाचार पत्र में दिनांक 04/04/2021 को प्रकाशित विज्ञापन से ज्ञात हुआ कि आपके समाचार पत्र में पत्रकार के कुछ पद रिक्त हैं। मैनें अभी- अभी पत्रकारिता में अपना अध्ययन पूर्ण किया है। मेरे पास इस पद के लिए मांगे गए योग्यता पूर्ण समस्त दस्तावेज मौजूद हैं। मैं आपको आश्वस्त करता हूं कि यदि आप मुझे अवसर देंगे तो मैं अपना काम निष्ठा के साथ करूंगा और आपको पछतावा कभी नही होगी इस निर्णय पर। मेरा परिचय निम्नलिखित है -

नाम- अ, ब, स
पिता- क, ख, ग
जन्मतिथि- 10/ 5/ 1992
संलग्न दस्तावेज़-

1. दसवीं की सत्यापित प्रितिलिपि

2. बारहवीं की सत्यापित प्रतिलिपि
3. मास कम्युनिकेशन बी ए की सत्यापित प्रतिलिपि

सधन्यवाद।

भवदीय

अ, ब,स....।

7. रेल में यात्रा करने के दौरान अनूपपुर स्टेशन उतरने पर आप ने पाया कि आपका कुछ सामान डिब्बे में ही छुट गया है। स्टेशन मास्टर को अपने छुटे हुए सामान का विवरण और पहचान बताते हुए पत्र लिखें।

भाड़ी चौक
बैकुंठपुर रोड।
10/02/2021

सेवा में,

स्टेशन मास्टर
अनूपपुर स्टेशन
छत्तीसगढ़।

विषय- ट्रैन के डिब्बे में छुटे सामान की जानकारी देते हुए स्टेशन मास्टर को पत्र।

महोदय,

निवेदन यह है कि मैं दिनांक 8/02/2021 को गाड़ी नं. 12345, डिब्बा बी2 में सीट नं. 5 में जबलपुर से अनूपपुर का सफर कर रही था। अनूपपुर स्टेशन उतरते वक्त मैं अपना एक नीले रंग का बैग उतारना भूल गया। जिसमें विज्ञान, गणित, अंग्रेजी की NCERT कक्षा12 की पुस्तकें और दो शर्ट (सफेद, हल्के हरे रंग), काले और नीले रंग की पैंट कुछ ज़रूरी कागज़ात की एक पीले रंग की फाइल है। अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि सामान की खोज करायें और प्राप्त होते ही मुझे सूचित करें। आपकी बहुत बड़ी कृपा होगी।

सधन्यवाद।

भवदीय

नाम- क, ख, ग

8. कक्षा नायक बनकर कक्षा को पिकनिक पर ले जाने का अनुरोध करते हुए अपने प्रधानाचार्य को पत्र लिखें।

केंद्रीय विद्यालय

अ...ब...स.....

9/5/2021

सेवा में,

प्राचार्य

केन्द्रीय विद्यालय

अ, ब, स..... ।

विषय- पिकनिक पर जाने के लिए अनुमति प्रदान करने हेतु पत्र।

महोदय,

मैं कक्षा नवीं वर्ग अ का छात्र नायक मोहन हूँ। पूरी कक्षा की ओर से मैं आपको आश्वासन दिलाता हूँ कि हम लोगो की ओर से किसी भी तरह की अनुशासन हीनता पूर्ण व्यवहार नहीं होगा। अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि हमारी कक्षा को पिकनिक पर ले चलने की कृपा करें। हम सब आपके सदैव आभारी रहेंगे।

धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी

अ, ब, स....

कक्षा- नवीं

<u>कहानी की रचना प्रक्रिया</u>

कहानी गद्य की सबसे रोचक और लोकप्रिय विधा है, जो जीवन के किसी एक विशेष पक्ष का मार्मिक, भावनात्मक और कलात्मक वर्णन करती है|

हिंदी की वरिष्ठ कथाकार कृष्णा सोबती ने लिखा है-

“कहानी किसी एक की नहीं, वह कहने वालों की है, सुनने वालों की भी| इसकी, उसकी, सबकी; सृष्टि समूचे परिवार की| नानी की मुहर इस पर है| इस लोक की प्रजा होने के कारण हर किसी की कहानी लिखी और सुनी जा सकती है|

अगर हम कहानी को परिभाषित करें तो “कहानी साहित्य की ऐसी विधा है, जिसमें किसी घटना, पात्र या समस्या का क्रमबद्ध वर्णन हो, जिसमें परिवेश हो, द्वंद्वात्मकता हो, कथा का क्रमिक विकास हो, चरम का उत्कर्ष बिंदु हो, उसे कहानी कहा जाता है|

कहानी अपने सीमित क्षेत्र में सम्पूर्ण होता है

कहानी के प्रमुख अंग -

कहानी के प्रमुख तीन अंग होते हैं
प्रारंभ, मध्य और अंत
कहानी के प्रमुख तत्व:-

. **1. कथावस्तु:-** कहानी के ढांचे को कथानक या कथावस्तु कहा जाता है| प्रत्येक कहानी के लिए कथावस्तु का होना अनिवार्य है| क्योकि इसके अभाव में कहानी की रचना की कल्पना भी नहीं की जा सकती है| कथानक के चार अंग माने गए हैं - आरंभ, आरोह, चरम स्थिति एवं अवरोह| कथावस्तु जीवन की भिन्न-भिन्न दिशाओं और क्षेत्रों से ग्रहण की जाती है|

कथानक अथवा कथावस्तु कहानी का केंद्रीय बिन्दु होता है, जिसमें प्रारम्भ से लेकर अंत तक कहानी की सभी घटनाओं और पात्रों का उल्लेख होता है| कथावस्तु में घटनाओं की अधिकता हो सकती है और एक ही घटना पर उसकी रचना भी हो सकती है| अब तो कहानी में घटना तत्व अत्यधिक सूक्ष्म होते जा रहे हैं| अतएव घटना की आवश्यकता पर अधिक बल नहीं दिया जाता लेकिन उनमें कोई-न-कोई घटना अवश्य होगी|

कथानक को कहानी का प्रथम नक्शा भी माना जाता है कहानी का कथानक कहानीकार के मन में किसी घटना, जानकारी, अनुभव या कल्पना के कारण आता है| कहानीकार एक कल्पना का विकास करते हुए परिवेश पात्र और समस्या को आकार देता है| इस प्रकार वह ऐसा काल्पनिक ढाँचा तैयार करता है जो कोरी कल्पना न होकर संभावित हो तथा लेखक के उद्देश्य से मिलती हो|

द्वंद्व :- कहानी में द्वंद्व का होना आवश्यक है| द्वंद्व विरोधी तत्वों के टकराव या किसी की खोज में आने वाली बाधाओं या अंतर्द्वंद्व के कारण उत्पन्न होता है| द्वंद्व ही कथानक को आगे बढ़ाता है तथा कहानी में रोचकता बनाएँ रखता है| कहानीकार अपने कथानक में द्वंद्व के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं की जितनी स्पष्ट झलक रखेगा कहानी भी उतनी ही सफलता से आगे बढ़ेगी|

2. **चरित्र चित्रण -**कहानी में एक या अधिक पात्र होते हैं- पात्रों के माध्यम से कहानी का संचालन होता है| पात्रों के गुण-दोषों को चरित्र -चित्रण कहा जाता है| दूसरे शब्दों में पात्रों की विभिन्न चारित्रिक विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त करके उनके गुणों का उल्लेख करने की प्रक्रिया ही चरित्र-चित्रण कहलाता है| प्रत्येक पात्र का अपना स्वरूप-स्वभाव और उद्देश्य होता है| पात्रों का चरित्र -चित्रण करने के लिए पात्र के गुणों का वर्णन कहानीकार द्वारा तथा दूसरे पात्रों के संवाद के माध्यम से किया जाता है|

चरित्र-चित्रण के विभिन्न चरित्रों में स्वाभिवाकता उत्पन्न होती है| जब पात्रों का चरित्र -चित्रण कहानीकार के द्वारा किया जाता है तो उसे प्रत्यक्ष चरित्र-चित्रण कहा जाता है और जब संवादो के द्वारा होता है तो उसे अप्रत्यक्ष चरित्र-चित्रण कहा जाता है| परोक्ष चरित्र -चित्रण को अधिक उपयुक्त माना जाता है| लेकिन

पात्रों की संख्या कम से कम होनी चाहिए, तभी कहानीकार उस एक चरित्र के अंतर और बाह्य पक्षों का अधिकाधिक मनोविश्लेषण कर सकता है| मूल घटना से उसका गहरा संबंध होना चाहिए|

3. **संवाद :-** कहानी के पात्रों द्वारा किए गए विचारों की अभिव्यक्ति को संवाद या कथोपकथन कहते हैं | कहानी में संवाद का विशेष महत्व होता है| संवाद ही कहानी के पात्र को स्थापित एवं विकसित करके कहानी को गति देकर आगे बढ़ाता है|

संवाद से कहानी के पात्र सजीव और स्वाभाविक बन जाते हैं| संवाद के द्वारा पात्रों के मानसिक अंतर्द्वंद्व एवं अन्य मनोभाव प्रकट किया जाता है|

4. **भाषा-शैली :-** कहानीकार के द्वारा कहानी के प्रस्तुतीकरण के ढ़ंग को उसकी भाषा शैली कहा जाता है| कहानी की भाषा -शैली ऐसी होनी चाहिए जो पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करें| अत: कहानी की भाषा सरल, सहज तथा प्रभावशाली होनी चाहिए| कहानी की भाषा-शैली पात्रों के व्यक्तित्व के अनुसार हो जो उनकी मन:स्थिति का सजीव चित्रण प्रस्तुत कर सके| किसी भी पात्र की भाषा शैली विभिन्न परिस्थितियों में परिवर्तनीय होती है|

प्राय: अलग-अलग कहानीकारों की भाषा -शैली अलग-अलग होती है| कहानी-लेखक उसे वर्णनात्मक, संवादात्मक, आत्मकथात्मक, विवरणात्मक, पत्रात्मक किसी भी रूप में लिख सकता है| कहानीकार की भाषा में इतनी शक्ति हो जो साधारण पाठकों को भी अपनी ओर आकर्षित कर सके|

कहानी का आरंभ, मध्य और अंत सुसंगठित हो, शीर्षक लघु और रोचक हो|

चरमोत्कर्ष :- कहानी पढ़ते-पढ़ते पाठक कौतूहल या जिज्ञासा की पराकाष्ठा या चरम सीमा पर पहुँच जाए तो उसे कहानी का चरमोत्कर्ष कहा जाता है| कहानी का चरमोत्कर्ष पाठक को स्वयं सोचने और लेखकीय पक्षधर की ओर आने के लिए प्रेरित करे|

5. देशकाल और वातावरण :- प्रत्येक घटना, पात्र, समस्या का अपना देशकाल और वातावरण होता है| कहानी में वास्तविकता का पुट लाने के लिए देशकाल और वातावरण का प्रयोग किया जाता है| कहानी देशकाल की उपज होती है इसलिए हर देश की कहानी अलग-अलग होती है| जिसकी संस्कृति, सभ्यता, रूढ़ि, संस्कार का प्रभाव उन पर स्वाभाविक रूप से पड़ता है|

6. उद्देश्य :- कहानी में केवल मनोरंजन ही नहीं होता, उसका एक निश्चित उद्देश्य होता है| यह उद्देश्य कहानी के आवरण में छिपा रहता है| इसमें शिक्षा, सीख, मानवीय मूल्य अवश्य निहित होते हैं|

कहानी लेखन हेतु अन्य महत्त्पूर्ण तथ्य-

- कहानी का केंद्र बिंदु कथानक होता है

- कहानी को प्रमाणिक और रोचक बनाने के लिए देशकाल, वातावरण तथा स्थान का ध्यान रखा जाता है|
- लेखक पात्रों के बारे में खुद न बोलकर उनके क्रियाकलापों और संवादों के माध्यम से चरित्र को सशक्त बनता है |
- द्वंद्व कथानक को आगे बढ़ाता है|
- कथानक के अनुसार कहानी का चरमोत्कर्ष अर्थात क्लाइमैक्स का चित्रण बड़ी सावधानी से करना चाहिए|
- कहानी लेखन सिखाने का सबसे कारगर तरीका होगा कि अच्छी कहानियाँ सुनी व पढ़ी जाएँ|

कहानी शिक्षण के उद्देश्य :-

- साहित्य के प्रति रूचि विकसित करना|
- कहानी में निहित भावों, विचारों, नैतिक मूल्यों को ग्रहण करने की क्षमता विकसित करना|
- सृजनात्मक शक्ति का विकास|
- शब्द, सूक्ति, मुहावरे आदि के भंडार को विकसित करना|
- अंदाजा लगाने की क्षमता को विकसित करना|
- कहानी की रचनाशीलता का विकास करना|

कहानी शिक्षण विधि तथा सोपान-

प्रस्तावना -सबसे पहले कक्षा में उचित वातावरण बनाकर कहानी कहने का माहौल बनाया जाता है, जिससे कहानी की पढ़ाई को मनोरंजक और प्रेरणादायी बनाया जा सके|

कहानी कथन/कथोपकथन - प्रस्तावना के बाद इस सोपान में मजेदार ढंग से सुनाया जाता है| इस सोपान में कहानी को ऐसे सुनाया जाता है कि सुनने वाले और सुनाने वाले आपस में विचारों को बाँट सके| उचित उतार-चढ़ाव और जिज्ञासा के साथ कहानी को सुना और सुनाया जा सके|

कहानी सुनना और पुनरावृत्ति -इस सोपान में सभी विद्यार्थी कहानी सुनते हैं फिर कहानी में निहित उद्देश्य, चरित्र, नैतिक मूल्य पर चर्चा होती है|

<u>विषय सम्बन्धी प्रश्न</u>

1. कहानी के इतिहास पर प्रकाश डालिए -

उत्तर - कहानी का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानव इतिहास| क्योंकि कहानी मानव स्वभाव और प्रकृति का हिस्सा है| आरम्भ में कथावाचक कहानी सुनाते थे जिनका विषय किसी घटना, युद्ध,

प्रेम और प्रतिशोध आदि पर आधारित होते थे| सच्ची घटनाओं पर कहानी सुनाते - सुनाते आवश्यकतानुसार उसमें कल्पना का समावेश होने लगा|

2. प्राचीनकाल में मौखिक कहानियाँ क्यों लोकप्रिय थी?

उत्तर - प्राचीनकाल में मौखिक कहानियाँ लोकप्रिय थी क्योंकि यह संचार का सबसे प्रभावी माध्यम था धर्म प्रचारकों ने अपने धर्म और विचारों तक पहुँचाने के लिए कहानी का सहारा लिया गया| शिक्षा देने के लिए भी कहानी का प्रयोग किया जाता था| उदा- पचतंत्र की कहानियाँ |

3. कहानी का केंद्र बिंदु कथानक होता है| स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - कहानी में प्रारंभ से अंत तक घटित सभी घटनाओं को कथानक कहते हैं| कथानक कहानी का प्रथम और महत्त्वपूर्ण तत्व होता है| इसे कहानी का प्रारंभिक नक्शा भी कहा जा सकता है| कहानी में प्रारंभ, मध्य और अंत के रूप में कथानक का सम्पूर्ण स्वरूप होता है| पूरी कहानी कथानक के इर्द -गिर्द घूमती है इसलिए हम कह सकते हैं कि कहानी का केंद्र बिंदु कथानक होता है|

4. कहानीकार के मन में कथानक क्यों आता है?

उत्तर - कहानीकार के मन में कहानी का कथानक किसी घटना, जानकारी, अनुभव या कल्पना के कारण आता है |

5. कहानी के द्वंद्व का क्या महत्त्व है ?

उत्तर - द्वंद्व जिज्ञासा व रोचकता प्रदान करते हुए कहानी को गतिशीलता प्रदान करता है |

6. कहानी की भाषा -शैली कैसी होनी चाहिए?

उत्तर- कहानी की भाषा शैली विषय एवं प्रसंगानुकूल सरल व सहज होनी चाहिए |

अन्य प्रश्न -

1. कहानी में चरमोत्कर्ष का क्या तात्पर्य है ?
2. कहानी में संवाद या कथोपकथन महत्वपूर्ण क्यों है ?
3. कहानी में पात्रों एवं चरित्रों का क्या महत्त्व है ?
4. समाज में देखी गई किसी ऐसी घटना पर कहानी लिखे, जो आप को भीतर तक प्रभावित की हो |
5. कहानी में कथानक के कितने स्तर होते हैं ?
6. कहानी के तत्वों का उल्लेख कीजिए |

कहानी का नाट्य रूपांतरण

कहानी का नाटक में रूपांतरण करने के लिए सबसे पहले कहानी और नाटक वैविध्य और समानताओं को समझना आवश्यक है |

समानताएं - कहानी और नाटक के आत्मा के कुछ मूल तत्व एक ही है | कहानी और नाटक दोनों में ही कथा, पात्र और परिवेश होता है, कहानी और नाटक दोनों का क्रमिक विकास, द्वंद्व और चरमोत्कर्ष होता है |

असमानताएं - 1.कहानी एक ऐसी विधा है जिसमें जीवन के किसी एक अंक विशेष का मनोरंजक ढंग से चित्रण किया जाता है, नाटक एक ऐसी गद्य विधा है जिसे मंच पर प्रस्तुत किया जाता है |

2. कहानी का सम्बन्ध लेखक और पाठकों से होता है जबकि नाटक का सम्बन्ध लेखक, निर्देशक, दर्शक तथा श्रोता से होता है |

3. कहानी कही या पढ़ी जाती है, नाटक का अभिनय भी किया जाता है |

4. कहानी को आरम्भ, मध्य और अंत में बनता जाता है परन्तु नाटक को दृश्यों में विभाजित किया जाता है|

कहानी को नाटक में रूपांतरित कैसे करें -

1. कहानी की कथावस्तु का समय और स्थान के आधार पर विभाजन |
2. कहानी में घटित घटनाओं के आधार पर दृश्यों का विभाजन |
3. कथावस्तु में संबंधित वातावरण की व्यवस्था |
4. ध्वनि और प्रकाश का ध्यान रखना |
5. कथावस्तु के अनुरूप मंच सज्जा और संगीत का आयोजन |
6. संवाद, दृश्यों के अनुरूप क्रमिक विकास को सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त हो |

प्रश्नोत्तर

1. नाट्य रूपांतरण करते समय कौन-कौन सी समस्याएँ आती है ?

उत्तर - नाट्य रूपांतरण करते समय निम्नलिखित समस्याएं आती है -

- कथानक को अभिनय के रूप में बनाने में समस्या होती है |
- मंच, सज्जा, संगीत, ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था करने में समस्या होती है |
- पात्रों के मनोभावों और मानसिक द्वंद्वों की प्रस्तुति में समस्या होती है |
- संवादों को नाटकीय रूप प्रदान करने में समस्या आती है |

2. कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय किन -किन बातों को ध्यान रखना चाहिए -

उत्तर - कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय निम्न बातों को ध्यान रखना चाहिए -

- कहानी के विस्तृत कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित करना |
- नाटक के दृश्य बनाने से पहले उसका एक खाका तैयार करना |
- कथानक के अनुसार नाटक के दृश्यों को तैयार करना |
- संवाद छोटे प्रभावशाली और बोलचाल की भाषा में हो |
- पात्रों की वेशभूषा चरित्र के अनुसार होना चाहिए |
- ध्वनि और प्रकाश की उचित व्यवस्था हो |

3. कहानी का नाट्य रूपांतरण कैसे किया जाता है ?

उत्तर - कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए सबसे पहले कहानी की विस्तृत कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है | पात्रों के बारे में यदि विवरण है तो उन्हे संवादों के माध्यम से निर्धारित दृश्यों में उचित स्थान दिया जाए| पात्रों की वेशभूषा उनके चरित्रों के अनुसार हो |

<u>नाटक की रचना प्रक्रिया</u>

परिभाषा - अभिनय के माध्यम से समाज एवं व्यक्ति के चरित्रों का प्रदर्शन ही नाटक कहलाता है जिसका उद्देश्य शिक्षा और मनोरंजन के साथ-साथ मानवीय संवेदना, समस्या और समाज के यथार्थ का चित्रण करना होता है |

हमारी भारतीय परंपरा में नाटक को दृश्य काव्य की संज्ञा दी गई है| नाटक अपनी निजी विशेषताओं के कारण अन्य विधाओं से अलग है| साहित्य की अन्य विधाएं केवल पढ़ी या सुनी जाती है परन्तु नाटक पढ़ने, सुनने के साथ-साथ देखने के तत्व को भी अपने में समेटे हुए होता है| कथानक चाहे जहाँ से भी लिया जाए, लेकिन नाटक वर्तमान काल में ही संयोजित करना होता है, इसीलिए नाटक के मंच निर्देश हमेशा वर्तमान काल में ही लिखे जाते हैं|

समय का बंधन - नाटक में सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है - समय का बंधन| समय का यह बंधन ही नाटक की पूरी रचना पर अपना असर डालता है| क्योंकि पूरी कथा को एक निश्चित समय सीमा के भीतर समेटना होता है| यदि ऐसा नहीं होता तो नाटक से प्राप्त होने वाला रस, कौतुहल आदि प्राप्त नहीं हो पाता| चरित्र का विकास पूर्ण रूप से हो सके नाटककार को इसका ध्यान रखना होता है |

नाटक में प्रमुख रूप से तीन अंक होते हैं आरम्भ, मध्य और समापन| अत: इन अंकों को भी ध्यान में रखकर नाटक को समय की सीमा में बांटना को आवश्यक हो जाता है |

शब्द नाटक का शरीर- नाट्यशास्त्र में शब्द को नाटक का शरीर कहा गया है| नाटक के लिए आवश्यक है कि शब्दों के माध्यम से दृश्य बनाने की क्षमता भरपूर हो, क्योंकि नाटक की दुनिया में शब्द अपनी एक नयी, निजी और अलग अस्तित्व रखता है |

ध्वनि योजना -नाटक एक ऐसी विधा है जो दृश्य, श्रव्य तथा पाठ्य तीनों रूपों से संबंधित है| ध्वनि योजना का प्रबंध नाटक की सफलता तय करता है| ध्वनि का ऐसा प्रबंध होना चाहिए कि पीछे बैठे व्यक्ति तक स्पष्ट रूप से सुनाई दें|

प्रकाश योजना - दृश्य काव्य रंगमंच के लिए होता है इसलिए रंगमंच पर प्रकाश की व्यवस्था का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए| प्रकाश व्यवस्था के कारण देशकाल, वातावरण को व्यवस्थित रूप से उजागर किया जा सकता है| कहीं दुःख का क्षण हो तो वहां पर अँधेरे की व्यवस्था की जा सकती है, वहीँ उत्साह आदि का दृश्य हो तो प्रकाश की व्यवस्था परिवर्तित की जा सकती है|

वेशभूषा - वेशभूषा का नाटक के क्षत्र में विशेष महत्त्व होता है| पात्रों को विषयानुरूप ही वेशभूषा धारण किया जाना चाहिए, जिससे दर्शक सुविधापूर्वक उनसे जुड़ सके |

<u>नाटक के तत्व</u>

नाटक की रचना प्रक्रिया में निम्न तत्वों का प्रमुख योगदान है -

1.कथानक अथवा कथावस्तु
2.पात्र अथवा चरित्र चित्रण
3.संवाद योजना अथवा कथोपकथन
4.अभिनेयता
5.उद्देश्य
6.भाषा शैली

1. कथानक या कथावस्तु - यह नाटक का महत्वपूर्ण तत्व है, इसी के आधार पर नाटक को आरम्भ, मध्य और समापन तीन भागों में बांटा जाता है| नाटककार को शिल्प संरचना की पूरी समझ और अनुभव होना चाहिए |

2. पात्र अथवा चरित्र चित्रण - पात्रों के माध्यम से नाटककार कथानक को गतिशीलता प्रदान करता है, इनके माध्यम से ही यह नाटक का उद्देश्य प्रकट करता है | नाटक में एक प्रमुख पात्र तथा उनके सहायक पात्र होते हैं | प्रमुख पात्र को नायक अथवा नायिका कहते हैं |

3. संवाद योजना अथवा कथोपकथन - .संवाद का शाब्दिक अर्थ है परस्पर बातचीत | यह नाटक का प्रमुख तत्व है, इसके बिना नाटक की कल्पना भी नहीं की जा सकती | संवाद ही नाटक को गतिशील बनाते हैं तथा पात्रों के चरित्र का उद्घाटन करते हैं | नाटक में संवाद सरल, सहज, स्वाभाविक तथा पात्रानुकूल होना चाहिए |

4. अभिनेयता - अभिनेयता के द्वारा ही नाटक का मंच पर अभिनय किया जाता है | अभिनेयता के कारण ही नाटक अभिनय के योग्य बनता है |

5. उद्देश्य - साहित्य की अन्य विधाओं के सामान ही नाटक भी उद्देश्य पूर्ण रचना है | नाटककार अपने पात्रों के दारा इस उद्देश्य को स्पष्ट करता है |

6. भाषा -शैली - भाषा -शैली के माध्यम से ही नाटककार अपनी संवेदनाओं को अभिव्यक्त करता है | नाटक की भाषा-शैली सरल, सहज, स्वाभाविक तथा पात्रानुकूल होना चाहिए |

शिल्प- नाटकों के शिल्प के प्रमुख उदहारण है - अभिज्ञान शाकुंतलम जैसे शास्त्रीय नाटक, लोकनाट्य, पारसी नाट्य, यथार्थवादी नाट्य, नुक्कड़ नाटक आदि| नाटककार अपना पृथक शिल्प भी विकसित कर सकता है|

प्रश्न-

1. नाटक और साहित्य की अन्य विधाओं में क्या अंतर है ?

उत्तर -नाटक दृश्य काव्य है जिसमें अभिनय होता है जबकि अन्य विधाओं में नहीं, नाटकों का सम्बन्ध दर्शकों से है जबकि अन्य विधा में पाठकों से होता है |

2. नाटक का शरीर किसे कहा गया है और क्यों ?

उत्तर- नाटक का शरीर शब्द को कहा गया है क्योंकि नाटक की दुनिया में शब्द अपनी एक नयी नीति और अलग अस्मिता के साथ आते हैं | यह शब्द कथानक का विकास करने में सक्षम होते हैं और किसी वातावरण की प्रस्तुति करने में सहायक होते हैं।

3. एक नाटककार को कुशल संपादक भी होना क्यों आवश्यक है ?

उत्तर - नाटककर को अनेक स्थितियों, घटनाओं व दृश्य का चुनाव करने वाला होना चाहिए फिर उसे इस प्रकार क्रम में रखे कि नाटक का उचित विकास हो और घटनाएँ आगे बढ़े, इसके लिए नाटककार को कुशल संपादक होना आवश्यक है|

4. नाटक की कहानी बेशक भूतकाल या भविष्य काल से संबंधित हो, तब भी उसे वर्तमानकाल में ही घटित होना पड़ता है | इस धारणा के पीछे क्या कारण है ?

उत्तर- नाटक भले ही भूत या भविष्यकाल से संबंधित हो, लेकिन उसका मंचन वर्तमान काल में ही करना पड़ता है| यह नाटक की एक सीमा भी है और खूबी भी कि हम काल की सीमा से परे कहानियों को भी वर्तमान काल में जाकर देख पाते हैं |

5. नाटक के लिए शब्द का क्या महत्त्व है ?

उत्तर- नाटक की दुनिया में शब्द अपनी एक नई, निजी और अलग अस्मिता ग्रहण करता है कविता की तरह नाटक में शब्द बिंब और प्रतीक में बदलने की क्षमता भी रखते है

अन्य प्रश्न

1. नाटक लिखते समय नाटककार को किस बात का ध्यान रखना पड़ता है ?

उत्तर- समय का बंधन

2. नाटक को कितने भागों में विभाजित किया गया है ?

उत्तर - तीन भागों में

3. रंगमंच प्रतिरोध का सबसे सशक्त माध्यम क्यों कहा गया है ?

उत्तर - नाटक स्वयं में एक जीवंत माध्यम है | कोई भी दो चरित्र जब आपस में मिलते हैं तो विचारधाराओं के आदान-प्रदान से टकराहट पैदा होना स्वाभाविक है, वह कभी भी यथास्थिति को स्वीकार कर ही नहीं सकता और अस्वीकार की स्थिति बनी ही रहती है। जिस नाटक में इस तरह की असंतुष्टि, छटपटाहट, प्रतिरोध और अस्वीकार जैसे नकारात्मक तत्वों की ज्यादा उपस्थिति होगी वह नाटक उतना ही सशक्त साबित होगा |

4. शिल्प के सम्बन्ध में नाटककार का कौन सा प्रयास असफल सिद्ध होता है ?

उत्तर - जब नाटककार पहले शिल्प या संरचना निश्चित कर लेता है और बाद में किसी नाटक या कथ्य को उसमें प्रयुक्त करना चाहता है, तब नाटककर सफल सिद्ध होता है |

5. कल्पना के आधार पर कोई एक कहानी को नाटक के रूप में परिवर्तित कीजिए

उत्तर - (विद्यार्थी अपनी मौलिक रचना की कुछ पंक्तियाँ लिख सकते हैं |)

<u>गौतम बुद्ध और अंगुलिमाल</u>

(मगध के खूंखार डाकू अंगुलिमाल ने मगध के घने जंगलों में अपना आतंक स्थापित कर रखा था | अब तक वह 999 राहगीरों को लूटकर व उन्हें मारकर उनकी अंगुलियों की माला पहन चुका था | उसी जंगल से होते हुए गौतम बुद्ध गुजर रहे है.|)

अंगुलिमाल: अरे! इस घने बियाबान जंगल में यह कौन आ रहा है | इस व्यक्ति के चेहरे पर जरा भी डर नहीं | हो सकता है इसने मेरा नाम सुना न हो | अभी इसे ठीक करता हूँ |

(अंगुलिमाल तलवार लिए हुए एकाएक प्रकट होता है |)

अंगुलिमाल : ऐ ठहर ! इस तरह कहाँ बढ़े जा रहे हो ?

(बुद्ध ठहर जाते हैं)

बुद्ध : मैं तो ठहर गया लेकिन तुम कब ठहरोगे ?

अंगुलिमाल : अरे ! तुमने मुझसे पूछने का साहस किया ? क्या तुम नहीं जानते, मैं कौन हूँ ?

बुद्ध : नहीं ! मैं जानता हूँ कि तुम कौन हो| तुम एक भले मनुष्य हो, जो इस वन में गुजरने वाले राहगीरों की सहायता करना चाहते हो |

अंगुलिमाल : बिलकुल गलत सोचा तुमने, मुर्ख ! तुम नहीं जानते कि मैं मगध साम्राज्य के इस बियाबान वन का कुख्यात डाकू अंगुलिमाल हूँ | मेरे नाम से ही लोग कांपते हैं |

बुद्ध : तुम कितनी पीड़ा उठाते हो !

अपनी आजीविका के लिए अपने परिवार से दूर इस घने वन में भटकते फिरते हो |

अंगुलिमाल : तुम अभी भी नहीं समझे कि मैं कौन हूँ ? मैं अंगुलिमाल हूँ जिसके नाम का आतंक मगध के हर गाँव में है।

बुद्ध : तुम ऐसा काम क्यों नहीं करते कि जिससे लोग तुम्हे तुम्हारी अच्छाई के लिए याद रखें|

अंगुलिमाल : बातचीत से तुम कोई साधू प्रतीत होते हो | अपने यह उपदेश अपने पास ही रखो, मुझे मत दो |

बुद्ध : मैं तुम्हे दे भी क्या सकता हूँ | अच्छा अंगुलिमाल ! तुमने यह गले में क्या पहन रखा है ?

अंगुलिमाल : यह मेरे द्वारा मारे गए 999 व्यक्तियों की अंगुलियों की माला है | बस एक अंगुली की कमी है | अब तुम्हे मारकर तुम्हारी उंगली की माला पहनकर पूरी हो जाएगी |

बुद्ध : तो इससे क्या होगा अंगुलिमाल ?

अंगुलिमाल : 1000 अंगुलियों की माला पहनने का मेरा लक्ष्य पूरा हो जाएगा | तो अब तुम तैयार हो जाओ |

बुद्ध : मैं तैयार हूँ अंगुलिमाल, पर मुझे मारने से पहले क्या तुम मेरा एक छोटा सा काम कर दोगे |

अंगुलिमाल : हाँ बताओ, मैं प्रयत्न करता हूँ |

बुद्ध : वह सामने पेड़ देख रहे हो ना !

अंगुलिमाल : हाँ देख रहा हूँ |

बुद्ध : उस पेड़ में हरी-हरी पत्तियाँ हैं | उनमें से तुम केवल एक पत्ती तोड़ लाओ |

अंगुलिमाल : अभी तोड़कर लाता हूँ |

(अंगुलिमाल पेड़ के पास गया और उनमें से एक पत्ती तोड़कर लाया)

बुद्ध : बहुत अच्छा अंगुलिमाल ! अब एक काम और कर दो, टूटी हुई पत्ती को वापस जाकर उस पेड़ पर लगा दो |

अंगुलिमाल : यह कैसी बात करते हो ? क्या ऐसा संभव है ? क्या पेड़ से तोड़ी गई पत्ती वापस पेड़ में लगाई जा सकती है ?

बुद्ध : तो तुम जिस तरह लोगों को मारते हो, उसकी प्राण हत्या करते हो | क्या तुम उसके प्राण वापस ला सकते हो ?

अंगुलिमाल : नहीं यह संभव नहीं
बुद्ध : तो तुम्हे किसने यह अधिकार दिया कि तुम उनके प्राण छीन लो, उनके परिवार को अनाथ कर दो, अपने माथे पर किसी की हत्या का घोर कलंक ले लो |

अंगुलिमाल : अब मैं समझ गया भगवन ! आप बहुत बड़े संन्यासी हैं | मुझसे भूल हुई मुझे माफ़ कर दीजिए | आज से यह हथियार मैं रखता हूँ |

(अंगुलिमाल अपनी तलवार बुद्ध के चरणों पर रखता है और उनके आगे शीश झुकाता है)

बुद्ध : ठीक है अंगुलिमाल ! अब अपनी भूल का प्रायश्चित करो | अच्छे काम करो |

(बुद्ध अंगुलिमाल को अपने साथ लेकर आगे बढ़ जाते हैं) |

<u>कैसे बनता है रेडियो नाटक</u>

रेडियो श्रव्य माध्यम है और श्रव्य काव्य के अंतर्गत आता है |

नाटक का रंगमंच से सीधा सबंध है, लेकिन रेडियो नाटक रंगमंच के लिए नहीं लिखा जाता | श्रव्य माध्यम पर श्रोताओं के लिए इसका प्रसारण होता है | इसलिए रेडियो नाटक रंगमंच की सीमाओं से मुक्त होता है |

अदृश्य होने के कारण जहाँ रेडियो नाटक में कुछ कमी रह जाती है तो वहीं इसके उन्मुक्त उधन की कुछ संभावनाएं भी बन जाती है फैंटेसी या रम्य कल्पना रेडियो नाटक का प्रिय क्षेत्र है| आशय यह है कि मंच पर जैसे दृश्य नहीं दिखाए जा सकते श्रव्य नाटक में ऐसे दृश्य बड़ी सहजता से सम्मिलित किए जा सकते हैं |

<u>रेडियो के तत्व -</u> इसके लिए तीन तत्वों का सहारा लिया जाता है -

भाषा, ध्वनि, संगीत | इन तीनों के कलात्मक संयोजन से विशेष प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है | भाषा केंद्र में है और ध्यातव्य है कि भाषा की लिखित शक्ति सबसे अधिक होती है और शब्द प्रयोग ऐसे हो जिसका उच्चरण अभिनय संपन्न हो सके |

केवल वाचिक अभिनय ही श्रव्य माध्यम पर हो सकता है |

संगीत सामान्यत: दृश्य परिवर्तन के लिए उपयोग में लाया जाता है, इसके साथ ही यह संवाद के बीच का अन्तराल भरने एवं विषयवस्तु और कथ्य के अनुरूप वातावरण का निर्माण करने में भी सहायक होता है |

चिड़ियों का चहचहाना, प्लेटफार्म का शोर, काँच का टूटना, तेज हवाओं का प्रभाव ध्वनि विशेषताओं के माध्यम से उत्पन्न किया जाता है |

रेडियो नाटक में नरेटर या सूत्रधार हो सकता है | जो संवाद से पूरा नहीं हो सकता वह नरेशन से पूरा हो सकता है | परन्तु जो काम नरेटर या सूत्रधार करता है, संवाद के माध्यम से हो जाए तो यह अच्छा माना जाता है |

इस प्रकार रेडियो नाटक से अतीत, वर्तमान, भविष्य तीनों में गमन किया जा सकता है | यह वाचिक शक्ति का पूरा उपयोग किया जा सकता है | कल्पना तत्व से इसका गहरा सम्बन्ध होता है | शब्दों के माध्यम से एक पूरा संसार और दृश्य बनाता है, ध्वनि और संगीत का रचनात्मक प्रयोग इसके प्रभाव में वृद्धि करता है |

महत्त्वपूर्ण प्रश्न -

1. सिनेमा, रंगमंच और रेडियो में क्या-क्या समानताएं होती है ?

उत्तर-

- सिनेमा, रंगमंच और रेडियो में एक कहानी होती है |
- तीनों में आरम्भ, मध्य और अंत होता है |
- इनमें पात्रों के आपसी संवाद होता है |
- पात्रों का परस्पर द्वंद्व और अंत में समाधान होता है |

2. रेडियो नाटक की कहानी में किन-किन बातों का ध्यान रखना होता है ?

उत्तर - रेडियो नाटक संवादों एवं ध्वनि पर आधारित होती है | इसमें कहानी का चयन करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना होता है -

- कहानी केवल एक ही घटना पर आधारित नहीं होना चाहिए | यह श्रोताओं को बहुत जल्दी उबाऊ बनाती है | इसलिए इसमें अनेक कहानियों का समावेश होना चाहिए |

- समय -सीमा - सामान्यत: रेडियो नाटक की अवधि बीस से तीस मिनट की होती है क्योंकि साधारणत: मनुष्य की एकाग्रता की अवधि इतनी ही होती है |
- रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या कम से कम होनी चाहिए क्योकि श्रोता ध्वनि के आधार पर ही पात्रों को याद रख पाता है |

3. रेडियो पर रेडियो नाटक का आरम्भ किस प्रकार हुआ ?

उत्तर - आज से कुछ दशक पहले रेडियो ही मनोरंजन का प्रमुख साधन था | रेडियो पर समाचार, ज्ञानवर्धक कार्यक्रम, खेलो का आँखों देखा हाल, संगीत आदि प्रसारित किया जाता था | धीरे-धीरे नाटक भी प्रसारित किया जाने लगा | ये नाटक लघु एवं धारावाहिक के रूप में भी प्रस्तुत किए जाते हैं |

समाचार लेखन

समाचार लेखन किसी बात को लिखने का वह तरीका है जिसमें उस घटना, विचार, समस्या के सबसे अहम् तथ्यों, सूचनाओं को व्यवस्थित तरीके से लिखा जाता है | इस शैली में किसी घटना का ब्यौरा कालक्रमानुसार के बजाय सबसे पहले महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना से शुरू होता है |

समाचार लेखन की एक विशेष शैली, उल्टा पिरामिड शैली है | जिसमे समाचार का क्रम मुखड़ा (इंट्रो), बाडी, समापन होता है | यह समाचार लेखन का सबसे बुनियादी सरल, उपयोगी व व्यावहारिक सिद्धांत है | इसमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्य व सूचना को सबसे पहले बताया जाता है और उसके बाद घटते हुए क्रम में अन्य सूचनाओं को लिखा या बताया जाता है |

उत्तम समाचार लेखन के लिए छह सूचनाओं का प्रयोग होता है, जिसे छह ककार कहा जाता है | क्या, कहाँ ,कब ,कौन, क्यों, कैसे प्रश्नों के उत्तर में प्राप्त होते है |

किसी भी समाचार में पूर्ण संतुष्टि तभी मिलती है जब इन छह ककारों का उत्तर दिया जाए | क्या - क्या हुआ ? जिसके सम्बन्ध में समाचार लिखा जा रहा है |

कहाँ - घटना का सबंध किस नगर, गाँव, प्रदेश से है ?

कब - समाचार का समय, दिन, अवसर |

कौन - समाचार से कौन लोग संबंधित है |

क्यों - समाचार की पृष्भूमि |

कैसे - समाचार का पूरा विवरण |

समाचार लेखन के तत्व -

1. नवीनता
2. सत्यता
3. स्पष्टता
4. संक्षिप्ता
5. सुरुचि

उदाहरण -**<u>अब नेशनल समर मेमोरियल में जलेगी बलिदान की लौ</u>**

राजधानी दिल्ली में इण्डिया गेट पर अमर जवान ज्योति का आज 50 साल बाद समारोह पूर्वक राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में विलय किया गया | यह स्थान इण्डिया गेट से 400 मीटर की दूरी पर है | अमर जवान ज्योति की स्थापना वर्ष 1971 के युद्ध में पाकिस्तान पर भारत की ऐतिहासिक जीत और उसमें शहीद भारतीय सैनिकों के सम्मान में की गई थी | तात्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने 26 जनवरी 1972 को इसका उद्घाटन किया था | आजादी के पहले बने इण्डिया गेट पर उन 25 हजार से अधिक ब्रिटिश भारतीय सैनिकों के नाम लिखे हैं, जो प्रथम विश्वयुद्ध और अंग्रेज -अफगान युद्ध लड़े थे | राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का निर्माण केंद्र सरकार ने 2019 में किया था | इसे आजादी के बाद से शहीद हुए 25,942 भारतीय जवानों के सम्मान में बनाया है | यहाँ गलवान घाटी में शहीद सैनिकों समेत सभी शहीदों के नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखे हैं |

महत्वपूर्ण प्रश्न -

1. समाचार लेखन क्या है ?

उत्तर - लोक महत्त्व व जनरुचि की समकालीन घटनाओं की संतुलित प्रस्तुति को समाचार कहा जाता है|

2. समाचार लेखन के कितने अंग /अवयव हैं ?

उत्तर - समाचार लेखन के तीन अंग /अवयव हैं

1. मुखड़ा (इंट्रो) 2. बाडी 3. समापन

3. उल्टा पिरामिड शैली क्या है ?

या

समाचार लेखन की शैली पर प्रकाश डालिए |

उत्तर- उल्टा पिरामिड शैली समाचार लेखन की सर्व प्रचलित शैली है | इस शैली में सबसे महत्वपूर्ण सूचना पहले व कम महत्वपूर्ण सूचना बाद में प्रस्तुत की जाती है | कथानक शैली में क्लाइमेक्स मध्य

में या अंत से पूर्व रखे जाते हैं जबकि उल्टा पिरामिड शैली में प्रारंभ ही चरमोत्कर्ष (क्लाइमेक्स) होता है |

4. इंट्रो लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तर- इंट्रो समाचार का प्रारंभिक और महत्तवपूर्ण भाग होता है, जिसमें समाचार का समस्त सूचनात्मक भाग निहित होता है | अत: इंट्रो को प्रभावोत्पादक होना चाहिए व क्या, कब, कौन, कहाँ के समस्त तथ्यों का समावेश होना चाहिए | भाषा सहज परन्तु प्रभावशाली होना चाहिए |

5. समाचार में नवीनता का क्या महत्त्व है ?

उत्तर - समाचार के लिए नया या न्यू होना बहुत आवश्यक होता है | प्राय: हर समाचार पत्र के लिए 24 घंटो में घटी घटना ही समाचार बनती है उसके बाद यह पुरानी हो जाती है | इस प्रकार हम 24 घंटे की अवधि को ही समाचार की डेड लाइन कह सकते हैं |

6. समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर - समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं-

- पूर्णकालिक पत्रकार
- अंश कालिक पत्रकार
- फ्रीलांसर पत्रकार

अन्य प्रश्न

1.समाचार लेखन के छह ककार क्या है और यह क्यों आवश्यक है ?

2. समाचार के प्रमुख तत्व कौन - कौन से हैं ?

3.समाचार लेखन के समय ध्यान रखने वाली महत्त्वपूर्ण कौंन से हैं ?

4. समाचार और कहानी शैली में क्या अंतर है ?

5.किन गुणों के होने से कोई घटना समाचार बन सकती है ?

6.किन्हीं दो राष्ट्रीय समाचार पत्रों के नाम लिखिए ?

7. “भारत में धीरे-धीरे पैर पसार रहा है|”कोरोना का ओमिक्रान संकट पर समाचार लिखिए।

फीचर लेखन

फीचर लेखन अर्थात शब्दों द्वारा चित्रांकन या शब्द चित्र | फीचर भाव और भाषा की मिश्रित प्रस्तुति को कहते हैं |

फीचर (Feature) अंग्रेजी भाषा का शब्द है जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के फैक्ट्रा (Fectura) शब्द से हुई है |

फीचर लेखन पत्रकारिता की आधुनिक विधा फीचर लेखन में वैचारिक चिंतन के साथ-साथ भावात्मक संवेदना का पुट भी विद्यमान रहता है |

समकालीन घटना तथा किसी क्षेत्र विशेष की विशिष्ट जानकारी के सचित्र और मोहक विवरण को फीचर कहा जाता है | फीचर मनोरंजक ढंग से तथ्यों को प्रस्तुत करने की कला है | फीचर अपनी सरस भाषा और आकर्षक शैली से पाठकों को इस प्रकार अभिभूत कर देते हैं कि वे लेखक के विचारों को आसानी से समझ लेते हैं वस्तुत: फीचर मनोरंजन की उंगली थामकर जानकारी परोसता है जो मानवीय रूचि के विषयों के साथ सीमित समाचार पाठक को वर्तमान से भूत और भविष्य की तरफ ले जाता है |

फीचर के प्रकार - फीचर पत्रकारिता की बहुत ही विस्तृत विधा है, जिसे देखते हुए निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है -

1. समाचार फीचर
2. मानवीय रुचिपरक फीचर
3. व्याख्यात्मक फीचर
4. खेलपरक फीचर
5. ऐतिहासिक फीचर
6. विज्ञान फीचर
7. खोजपरक /छानबीन सम्बन्धी फीचर
8. व्यक्तिपरक फीचर
9. मनोरंजक /सिनेमा या सांस्कृतिक कार्यक्रमों से संबंधित फीचर
10. फोटो फीचर

फीचर लिखते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :-

1. फीचर लेखन की शैली सरल और भावपूर्ण होनी चाहिए |
2. नई जिज्ञासाएं जागृत करने की क्षमता होनी चाहिए |
3. विचारों की अधिकता होनी चाहिए |
4. किसी बात को बार-बार दोहराना नहीं चाहिए |

5. नवीनता और ताजगी से युक्त होना चाहिए |
6. आकार ज्यादा बड़ा नहीं होना चाहिए |

उदहारण**:-** **<u>सफलता के लिए जरुरी है आत्मसम्मान</u>**

उतार-चढाव जीवन के हिस्से हैं और यह स्वभाविक भी है | इनमें खुद को प्रभावित न होने दें | परिस्थिति चाहे कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हो, अपने बारे में हमेशा ऊँची सोच रखे | आप देखेंगे कि आप जो भी करेंगे, उसमें आपको निश्चित ही सफलता मिलेगी | जिन लोगों में आत्म सम्मान की भावना कम होती है वे स्कूल, खेल या जीवन में कुछ बन नहीं पाते, वे आमतौर पर आलोचना के शिकार होते हैं और उनमें आत्महीनता की भावना घर कर जाती है| अपनी सीमाओं को स्वीकार कर गुणों पर जोर देते हुए क्षमता को बढ़ाएं और उस बात पर ध्यान केन्द्रित करें कि आप क्या हासिल कर सकते हैं इससे जीवन में सफलता अवश्य मिलेगी |

अभ्यास के लिए निम्न विषयों पर फीचर लिखिए |

- पर्यटन का महत्व
- भष्ट्राचार की फैलती विषबेल
- मोबाईल लत है जरा बचकर
- हर हाथ में हथियार -सोशल मीडिया
- बदलता शैक्षिक परिवेश
- बच्चों का छिनता बचपन
- चुनावी वायदे
- सजग नागरिक
- नींद क्यूँ रात भर नहीं आती

<u>आलेख</u>

आलेख लेख का ही प्रतिरूप होता है, जो किसी एक विषय पर तथ्यात्मक, विशलेष्णात्मक, विचारात्मक, सर्वांगपूर्ण और सम्यक विचार प्रस्तुत करती है |

आलेख को वैचारिक गद्य रचना भी कहा जाता है | आलेख लिखते समय मुद्दे की बारीकी को समझना आवश्यक होता है |

आलेख लेखन हेतु महत्त्वपूर्ण बातें -

1. आलेख ज्वलंत मुद्दों, विषयों और महत्वपूर्ण चरित्रों पर लिखा जाना चाहिए |
2. आलेख जिज्ञासा पूर्ण, नवीनता और ताजगी से परिपूर्ण होना चाहिए |
3. आलेख का आकार संक्षिप्त होना चाहिए |
4. इसमें विचारों और तथ्यों की क्रमबद्धता रहती है, विचार क्रमबद्ध रहना चाहिए |

5. भाषा सहज, सरल और प्रभावशाली होना चाहिए |
6. एक ही बात पुन: न लिखी जाए|
7. विश्लेषण शैली का प्रयोग करना चाहिए |

नमूना आलेख

कूड़े के ढेर है दुनिया की अगली चुनौती

शिक्षाविदों और पर्यावरण वैज्ञानिकों द्वारा एकत्रित जानकारी के आधार पर विश्व में अपशिष्ट पचास से ज्यादा महकाय क्षेत्र हैं | विश्व की आधी आबादी को बेसिक वेस्ट मैनेजमेंट सुविधा उपलब्ध न होने कारण अनुमानत: दुनिया का लगभग चालीस फीसदी कूड़ा खुले में सड़ता है | बारिश, भीषण गर्मी में बिना ढका -समेटा और सड़ता अपशिष्ट खतरनाक कीटाणु और जहरीली गैस पैदा करता है बारिश में इससे रिसता पानी भूमिगत जल में समाता है और आसपास के नदी, नालों, जलाशयों को प्रदूषित करता है | जलते कूड़े की जहरीली गैस और घोर प्रदूषण के बीच जीविका कमाने वालों और निकटवर्ती बस्तियों में रहने वाले लोगों के स्वास्थ्य को दीर्घावधि में जो हानि निश्चित है, उसके प्रति विश्व स्वास्थ्य संगठन कितना चिंतित है ? यह ऐसा टाइम बम है, जो फटने पर विश्व जन स्वास्थ्य में प्रलय ला सकता है | संयुक्त राष्ट्र को ब्रिटेन की लीड्स यूनिवर्सिटी ने चेतावनी दी है कि खुले कूड़े के विशालकाय ढेर मलेरिया, टाईफाइड, कैंसर और पेट, त्वचा, साँस, आँख तथा जानलेवा जेनेटिक और संक्रमण रोगों के जनक है |

विश्व के सभी देशों को स्वच्छोन्मुख करने का सबसे सार्थक प्रयास उर्जा उत्पादन में हो सकता है | कूड़े से उर्जा उत्पादन में अग्रणी यूरोपीय देशों की तकनीक विकासशील देशों की कूड़ा बस्तियों को अभिशाप से वरदान में बदल सकती है |

इसके अतिरिक्त छात्र निम्नलिखित विषयों पर आलेख लेखन का अभ्यास कर सकते है -

- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना
- हरे-भरे पेड़
- नए सामाजिक बदलाव
- स्टार्ट-अप और भारत
- विकलांगों की खेल जगत में बढती हुई उपलब्धि
- डाक्टर हड़ताल पर, मरीज परेशान
- कोविड -19 और भारत की तैयारी
- वर्तमान शिक्षा प्रणाली
- क्या तन -मन की थकान
- रिश्वत का रोग
- सपना सच हो अपना

आरोह भाग-2 काव्य खण्ड

काव्य खण्ड के प्रश्न कैसे हल करें -

1. पाठ्यक्रम की सभी कविताओं का भावार्थ और काव्य सौंदर्य ध्यानपूर्वक समझें और अपनी कॉपी में उसे लिखें ।
2. अध्ययन सामग्री, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र और प्रतिदर्श प्रश्नपत्र को लिखित रूप से हल करने का अभ्यास करें ।
3. प्रश्नों के लिए 3 अंक निर्धारित हैं जिसे 50-60 शब्दों में लिखना है ।
4. सभी प्रश्नों के संतुलित व सटीक उत्तर लिखने का अभ्यास करें ।

1. उषा

कवि- शमशेर बहादुर सिंह

कविता सार :-

उषा कविता में कवि सूर्योदय के समय आकाश में बदलते रंगों के जादू के बिम्बों को अत्यंत आकर्षक रूप में उठाता है । सूर्योदय के ठीक पूर्व आसमान नीले शंख की तरह बहुत नीला नजर आता है । प्रातःकालीन नभ की तुलना काली सिल से की गई है जिसे अभी अभी केसर पीस कर धो दिया गया है । कभी कवि को राख से लीपे हुए चौके के समान लगता है , जो अभी गीला पडा है। नीले गगन में सूर्य की पहली किरण ऐसी दिखाई देती है मानो कोई सुंदर गौरवर्णी देह नीले जल में स्नान कर रही हो और उसका गोरा शरीर पारदर्शी जल की लहरों के साथ झिलमिला रहा हो। प्रातःकालीन परिवर्तनशील सौंदर्य का दृश्य बिम्ब, प्राकृतिक परिवर्तनों को मानवीय क्रियाकलापों के माध्यम से व्यक्त किया गया है । यथार्थ जीवन से चुने गए उपमानों जैसे :- राख से लीपा हुआ चौका, काली सिल, नीला शंख, स्लेट, लाल खडिया चाक आदि का प्रयोग । इस कविता की तुलना प्रसाद की कृति 'बीती विभावरी जाग री' से जा सकती है ।

प्रश्न . भोर के नभ को राख से लीपा गीला चौका क्यों कहा गया है ?

उत्तर: भोर का आकाश गीली राख के रंग के समान गहरा स्लेटी होता है तब वातावरण में नमी और पवित्रता होती है इन तीन विशेषताओं रंग, नमी और पवित्रता के कारण भोर के नभ को राख से लीपा गीला चौका कहा गया है।

प्रश्न:.नील जल में हिलती झिलमिलाती देह के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है ?
उत्तर: कवि नील जल के माध्यम से नीले आकाश का चित्रण करना चाहता है | सूरज का नित -नित बढ़ते जाना किसी रूपसी नारी की गोरी देह का खिलते जाना है | इस प्रकार कवि नीले आकाश में विकिरण होती सूरज की धवल किरणों के प्रकाश का चित्रण करना चाहता है |

प्र. उषा कविता में सूर्योदय के किस रूप को चित्रित किया गया है ?

उत्तर : कवि ने प्रातःकालीन पल - पल परिवर्तनशील सौंदर्य का दृश्य बिम्ब मानवीय क्रियाकलापों के माध्यम से व्यक्त किया गया है ।

प्र. भोर के नभ और राख -सी लीपे गए चौके में क्या समानता है ?
उत्तर : भोर के नभ और राख से लीपे हुए चौके में यह समानता है कि दोनों ही गहरे सलेटी रंग के हैं, पवित्र हैं। नमी से युक्त हैं ।
प्र. स्लेट पर लाल.....पंक्ति का अर्थ बताएँ ।
उत्तर : भोर का नभ लालिमा से युक्त स्याही लिए हुए होता है । अतः लाल खड़िया चाक से मली हुई स्लेट के समान प्रतीत होती हैं ।

प्र. उषा का जादू किसे कहा गया है ?
उत्तर: विविध रूप रंग बदलती सुबह व्यक्ति पर जादुई प्रभाव डालते हुए उसे मंत्र मुग्ध कर देती है ।

प्र. सूर्योदय से उषा का कौन -सा जादू टूटता है?
उ प्रातःकाल के सभी सुन्दर दृश्य व पल-पल परिवर्तित परिवेश सूर्य उदय होते ही समाप्त हो जाता है जिसे जादू टूटना कहा गया है।

प्र कवि ने भोर के नभ की क्या विशेषताएँ बताई हैं ?
उ. राख से लीपे चौके जैसा, नीले शंख जैसा।

प्र. कवि ने किस शैली में कविता का वर्णन किया है ?
उत्तर : चित्रात्मक (बिम्बात्मक) शैली में , नवीन उपमान व प्रयोगवादी भाषा शैली

2. कवितावली-

तुलसीदास

1. कवित्त और सवैया

कविता का सार-

पहले कवित्त में कवि ने पेट की आग को सबसे बड़ा बताया है। मनुष्य सारे काम इसी आग को बुझाने के उद्देश्य से करते हैं चाहे वह व्यापार, खेती, नौकरी, नाच-गाना, चोरी, गुप्तचरी, सेवा-टहल, गुणगान, शिकार करना या जंगलों में घूमना हो। इस पेट की आग को बुझाने के लिए लोग अपनी संतानों तक को बेचने के लिए विवश हो जाते हैं। यह पेट की आग समुद्र की बड़वानल से भी बड़ी है। अब केवल रामरूपी घनश्याम ही इस आग को बुझा सकते हैं।

पहले सवैये में कवि अकाल की स्थिति का चित्रण करता है। इस समय किसान खेती नहीं कर सकता, भिखारी को भीख नहीं मिलती, व्यापारी व्यापार नहीं कर पाता तथा नौकरी की चाह रखने वालों को नौकरी नहीं मिलती। लोगों के पास आजीविका का कोई साधन नहीं है। वे विवश हैं। वेद-पुराणों में कही और दुनिया की देखी बातों से अब यही प्रतीत होता है कि अब तो भगवान राम की कृपा से ही कुशल होगी। वह राम से प्रार्थना करते हैं कि अब आप ही इस दरिद्रता रूपी रावण का विनाश कर सकते हैं।

दूसरे सवैये में कवि ने भक्त की गहनता और सघनता में उपजे भक्त-हृदय के आत्मविश्वास का सजीव चित्रण किया है। वे कहते हैं कि चाहे कोई मुझे धूर्त कहे, अवधूत या जोगी कहे, कोई राजपूत या जुलाहा कहे, किंतु मैं किसी की बेटी से अपने बेटे का विवाह नहीं करने वाला और न किसी की जाति बिगाड़ने वाला हूँ। मैं तो केवल अपने प्रभु राम का गुलाम हूँ। जिसे जो अच्छा लगे, वही कहे। मैं माँगकर खा सकता हूँ तथा मस्जिद में सो सकता हूँ किंतु मुझे किसी से कुछ लेना-देना नहीं है। मैं तो सब प्रकार से भगवान राम को समर्पित हूँ ।

2. लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप

प्रतिपाद्य- यह अंश 'रामचरितमानस' के लंकाकांड से लिया गया है । जब लक्ष्मण शक्ति-बाण लगने से मूर्छित हो जाते हैं। भाई के शोक में विगलित राम का विलाप धीरे-धीरे प्रलाप में बदल जाता है जिसमें लक्ष्मण के प्रति राम के अंतर में छिपे प्रेम के कई कोण सहसा अनावृत्त हो जाते हैं। यह प्रसंग ईश्वरीय राम का पूरी तरह से मानवीकरण कर देता है जिससे पाठक का काव्य-मर्म से सीधे जुड़ाव हो जाता है। इस घने शोक-परिवेश में हनुमान का संजीवनी लेकर आ जाना कवि को करुण रस के बीच वीर रस के उदय के रूप में दिखता है।

कविता का सार-

युद्ध में लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम की सेना में हाहाकार मच गया। सब वानर सेनापति इकट्ठे हुए तथा लक्ष्मण को बचाने के उपाय सोचने लगे। लंका से लाए गए सुषेण वैद्य के परामर्श पर हनुमान हिमालय से संजीवनी बूटी लाने के लिए चल पड़े। लक्ष्मण को गोद में लिटाकर राम व्याकुलता से हनुमान की प्रतीक्षा करने लगे। आधी रात बीत जाने के बाद राम अत्यधिक व्याकुल हो गए। वे विलाप करने लगे कि तुम मुझे कभी भी दुखी नहीं देख पाते थे। मेरे लिए ही तुमने वनवास स्वीकार किया। अब वह प्रेम मुझसे कौन करेगा? यदि मुझे तुम्हारे वियोग का पता होता तो मैं तुम्हें कभी साथ नहीं लाता। संसार में सब कुछ दुबारा मिल सकता है, परंतु सहोदर भाई नहीं। तुम्हारे बिना मेरा जीवन पंखरहित पक्षी के समान है। अयोध्या जाकर मैं क्या जवाब दूँगा? लोग कहेंगे कि पत्नी के लिए भाई को गंवाकर आया। तुम्हारी माँ को मैं क्या जवाब दूँगा? तभी हनुमान संजीवनी बूटी लेकर आए। वैद्य ने दवा बनाकर लक्ष्मण का उपचार किया और उनकी मूर्च्छा समाप्त हो गई। राम ने उन्हें गले से लगा लिया। वानर सेना में उत्साह आ गया। रावण को यह समाचार मिला तो उसने परेशान होकर कुंभकरण को उठाया। कुंभकरण ने जगाने का कारण पूछा तो रावण ने सीता के हरण से युद्ध तक की सारी बात बताई तथा बड़े-बड़े वीरों के मारे जाने की बात कही। कुंभकरण ने रावण को बुरा-भला कहा और कहा कि तुमने साक्षात ईश्वर से वैर लिया है और अब अपना कल्याण चाहते हो! राम साक्षात हरि तथा सीता जी जगदंबा हैं। उनसे वैर लेना कभी कल्याणकारी नहीं हो सकता।

कविता पर आधारित लघुत्तरीय प्रश्न -

(1) तुलसी के समय की आर्थिक दशा कैसी थी?

उत्तर - तुलसी के समय समाज के सभी वर्ग की आर्थिक दशा अत्यंत दयनीय थी। किसान व्यापारी, नट, सभी वर्ग बेरोज़गार थे। अकाल,अतिवृष्टि, अनावृष्टि इन सबसे समाज ग्रस्त था, व्यापार बन्द था। अत: गरीबी से लोग पीड़ित थे। तथा वह रावण की तरह आम जनता को कष्ट दे रही थी।

(2) पेट की आगि से क्या तात्पर्य है? उसकी तुलना बड़वागि से क्यों की गई है ?

उत्तर -पेट की आगि से तात्पर्य भूख से है। इसकी तुलना समुद्र की आग से की गई है क्योंकि यह उसी की तरह भयानक एवं विनाशकारी होती है।

(3) "धूत कहौ अवधूत कहो" छंद के आधार पर तुलसी की भक्ति भावना को स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर - इस छंद से कवि की अटूट राम भक्ति का पता चलता है। उनका कहना है कि समाज उसे धूर्त, पाखण्डी, राजपूत, संन्यासी कुछ भी कहे, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसे जाति या नाम की चिंता नहीं है। वह राम का गुलाम है तथा उनके प्रति पूर्णत: समर्पित है।

प्रश्न - (4) पेट भरने के लिए लोग क्या-क्या अनैतिक कार्य करते हैं ?

उत्तर- पेट भरने के लिए लोग धर्म-अधर्म व ऊँचे-नीचे सभी प्रकार के कार्य करते है ? विवशता के कारण वे अपनी संतानों को भी बेच देते हैं ?

(5) कवि ने समाज के किन-किन लोगों का वर्णन किया है? उनकी क्या परेशानी है ?
उत्तर - कवि ने मज़दूर,किसान-कुल,व्यापारी, भिखारी, भाट, नौकर, चोर, दूत, जादूगर आदि वर्गों का वर्णन किया है। वे भूख व गरीबी से परेशान हैं।

(6) कवि के अनुसार, पेट की आग कौन बुझा सकता है? यह आग कैसे है ?
उत्तर - कवि के अनुसार, पेट की आग को रामरूपी घनश्याम ही बुझा सकते हैं। यह आग समुद्र की आग से भी भयंकर है।

(7) उन कर्मों का उल्लेख कीजिए, जिन्हें लोग पेट की आग बुझाने के लिए करते हैं?

उत्तर - कुछ लोग पेट की आग बुझाने के लिए पढ़ते हैं तो कुछ अनेक तरह की कलाएँ सीखते हैं। कोई पर्वत पर चढ़ता है तो कोई घने जंगल में शिकार के पीछे भागता है। इस तरह वे अनेक छोटे-बड़े काम करते हैं।
(8) कवि ने समाज के किन-किन वर्गों के बारे में बताया है?
उत्तर- कवि ने किसान, भिखारी, व्यापारी, नौकरी करने वाले आदि वर्गों के बारे में बताया है कि ये सब बेरोजगारी से परेशान हैं।
(9) लोग चिंतित क्यों हैं तथा वे क्या सोच रहे हैं?
उत्तर - लोग बेरोजगारी से चिंतित हैं। वे सोच रहे हैं कि हम कहाँ जाएँ क्या करें?
(10) वेदों व पुराणों में क्या कहा गया है?

उत्तर - वेदों और पुराणों में कहा गया है कि जब-जब संकट आता है तब-तब प्रभु राम सभी पर कृपा करते हैं तथा सबका कष्ट दूर करते हैं।

(11) तुलसीदास ने दरिद्रता की तुलना किससे की हैं तथा क्यों?

उत्तर- तुलसीदास ने दरिद्रता की तुलना रावण से की है। दरिद्रतारूपी रावण ने पूरी दुनिया को दबोच लिया है तथा इसके कारण पाप बढ़ रहे हैं ।

(12) कवि किन पर व्यंग्य करता है और क्यों?

उत्तर - कवि धर्म, जाति, संप्रदाय के नाम पर राजनीति करने वाले ठेकेदारों पर व्यंग्य करता है, क्योंकि समाज के इन ठेकेदारों के व्यवहार से ऊँच-नीच, जाति-पाँति आदि के द्वारा समाज की सामाजिक समरसता कहीं खो गई है ।

(13) कवि अपने किस रुप पर गर्व करता है?

उत्तर - कवि स्वयं को रामभक्त कहने में गर्व का अनुभव करता है। वह स्वयं को उनका गुलाम कहता है तथा समाज की हँसी का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(14) कवि समाज से क्या चाहता हैं?

उत्तर- कवि समाज से कहता है कि समाज के लोग उसके बारे में जो कुछ कहना चाहें, कह सकते हैं। कवि पर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह किसी से कोई संबंध नहीं रखता।

(15) कवि अपना जीवन-निर्वाह किस प्रकार करना चाहता है?

उत्तर- कवि भिक्षावृत्ति से अपना जीवनयापन करना चाहता है। वह मस्जिद में निश्चित होकर सोता है। उसे किसी से कुछ लेना-देना नहीं है। वह अपने सभी कार्यों के लिए अपने आराध्य श्रीराम पर आश्रित है।

(16) तुलसीदास के कवित्त के आधार पर तत्कालीन समाज की आर्थिक विषमता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- तुलसीदास अपने युग के स्रष्टा एवं द्रष्टा थे। उन्होंने अपने युग की प्रत्येक स्थिति को गहराई से देखा एवं अनुभव किया था। लोगों के पास चूँकि धन की कमी थी इसलिए वे धन के लिए सभी प्रकार के अनैतिक कार्य करने लग गए थे। उन्होंने अपने बेटा-बेटी तक बेचने शुरू कर दिए ताकि कुछ पैसे मिल सकें। पेट की आग बुझाने के लिए हर अधर्मी और नीचा कार्य करने के लिए तैयार रहते थे। जब किसान के पास खेती न हो और व्यापारी के पास व्यापार न हो तो ऐसा होना स्वाभाविक है।

(17) पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है-तुलसी का यह काव्य-सत्य क्या इस समय का भी युग सत्य है? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।

उत्तर- पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है-तुलसी का यह काव्य-सत्य कुछ हद तक इस समय का भी युग-सत्य हो सकता है किंतु यदि आज व्यक्ति निष्ठा भाव, मेहनत से काम करे तो उसकी सभी समस्याओं का समाधान हो जाता है। निष्ठा और पुरुषार्थ-दोनों मिलकर ही मनुष्य के पेट की आग का शमन कर सकते हैं। दोनों में एक भी पक्ष असंतुलित होने पर वांछित फल नहीं मिलता। अत: पुरुषार्थ की महत्ता हर युग में रही है और आगे भी रहेगी।

(18) तुलसी ने यह कहने की ज़रूरत काँ ज़रूस्त क्यों समझी?
धूत कहौ, अवधूत कहौ, राजपूतु कहौ जोलहा लहा कहौ कोऊ
काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब काहूकी जाति बिगार न सोऊ।
इस सवैया में 'काहू के बेटा सों बेटी न ब्याहब' कहते तो सामाजिक अर्थ में क्या परिवर्तन आता ?

उत्तर-तुलसीदास जाति-पाँति से दूर थे। वे इनमें विश्वास नहीं रखते थे। उनके अनुसार व्यक्ति के कर्म ही उसकी जाति बनाते हैं। यदि वे काहू के बेटासों बेटी न ब्याहब कहते हैं तो उसका सामाजिक अर्थ यही होता कि मुझे बेटा या बेटी किसी में कोई अंतर नहीं दिखाई देता। यद्यपि मुझे बेटी या बेटा नहीं ब्याहने, लेकिन इसके बाद भी मैं बेटा-बेटी का कद्र करता हूँ।

4. धूत कहौ ….' वाले छंद में ऊपर से सरल व निरीह दिखाई पड़ने वाले तुलसी की भीतरी असलियत एक स्वाभिमानी भक्त हृदय की हैं। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं ?
अथवा
'धूत कहौ ……' 'छंद के आधार पर तुलसीदास के भक्त-हृदय की विशेषता पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर-तुलसीदास ने इस छंद में अपने स्वाभिमान को व्यक्त किया है। वे सच्चे रामभक्त हैं तथा उन्हीं के प्रति समर्पित हैं। उन्होंने किसी भी कीमत पर अपना स्वाभिमान कम नहीं होने दिया और एकनिष्ठ भाव से राम की अराधना की। समाज के कटाक्षों का उन पर कोई प्रभाव नहीं है। उनका यह कहना कि उन्हें किसी के साथ कोई वैवाहिक संबंध स्थापित नहीं करना, समाज के मुँह पर तमाचा है। वे किसी के आश्रय में भी नहीं रहते। वे भिक्षावृत्ति से अपना जीवन-निर्वाह करते हैं तथा मस्जिद में जाकर सो जाते हैं। वे किसी की परवाह नहीं करते तथा किसी से लेने-देने का व्यवहार नहीं रखते। वे बाहर से सीधे हैं, परंतु हृदय में स्वाभिमानी भाव को छिपाए हुए हैं।

लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप के लघूत्तरीय प्रश्न -

1. क्या-क्या बोलकर राम ने मूर्छित लक्ष्मण को जगाने की कोशिश की? राम ने किसप्रकार अपना विलाप प्रकट किया ?

उत्तर - अपने प्रिय अनुज को मूर्च्छित अवस्था में देखकर राम अपना देवत्व भूलकर साधारण मनुष्य के समान विलाप करके कहने लगे - दुनिया में बाकी सारी चीजें एक नहीं तो दूसरी मिलती है, पर लक्ष्मण के समान भाई तो सहोदर भी नहीं मिलता। अपनी पत्नी के लिए भाई के जीवन को संकट में डालने का अपयश मैं सह नहीं सकता । मेरी इस विरह-वेदना देखकर तुम उठते क्यों नहीं मेरे भाई , तुम्हारी ममता और प्रेम अब क्यों नही दिखा रहे हों ?

2. लक्ष्मण के बिना राम की अवस्था का वर्णन कवि ने किस प्रकार किया गया है?

उत्तर - पंख बिना जैसे पक्षी दीन हो उठता है। मणि बिना साँप, सूँड के बिना हाथी शक्तिहीन और निर्बल हो जाते है वैसे ही लक्ष्मण के बिना राम की अवस्था है। वह स्वयं को शक्तिहीन, निर्बल और दयनीय समझने लगे हैं।

3 शोकग्रस्त वातावरण में हनुमान के आगमन को किसप्रकार चित्रित किया गया है?

उत्तर - आधी रात बीतने पर भी जब कपिवर हनुमान नहीं लौटे तो राम सहित सभी वानर सेना निराश और चिंता में डूबी हुई थी पर जैसे ही हनुमान जी को पर्वत सहित संजीवनी लाते देखा, करुण रस पर वीर रस का आविर्भाव हो उठा। शोक के स्थान पर सब ओर उत्साह का वातावरण निर्मित हो गया।

4. नींद से जागकर कुंभकर्ण ने क्या पूछा?

उत्तर - कुंभकर्ण ने पूछा - ऐसी कौन सी विपत्ति आई है कि आपको मुझे जगाना पड़ा ? आपका मुँह इतना क्यों सूख रहा है ? आप इतने चिंतित किसलिए दिखाई दे रहे हैं ।

6. भ्रातृशोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर-लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। क्या आप इससे सहमत हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर- लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम को जिस तरह विलाप करते दिखाया गया है, वह ईश्वरीय लीला की बजाय आम व्यक्ति का विलाप अधिक लगता है। राम ने अनेक ऐसी बातें कही हैं जो आम व्यक्ति ही कहता है, जैसे-यदि मुझे तुम्हारे वियोग का पहले पता होता तो मैं तुम्हें अपने साथ नहीं लाता। मैं अयोध्या जाकर परिवारजनों को क्या मुँह दिखाऊँगा, माता को क्या जवाब दूँगा आदि। ये बातें ईश्वरीय व्यक्तित्व वाला नहीं कह सकता क्योंकि वह तो सब कुछ पहले से ही जानता है। उसे कार्यों का कारण व परिणाम भी पता होता है। वह इस तरह शोक भी नहीं व्यक्त करता। राम द्वारा लक्ष्मण के बिना खुद को अधूरा समझना आदि विचार भी आम व्यक्ति कर सकता है। इस तरह कवि ने राम को एक आम व्यक्ति की तरह प्रलाप करते हुए दिखाया है जो उसकी सच्ची मानवीय अनुभूति के अनुरूप ही है। हम इस बात से सहमत हैं कि यह विलाप राम की नर-लीला की अपेक्षा मानवीय अनुभूति अधिक है।

7. शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया हैं?

उत्तर- जब सभी लोग लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर करुणा और शोक में डूबे हुए थे तो हनुमान ने साहस किया। उन्होंने वैद्य द्वारा बताई गई संजीवनी लाने का प्रण किया। करुणा के इस वातावरण में हनुमान का यह प्रण सभी के मन में वीर रस का संचार कर गया। सभी वानरों और अन्य लोगों को लगने लगा कि अब लक्ष्मण की मूर्च्छा टूट जाएगी। इसीलिए कवि ने हनुमान के अवतरण को वीर रस का आविर्भाव बताया है।

8. जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गवाई।
बरु अपजस सहतेऊँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।

भाई के शोक में डूबे राम के इस प्रलाप-वचन में स्त्री के प्रति कैसा सामाजिक दृष्टिकोण संभावित हैं?

उत्तर- भाई के शोक में डूबे राम ने कहा कि मैं अवध क्या मुँह लेकर जाऊँगा? वहाँ लोग कहेंगे कि पत्नी के लिए प्रिय भाई को खो दिया। वे कहते हैं कि नारी की रक्षा न कर पाने का अपयश भी मैं सह लेता, किन्तु भाई की क्षति का अपयश सहना मुश्किल है। नारी की क्षति कोई विशेष क्षति नहीं है। राम के इस कथन से नारी की निम्न स्थिति का पता चलता है।उस समय पुरुष-प्रधान समाज था। नारी को पुरुष के बराबर अधिकार नहीं थे। उसे केवल उपभोग की चीज समझा जाता था। उसे असहाय व निर्बल समझकर उसके आत्मसम्मान को चोट पहुँचाई जाती थी।

3. रुबाइयाँ - फिराक गोरखपुरी

प्रतिपादय-

फ़िराक की रुबाइयाँ उनकी रचना 'गुले-नग्मा' से उद्धृत हैं। रुबाई उर्दू और फ़ारसी का एक छंद या लेखन शैली है। इसकी पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति में तुक मिलाया जाता है और तीसरी पंक्ति स्वतंत्र होती है। इन रुबाइयों में हिंदी का एक घरेलू रूप दिखता है। इन्हें पढ़ने से सूरदास के वात्सल्य वर्णन की याद आती है।

सार-

इस रचना में कवि ने वात्सल्य वर्णन किया है। माँ अपने बच्चे को आँगन में खड़ी होकर अपने हाथों में प्यार से झुला रही है। वह उसे बार-बार हवा में उछाल देती है जिसके कारण बच्चा खिलखिलाकर हँस उठता है। वह उसे साफ़ पानी से नहलाती है तथा उसके उलझे हुए बालों में कंघी करती है। बच्चा भी उसे प्यार से देखता है जब वह उसे कपड़े पहनाती है। दीवाली के अवसर पर शाम होते ही पुते व सजे हुए घर सुंदर लगते हैं। चीनी-मिट्टी के खिलौने बच्चों को खुश कर देते हैं। वह बच्चों के छोटे घर में दीपक जलाती है जिससे बच्चों के सुंदर चेहरों पर दमक आ जाती है। आसमान में चाँद देखकर बच्चा उसे लेने की जिद पकड़ लेता है। माँ उसे दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाती है और उसे कहती है कि दर्पण में चाँद उतर आया है। रक्षाबंधन एक मीठा बंधन है। रक्षाबंधन के कच्चे धागों पर बिजली के लच्छे हैं। सावन में रक्षाबंधन आता है। सावन का जो संबंध झीनी घटा से है, घटा का जो संबंध बिजली से है वहीं संबंध भाई का बहन से है।

लघुत्तरीय प्रश्न -

(1) कवि ने 'चाँद का टुकड़ा' किसे कहा है और क्यों?

उत्तर - कवि ने चाँद का टुकड़ा माँ की गोद में खेल रहे बच्चे को कहा है क्योंकि वह चाँद के समान ही सुंदर है।

(2) माँ के लिए कविता में किस शब्द का प्रयोग हुआ है और क्यों?

उत्तर - माँ के लिए कविता में 'गोद-भरी' शब्द का प्रयोग है क्योंकि माँ की गोद में बच्चा होने के कारण उसकी गोद भरी हुई है।

(3) बच्चे की हँसी का कारण क्या है? उसके गूंज का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर - बच्चे की हँसी का कारण है-माँ द्वारा बच्चे को हवा में लोका दिया जाना या उसे खुश करने के लिए हवा में उछालना। उसके गूंजने का तात्पर्य है-इससे बच्चा खुश होकर हँसता है और उसकी हँसी गूंजने लगती है।
(4) पहले रुबाई के काव्यांश के भाव को अपने शब्दों में चित्रित कीजिए।

उत्तर – काव्यांश का भाव यह है कि माँ अपने चाँद जैसी सुंदर संतान को गोद में लिए खड़ी है। वह उसे अपने हाथों पर झुलाती हुई हवा में उछाल देती है। इससे बच्चा खिलखिलाकर हँसने लगता है।
(5) तीसरे रुबाई का भाव स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर - शायर कहता है कि आज दीवाली की शाम है। इस अवसर पर घर रंग-रोगन से पुता हुआ तथा सजा हुआ है। घरों में मिठाई के नाम पर चीनी के बने हुए खिलौने आते हैं। रोशनी भी की जाती है। माँ के सुंदर मुँह पर हलकी चमक-सी आ जाती है। वह बच्चे के छोटे-से घर में दिया जलाती है।
(6) चौथे रुबाई में बच्चे के हठ की तुलना किससे की जा सकती है? कविता का भाव सौंदर्य स्पष्ट करें ।

उत्तर - इस रुबाई में बच्चे के हठ का जो वर्णन किया गया है, उसे देखकर अनायास ही सूरदास के कृष्ण की याद जाती है । शायर कहता है कि छोटा बच्चा आँगन में मचल रहा है। वह जिद लगाए हुए है कि उसे आकाश का चाँद चाहिए। उसका मन उस चाँद पर ललचा गया है। माँ उसे दर्पण में चाँद दिखाते हुए कहती है कि देख बेटा, दर्पण में चाँद उतर आया है। इस तरह वह बच्चे की जिद पूरी करती है।
(7) शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता हैं?

उत्तर –
रक्षाबंधन एक मीठा और पवित्र बंधन है। रक्षाबंधन के कच्चे धागों पर बिजली के लच्छे हैं। वास्तव में सावन का संबंध घटा से होता है। घटा का जो संबंध बिजली से है वही संबंध भाई का बहन से है। शायर यही भाव व्यंजित करना चाहता है कि यह बंधन पवित्र और बिजली की तरह चमकता रहे।

गजल -
प्रतिपादय-रुबाइयों की तरह फ़िराक की गजलों में भी हिंदी समाज और उर्दू शायरी की परंपरा भरपूर है। इस गजल में दर्द और पीड़ा के साथ-साथ शायर की ठसक भी अंतर्निहित है।

गजल के शेरों का भावार्थ -

नौरस गुंचे पंखडियों की नाजुक गिरहैं खोले हैं
या उड़ जाने को रंगो-बू गुलशन में पर तोले हैं।

भावार्थ - कवि कहता है कि बसंत ऋतु में नए रस से भरी कलियों की कोमल पंखुड़ियों की गाँठे खुल रही हैं। वे धीरे-धीरे फूल बनने की ओर अग्रसर हैं। ऐसा लगता है मानो रंग और सुगंध-दोनों आकाश में उड़ जाने के लिए पंख फड़फड़ा रहे हों। दूसरे शब्दों में, बाग में कलियाँ खिलते ही सुगंध फैल जाती है।

तारे आँखें झपकावें हैं जर्रा – जर्रा सोये हैं
तुम भी सुनो हो यारो। शब में सन्नाटे कुछ बोले हैं।

भावार्थ - शायर कहता है कि रात ढल रही है। अब तारे भी आँखें झपका रहे हैं। इस समय सृष्टि का कण-कण सो रहा है, शांत है। वह कहता है कि हे मित्रो! रात में पसरा यह सन्नाटा भी कुछ कह रहा है। यह भी अपनी वेदना व्यक्त कर रहा है।
हम हों या किस्मत हो हमारी दीनों को इक ही काम मिला
किस्मत हमको रो लेवे है हम किस्मत को रो ले हैं।
भावार्थ - शायर कहता है कि संसार में मेरी किस्मत और मैं खुद दोनों ही एक जैसे हैं। हम दोनों एक ही काम करते हैं। अभाव के लिए मैं अपनी किस्मत को दोषी मानता हूँ तथा इसलिए किस्मत पर रोता हूँ। किस्मत मेरी दशा को देखकर रोती है। वह शायद मेरी हीन कर्मनिष्ठा को देखकर झल्लाती है।

जो मुझको बदनाम करे हैं काश वे इतना सोच सकें
मेरा परदा खोले हैं या अपना परदा खोले हैं।

भावार्थ - शायर कहता है कि संसार में कुछ लोग उसे बदनाम करना चाहते हैं। ऐसे निंदकों के लिए कवि कामना करता है कि वे केवल यह बात समझ सकें कि वे मेरी जो बुराइयाँ संसार के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं, उससे खुद उनकी कमियाँ उजागर हो रही हैं। वे मेरा परदा खोलने की बजाय अपना परदा खोल रहे हैं।

ये कीमत भी अदा करे हैं हम बदुरुस्ती-ए-होशो-हवास
तेरा सौदा करने वाले दीवाना भी हो लें हैं।

भावार्थ - कवि कहता है कि जब पूरे विवेक के साथ हम प्रेम का वास्तविक मूल्य चुकाना चाहते हैं तो तुम्हारे प्रेम का सौदा करते हुए हम दीवाने हो उठते हैं क्योंकि प्रेम तो अमूल्य है और उसका सौदा नही किया जा सकता ।

तेरे गम का पासे-अदब हैं कुछ दुनिया का खयाल भी हैं
सबसे छिपा के दर्द के मारे चुपके-चुपके रो ले हैं।

भावार्थ - कवि अपनी प्रेमिका से कहता है कि मुझे तुम्हारे गम का पूरा ख्याल है। मैं तुम्हारी पीड़ा का सम्मान करता हूँ, परंतु मुझे संसार का भी ध्यान है। यदि मैं हर जगह तुम्हारे दिए दुख को सबके सामने गाता फिरूं तो दुनिया हमारे

प्रेम को बदनाम करेगी। इसलिए मैं इस पीड़ा को अपने हृदय में छिपा लेता हूँ और चुपचाप अकेले में रो लेता हूँ। आशय यह है कि प्रेमी अपने दुख को संसार के सामने प्रकट नहीं करते।

फितरत का कायम हैं तवाज़ुन आलमे हुस्नो-इश्क में भी
उसको उतना ही पाते हैं खुद को जितना खो ले हैं।

भावार्थ -कवि कहता है कि प्रेम और सौंदर्य के संसार में संतुलन कायम है। इसमें हम उतना ही प्रेम पा सकते हैं जितना हम स्वयं को खोते हैं। दूसरे शब्दों में, प्रेम में पहले स्वयं को मिटाना पड़ता है। जो व्यक्ति जितना अधिक समर्पण करता है, वह उतना ही प्रेम पाता है।

आबो-ताब अश्आर न पूछो तुम भी आँखें रक्खो हो ।
ये जगमग बैतों की दमक है या हम मोती रोले हैं।

भावार्थ - कवि कहता है कि तुम्हें मेरी शायरी में जो चमक-दमक दिखाई देती है, उस पर फ़िदा मत होओ। तुम्हें अपनी आँखें खुली रखनी चाहिए अर्थात ध्यान से देखना चाहिए। मेरे शेरों में जो चमक है, वह मेरे आँसुओं की देन है। दूसरे शब्दों में, कवि की पीड़ा से उसके काव्य में दर्द उभरकर आया है।

ऐसे में तू याद आए है अंजुमने-मय में रिंदों को
रात गए गर्दू पै फ़रिश्ते बाबे-गुनह जग खोले हँ।

भावार्थ -कवि कहता है कि हे प्रिय ! तुम वियोग के समय में इस तरीके से याद आते हो जैसे शराब की महफ़िल में शराबियों को शराब की याद आती है तथा जैसे आधी रात के समय देवदूत आकाश में संसार के पापों का अध्याय खोलते हैं।

सदके फिराक एजाज-सुखन के कैसे उड़ा ली ये आवाज
इन गजलों के परदों में तो 'मीर' की गजलें बोले हैं।

भावार्थ -फिराक कहते हैं कि उसकी गजलों पर लोग मुग्ध होकर कहते हैं कि फिराक, तुमने इतनी अच्छी शायरी कहाँ से सीख ली? इन गजलों के शब्दों से हमें 'मीर' कवि की गजलों की-सी समानता दिखाई पड़ती है। भाव यह है कि कवि की शायरी प्रसिद्ध कवि 'मीर' के समान उत्कृष्ट है।

कविता पर आधारित प्रश्न -

प्रश्न 1:खुद का परदा खोलने से क्या आशय है?

उत्तर –'खुद का परदा' खोलने का आशय है-अपनी कमियों या दोषों को स्वयं ही प्रकट करना। यदि कोई व्यक्ति दूसरे की निंदा करता है तो वह अपनी स्वयं की ही कमजोरी व्यक्त कर रहा होता है। कवि की बुराई करने वाला अपनी बुराइयों से भी परदा उठाता है।

प्रश्न 2: किस्मत हमको रो लेवे है हम किस्मत को रो लेवे हैं-इस पंक्ति में शायर की किस्मत के साथ तना-तनी का रिश्ता अभिव्यक्त हुआ है। चर्चा कीजिए।

उत्तर –ऊपर की पंक्ति को देखकर (पढ़कर) कहा जा सकता है कि शायर कभी भाग्यवादी नहीं रहा। वास्तव में किस्मत ने उसका कभी साथ नहीं दिया। वह इसलिए किस्मत पर भरोसा नहीं करता। जब कभी भाग्य की बात चलती है तो वह उसके नाम पर केवल रो लेता है।

प्रश्न 3: फिराक की गजल में प्रकृति को किस तरह चित्रित किया गया है?
उत्तर –फिराक की गजल के प्रथम दो शेर प्रकृति वर्णन को ही समर्पित हैं। प्रथम शेर में कलियों के खिलने की प्रक्रिया का भावपूर्ण वर्णन है। कवि इस शेर को नव रसों से आरंभ करता है। हर कोमल गाँठ के खुल जाने में कलियों का खिलना और दूसरा प्रतीकात्मक अर्थ भी है कि सब बंधनों से मुक्त हो जाना, संबंध सुधर जाना। इसके बाद कवि कलियों के खिलने से रंगों और सुगंध के फैल जाने की बात करता है। पाठक के समक्ष एक बिंब उभरता है। वह सौंदर्य और सुगंध दोनों को महसूस करता है।

प्रश्न 4:पाठ्यपुस्तक में संकलित फिराक गोरखपुरी की गजल का केंद्रीय भाव लिखिए।
उत्तर –फिराक गोरखपुरी ने 'गजल" में दर्द व कसक का वर्णन किया है। उसने बताया है कि लोगों ने उसे सदा ताने दिए हैं। उसकी किस्मत हमेशा उसे दगा देती रही। दुनिया में केवल गम ही था जो उसके पास रहा। उसे लगता है जैसे रात के सन्नाटे में कोई बोल रहा है। इश्क के बारे में शायर का कहना है कि इश्क वही पा सकता है जो अपना सब-कुछ दाँव पर लगा दे। कवि की गजलों पर मीर की गजलों का प्रभाव है। यह गज़ल इस तरह बोलती है जिसमें दर्द भी है, एक शायर की ठसक भी है और साथ ही है काव्यशिल्प की वह ऊँचाई, जो गजल की विशेषता मानी जाती है।

आरोह भाग -दो गद्यांश पाठों पर आधारित प्रश्न

महत्त्वपूर्ण बातें -

1. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा जारी पाठ्यक्रम के अनुसार द्वितीय सत्र हेतु निर्धारित पाठों को ही परीक्षा हेतु विशेष ध्यान रखें।

2. प्रश्नपत्र में आरोह भाग -2 के गद्य खण्ड से पहलवान की ढोलक, नमक, श्रम-विभाजन और जाति प्रथा तथा मेरी कल्पना का आदर्श समाज पाठ से ही प्रश्न पूछे जाएँगे ।

3.प्रश्न पत्र में गद्य खण्ड से तीन-तीन अंक के चार प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से किन्हीं तीन प्रश्नों का उत्तर लिखना है।

4. गद्य खण्ड से पूछे जाने वाले सभी प्रश्न निबंधात्मक प्रकार के होंगे, अतः उत्तर लगभग 80-100 शब्दों में देना होगा।

5. निबंधात्मक प्रश्नों का सारगर्भित उत्तर लेखन हेतु भाषा-शैली -वर्तनी संबंधी शुद्धता का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

6. उत्तर तर्क संगत एवं तथ्यगत होना चाहिए। अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए।

7. उत्तर प्रश्न के अनुरुप बिंदुवार अनुच्छेद बदलकर स्पष्ट लिखने का प्रयास करना चाहिए।

8. प्रश्नबैंक में दिए गए सभी पाठों के प्रतिपाद्ये एवं सारांश को बार-बार पढ़कर पाठ के मूल उद्देश्य को आत्मसात करें, जो उत्तर लेखन के लिए सहायक होते हैं।

9. प्रश्न पत्र हल करते समय प्रश्न को ध्यान से पढ़ना चाहिए ताकि उत्तर की पृष्ठभूमि हमें स्मरण हो जाए तब आप सार्थक उत्तर देने में समर्थ होंगे।

10. मन में प्रश्न के अनुरुप रुपरेखा तैयार करें और क्रमबद्ध उत्तर प्रस्तुत करें।

11. उत्तर के प्रमुख बातों को यथासंभव रेखांकित अवश्य करना चाहिए इससे उत्तर के विशिष्ट बिंदु परिलक्षित होते हैं।

पहलवान की ढोलक (फणीश्वर नाथ रेणु)

<u>प्रतिपादय</u>- पहलवान की ढोलक' कहानी व्यवस्था के बदलने के साथ लोक-कला और इसके कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने की कहानी है। राजा साहब की जगह नए राजकुमार का आकर जम जाना सिर्फ़ व्यक्तिगत सत्ता-परिवर्तन नहीं, बल्कि जमीनी पुरानी व्यवस्था के पूरी तरह उलट जाने और उस पर सभ्यता के नाम पर एकदम नयी व्यवस्था के आरोपित हो जाने का प्रतीक है। यह 'भारत' पर 'इंडिया' के छा जाने की समस्या है जो लुट्टन पहलवान को लोक-कलाकार के आसन से उठाकर पेट-भरने के लिए हाय-तौबा करने वाली निरीहता की भूमि पर पटक देती है।

ऐसी स्थिति में गाँव की गरीबी पहलवानी जैसे शौक को क्या पालती? फिर भी, पहलवान जीवट ढोल के बोल में अपने आपको न सिर्फ़ जिलाए रखता है, बल्कि भूख व महामारी से दम तोड़ रहे गाँव को मौत से लड़ने की ताकत भी प्रदान करता है। कहानी के अंत में भूख-महामारी की शक्ल में आए मौत के षड्यंत्र जब अजेय लुट्टन की भरी-पूरी पहलवानी को फटे ढोल की पोल में बदल देते हैं तो इस करुणा/त्रासदी में लुट्टन हमारे सामने कई सवाल छोड़ जाता है। वह पोल पुरानी व्यवस्था की है या नई व्यवस्था की ? क्या कला की प्रासंगिक व्यवस्था की मुखापेक्षी है अथवा उसका कोई स्वतंत्र मूल्य भी है? मनुष्यता की साधना और जीवन-सौंदर्य के लिए लोक-कलाओं को प्रासंगिक बनाए रखने हेतु हमारी क्या भूमिका हो सकती है? यह पाठ ऐसे कई प्रश्न छोड़ जाता है।

<u>सारांश</u>-सर्दी का मौसम था। गाँव में मलेरिया व हैजे का प्रकोप था। अमावस्या की ठंडी रात में निस्तब्धता थी। आकाश के तारे ही प्रकाश के स्रोत थे। सियारों व उल्लुओं की डरावनी आवाज से वातावरण की निस्तब्धता कभी-कभी भंग हो जाती थी। कभी किसी झोपड़ी से कराहने व कै करने की आवाज तथा कभी-कभी बच्चों

के रोने की आवाज आती थी। कुत्ते जाड़े के कारण राख के ढेर पर पड़े रहते थे। सायं या रात्रि को सब मिलकर रोते थे। इस सारे माहौल में पहलवान की ढोलक संध्या से प्रात:काल तक एक ही गति से बजती रहती थी। यह आवाज मृत-गाँव में संजीवनी शक्ति भरती थी।

गाँव में लुट्टन पहलवान प्रसिद्ध था। नौ वर्ष की आयु में वह अनाथ हो गया था। उसकी शादी हो चुकी थी। उसकी विधवा सास ने उसे पाला। वह गाय चराता, ताजा दूध पीता तथा कसरत करता था। गाँव के लोग उसकी सास को तंग किया करते थे। लुट्टन इनसे बदला लेना चाहता था। कसरत के कारण वह किशोरावस्था में ही पहलवान बन गया। एक बार लुट्टन श्यामनगर मेला में 'दंगल' देखने गया। पहलवानों की कुश्ती व दाँव-पेंच देखकर उसने 'शेर के बच्चे' को चुनौती दे डाली। 'शेर के बच्चे' का असली नाम था-चाँद सिंह। वह पहलवान बादल सिंह का शिष्य था। तीन दिन में उसने पंजाबी व पठान पहलवानों को हरा दिया था। वह अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए बीच-बीच में दहाड़ता फिरता था। श्यामनगर के दंगल व शिकार-प्रिय वृद्ध राजा साहब उसे दरबार में रखने की सोच रहे थे कि लुट्टन ने शेर के बच्चे को चुनौती दे दी।

दर्शक उसे पागल समझते थे। चाँद सिंह बाज की तरह लुट्टन पर टूट पड़ा, परंतु वह सफ़ाई से आक्रमण को सँभालकर उठ खड़ा हुआ। राजा ने लुट्टन को समझाया और कुश्ती से हटने को कहा, किंतु लुट्टन ने लड़ने की इजाजत माँगी। मैनेजर से लेकर सिपाहियों तक ने उसे समझाया, परंतु लुट्टन ने कहा कि इजाजत न मिली तो पत्थर पर माथा पटककर मर जाएगा। भीड़ में अधीरता थी। पंजाबी पहलवान लुट्टन पर गालियों की बौछार कर रहे थे। दर्शक उसे लड़ने की अनुमति देना चाहते थे। विवश होकर राजा साहब ने इजाजत दे दी। बाजे बजने लगे। लुट्टन का ढोल भी बजने लगा था। चाँद ने उसे कसकर दबा लिया था। वह उसे चित्त करने की कोशिश में था। लुट्टन के समर्थन में सिर्फ़ ढोल की आवाज थी, जबकि चाँद के पक्ष में राजमत व बहुमत था।

लुट्टन की आँखें बाहर निकल रही थीं, तभी ढोल की पतली आवाज सुनाई दी'धाक-धिना, तिरकट-तिना, धाक-धिना, तिरकट-तिना।' इसका अर्थ था-दाँव काटो, बाहर हो जाओ। लुट्टन ने दाँव काटी तथा लपक कर चाँद की गर्दन पकड़ ली। ढोल ने आवाज दी-चटाक्-चट्-धा अर्थात उठाकर पटक दे। लुट्टन ने दाँव व जोर लगाकर चाँद को जमीन पर दे मारा। ढोलक ने 'धिना-धिना, धिक-धिना।' कहा और लुट्टन ने चाँद सिंह को चारों खाने चित्त कर दिया। ढोलक ने 'वाह बहादुर!" की ध्वनि की तथा जनता ने माँ दुर्गा की, महावीर जी की, राजा की जय-जयकार की। लुट्टन ने सबसे पहले ढोलों को प्रणाम किया और फिर दौड़कर राजा साहब को गोद में उठा लिया। राजा साहब ने उसे दरबार में रख लिया।

पंजाबी पहलवानों की जमायत चाँद सिंह की आँखें पोंछ रही थी। राजा साहब ने लुट्टन को पुरस्कृत न करके अपने दरबार में सदा के लिए रख लिया। राजपंडित व मैनेजर ने लुट्टन का विरोध किया कि वह क्षत्रिय नहीं है। राजा साहब ने उनकी एक न सुनी। कुछ ही दिन में लुट्टन सिंह की कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। उसने सभी नामी पहलवानों को हराया। उसने 'काला खाँ' जैसे प्रसिद्ध पहलवान को भी हरा दिया। उसके बाद वह दरबार का दर्शनीय जीव बन गया। लुट्टन सिंह मेलों में घुटने तक लंबा चोंगा पहने, अस्त-व्यस्त पगड़ी बाँधकर मतवाले हाथी की तरह झूमता चलता। हलवाई के आग्रह पर दो सेर रसगुल्ला खाता तथा मुँह में आठ-दस पान एक साथ ठूँस लेता। वह बच्चों जैसे शौक रखता था। दंगल में उससे कोई लड़ने की हिम्मत नहीं करता। कोई करता तो उसे राजा साहब इजाजत नहीं देते थे। इस तरह पंद्रह वर्ष बीत गए। उसके दो

पुत्र हुए। उसकी सास पहले ही मर चुकी थी और पत्नी भी दो पहलवान पैदा करके स्वर्ग सिधार गई। दोनों लड़के पहलवान थे। दोनों का भरण-पोषण दरबार से हो रहा था।

पहलवान हर रोज सुबह उनसे कसरत करवाता। दिन में उन्हें सांसारिक ज्ञान भी देता। वह बताता कि उसका गुरु ढोल है, और कोई नहीं। अचानक राजा साहब स्वर्ग सिधार गए। नए राजकुमार ने विलायत से आकर राजकाज अपने हाथ में ले लिया। उसने पहलवानों की छुट्टी कर दी। लुट्टन ढोलक कंधे से लटकाकर अपने पुत्रों के साथ गाँव लौट आया। गाँव वालों ने उसकी झोपड़ी बना दी तथा वह गाँव के नौजवानों व चरवाहों को कुश्ती सिखाने लगा। खाने-पीने का खर्च गाँव वालों की तरफ से बँधा हुआ था। गरीबी के कारण धीरे-धीरे किसानों व मजदूरों के बच्चे स्कूल में आने बंद हो गए। अब वह अपने लड़कों को ही ढोल बजाकर कुश्ती सिखाता।

लड़के दिनभर मजदूरी करके कमाकर लाते थे। गाँव पर अचानक संकट आ गया। सूखे के कारण अन्न की कमी हो गई तथा फिर मलेरिया व हैजा फैल गया। घर के घर खाली हो गए। प्रतिदिन दो-तीन लाशें उठने लगीं। लोग एक-दूसरे को ढाँढ़स देते तथा शाम होते ही घरों में घुस जाते। लोग चुप रहने लगे। ऐसे समय में केवल पहलवान की ढोलक ही बजती थी जो गाँव के अर्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में संजीवनी शक्ति भरती थी। एक दिन पहलवान के दोनों बेटे भी चल बसे। पहलवान सारी रात ढोल पीटता रहा। दोनों पेट के बल पड़े हुए थे। उसने लंबी साँस लेकर कहा-दोनों बहादुर गिर पड़े। उस दिन उसने राजा श्यामानंद की दी हुई रेशमी जाँघिया पहनी और सारे शरीर पर मिट्टी मलकर थोड़ी कसरत की फिर दोनों पुत्रों को कंधों पर लादकर नदी में बहा आया। इस घटना के बाद गाँव वालों की हिम्मत टूट गई।

रात में फिर पहलवान की ढोलक बजने लगी तो लोगों की हिम्मत दुगुनी बढ़ गई। चार-पाँच दिनों के बाद एक रात ढोलक की आवाज नहीं सुनाई पड़ी। सुबह उसके शिष्यों ने देखा कि पहलवान की लाश 'चित' पड़ी है। शिष्यों ने बताया कि उसके गुरु ने कहा था कि उसके शरीर को चिता पर पेट के बल लिटाया जाए क्योंकि वह कभी 'चित' नहीं हुआ और चिता सुलगाने के समय ढोल जरूर बजा देना ।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1:कुश्ती के समय ढोल की आवाज और लुट्टन के दाँव-पेंच में क्या तालमेल था? पाठ में आए ध्वन्यात्मक शब्द और ढोल की आवाज़ आपके मन में कैसी ध्वनि पैदा करते हैं, उन्हें शब्द दीजिए।
उत्तर -कुश्ती के समय जब ढोल बजती थी तो लुट्टन की रगों में अजीब-सी हलचल पैदा हो जाती थी। उसका खून हर थाप पर उबलने लगता था। उसे ढोल की थाप प्रेरणा देती थी। उनके दाँव-पेंचों में अचानक फुरती और गति बढ़ जाती थी।

पाठ में कई ध्वन्यात्मक शब्दों का उल्लेख भी कहानीकार ने किया है। ये शब्द हमारे मन को रंजित करते हैं, साथ ही हमें यह प्रेरणा भी देते प्रतीत होते हैं। इन शब्दों से मन में कुछ करने की लालसा जोर मारने लगती है। परोक्ष रूप से ये शब्द शक्ति देते हैं।

प्रश्न 2:कहानी के किस-किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए?
उत्तर -कहानी में अनेक मोड़ ऐसे हैं जहाँ पर लुट्टन के जीवन में परिवर्तन आते हैं। वे निम्नलिखित हैं-

1. बचपन में नौ वर्ष की आयु में उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई और उसका पालन-पोषण उसकी विधवा सास ने किया। सास पर हुए अत्याचारों को देखकर बदला लेने के लिए वह पहलवानी करने लगा।
2. किशोरावस्था में उसने श्यामनगर दंगल में चाँद सिंह नामक पहलवान को हराया तथा 'राज-पहलवान' का दर्जा हासिल किया। उसने 'काला खाँ' जैसे प्रसिद्ध पहलवानों को जमीन सुंघा दी तथा अजेय पहलवान बन गया।
3. वह पंद्रह वर्ष तक राज-दरबार में रहा। उसने अपने दोनों बेटों को भी पहलवानी सिखाई। राजा साहब के अचानक स्वर्गवास के बाद नए राजा ने उसे दरबार से हटा दिया। वह गाँव लौट आया।
4. गाँव आकर उसने गाँव के बाहर अपना अखाड़ा बनाया तथा ग्रामीण युवकों को कुश्ती सिखाने लगा।
5. अकस्मात सूखा व महामारी से गाँव में हाहाकार मच गया। उसके दोनों बेटे भी इस महामारी की चपेट में आ गए। वह उन्हें कंधे पर लादकर नदी में बहा आया।
6. पुत्रों की मृत्यु के बाद वह कुछ दिन अकेला रहा और अंत में चल बसा।

प्रश्न 3:लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि 'मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं यही ढोल है'?

अथवा

'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार बताइए कि लुट्टन सिंह ढोल को अपना गुरु क्यों मानता था?

उत्तर -वास्तव में, लुट्न पहलवान का कोई गुरु नहीं था। जब पहली बार वह दंगल देखने गया तो वहाँ ढोल की थाप पर दांव-पेंच चल रहे थे। पहलवान ने इन थापों को ध्यान से सुना और उसमें अजीब-सी ऊर्जा भर गई। उसने चाँद सिंह को ललकारा और उसे चित कर दिया। ढोल की थाप ने उसे दंगल लड़ने की प्रेरणा दी और वह जीत गया। इसीलिए उसने कहा होगा कि उसका गुरु कोई पहलवान नहीं बल्कि यही ढोल है।

प्रश्न 4:गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल क्यों बजाता रहा?

उत्तर -गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल बजाता रहा। इसका कारण था-गाँव में निराशा का माहौल। महामारी व सूखे के कारण चारों तरफ मृत्यु का सन्नाटा था। घर-के-घर खाली हो गए थे। रात्रि की विभीषिका में चारों तरफ सन्नाटा होता था। ऐसे में उस विभीषिका को पहलवान की ढोलक ही चुनौती देती रहती थी। ढोल की आवाज से निराश लोगों के मन में उमंग जगती थी। उनमें जीवंतता भरती थी। वह लोगों को बताना चाहता था कि अंत तक जोश व उत्साह से लड़ते रहो।

प्रश्न 5:ढोलक की आवाज का पूरे गाँव पर क्या असर होता था?

अथवा

पहलवान की ढोलक की उठती-गिरती आवाज बीमारी से दम तोड़ रहे ग्रामवासियों में सजीवनी का संचार कैसे करती है? उत्तर दीजिए।

अथवा

पहलवान की ढोलक साधनहीन गाँव वालों के प्रति क्या भूमिका निभाती थी? कैसे?

उत्तर -ढोलक गाँववालों के लिए संजीवनी का काम करती थी। उनके मन में छाई उदासी को दूर करने में सहायक थी। उनके मन में जिजीविषा पैदा हो जाती थी। ढोल की हर थाप से उनके मन में चेतना आ जाती थी। बूढ़े, बच्चे जवानों की आँखों में अचानक चमक भर जाती थी। स्पंदनहीन और शक्तिहीन रगों में अचानक बिजली की तरह खून दौड़ने लगता था।

प्रश्न 6:महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूयस्ति के दृश्य में क्या अंतर होता था?
उत्तर -
सूर्योदय का दृश्य-महामारी फैलने की वजह गाँव में सूर्योदय होते ही लोग काँखते-कूंखते, कराहते अपने घरों से निकलकर अपने पड़ोसियों व आत्मीयों को ढाँडस देते थे। इस प्रकार उनके चेहरे पर चमक बनी रहती थी। वे बचे हुए लोगों को शोक न करने की बात कहते थे।
सूर्यास्त का दृश्य-सूर्यास्त होते ही सभी लोग अपनी-अपनी झोपड़ियों में घुस जाते थे। उस समय वे चूँ तक नहीं करते थे। उनके बोलने की शक्ति भी जाती रहती थी। यहाँ तक कि माताओं में दम तोड़ते पुत्र को अंतिम बार 'बेटा!" कहकर पुकारने की हिम्मत भी नहीं होती थी। ऐसे समय में पहलवान की ढोलक की आवाज रात्रि की विभीषिका को चुनौती देती रहती थी।

प्रश्न 7:कुश्ती या दंगल पहले लोगों और राजाओं का प्रिय शौक हुआ करता था। पहलवानों को राजा एवं लोगों के द्वारा विशेष सम्मान दिया जाता था-

(क) ऐसी स्थिति अब क्यों नहीं हैं?
(ख) इसकी जगह अब किन खेलों ने ले ली है?
(ग) कुश्ती को फिर से प्रिय खेल बनाने के लिए क्या-क्या काय किए जा सकते हैं?

उत्तर -(क) अब न तो राजा रहे और न ही वे पहलवान। वास्तव में पहलवानी बहुत खर्चीला खेल है। फिर इसके लिए अभ्यास की नियमित आवश्यकता है। आज कल लोगों के पास इतना समय नहीं कि वे दिन में 18-20 कसरत करें फिर बदले में मिलता भी कुछ नहीं है। केवल नाम के सहारे पेट नहीं पल सकता।

(ख) कुश्ती की जगह अब घुड़सवारी, फुटबाल, क्रिकेट, टेनिस, बॉलीबाल, बेसबॉल आदि खेलों ने ली है। इन खेलों में पैसा और शोहरत दोनों हैं। फिर खेल से रिटायर होने के बाद भी जीविका बनी रहती है।

(ग) कुश्ती को यदि फिर से प्रिय खेल बनाना है तो इसके लिए राज्य और केंद्र दोनों सरकारों को योजना बनानी चाहिए। व्यायामशालाएँ होनी चाहिए ताकि पहलवान कसरत कर सकें। अन्य खेलों की तरह ही जीतने वाले पहलवान को अच्छी खासी रकम इनाम में दी जानी चाहिए। यदि कोई पहलवान रिटायर हो जाए या दुर्घटना में उसे चोट लग जाए तो जीवनभर उसके लिए रोटी का प्रबंध किया जाना चाहिए।

प्रश्न 8:आशय स्पष्ट करें -

आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

उत्तर -लेखक अमावस्या की रात की विभीषिका का चित्रण करता है। महामारी के कारण गाँव में सन्नाटा है। ऐसी स्थिति में कोई भावुक तारा आकाश से टूटकर अपनी रोशनी गाँव वालों को देना चाहे तो भी उसकी चमक व शक्ति रास्ते में ही खत्म हो जाती है। तारे धरती से बहुत दूर हैं। भावुक तारे की असफलता पर अन्य तारे खिलखिलाकर हँसने लगते हैं। दूसरे शब्दों में, स्थिर तारे चमकते हुए लगते हैं तथा टूटा हुआ तारा समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 9:पाठ में अनेक स्थलों पर प्रकृति का मानवीकरण किया गया हैं। पाठ में से ऐसे अंश चुनिए और उनका आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -(क) "अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी।"

गाँव में छाई मायूसी को देखकर लगता था मानो अँधेरी रात भी रो रही है। ऐसा लगता था कि खाली पड़े आकाश में करुण कराहें वह अपने मन में दबा लेना चाहती हो ताकि गाँव का दुख कम हो सके।

(ख) "रात्रि अपने भीषणताओं के साथ चलती रही।"

यद्यपि गाँव का परिवेश भयानक और उदासी से भरपूर था। अतः रात भी इस मायूसी को समेटे अपनी गति से बीतती रही।

(ग) "रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी।" रात जो बहुत ही भयानक प्रतीत होती थी। अपने स्वाभाविक शोर से वह सभी को भयभीत कर देती थी। लेकिन पहलवान की ढोलक की थाप ने इस भयानकता को चुनौती दे डाली।

प्रश्न 10:पाठ में मलेरिया और हैजे से पीडित गाँव की दयनीय स्थिति को चित्रित किया गया है। आप ऐसी किसी अन्य आपद स्थिति की कल्पना करें और लिखें कि आप ऐसी स्थिति का सामना कैसे करेंगे/करेंगी?
उत्तर -पिछले दिनों हमारे प्रदेश के एक कस्बे में कोरोना का प्रकोप फैल गया। हमारे कस्बे में 7-8 हजार लोग रहते हैं। देखते ही देखते कोरोना का कहर पूरे कस्बे पर छाने लगा। लोगों को आनन-फानन में सरकारी और गैर-सरकारी अस्पताल में भर्ती कर दिया गया। शाम होते-होते यह कोरोना तेरह लोगों को लील चुका था जिनमें तीन बच्चे भी थे। ऐसी स्थिति से सामना होते ही हमने मरीजों को तुरंत नजदीक के अस्पताल में भर्ती करवाया। घर की साफ़-सफ़ाई के बारे में प्रत्येक व्यक्ति को बताया। साथ ही कुछ स्वयंसेवी संस्थाओं के लोगों से संपर्क किया। वे कुछ ही देर में हमारे गाँव (कस्बे) में आ गए। उन्होंने जी जान से लोगों की सेवा की। वे कई दिनों तक हमारे कस्बे में रहे। इस प्रकार हमने कोरोना से जान माल की ज्यादा क्षति नहीं होने दी।

प्रश्न 11:ढोलक की थाप मृत-गाँव में संजीवनी शक्ति मरती रहती थी-कला से जीवन के संबंध को ध्यान में रखते हुए चर्चा कीचिए।

उत्तर -कला का जीवन से प्रत्यक्ष संबंध है। संगीत व काव्य की श्रेष्ठता तो जग-प्रसिद्ध है। ये दोनों निराश मनों में उत्साह का संचार करते हैं। युद्ध में गीत व संगीत से जवानों में मर मिटने का जोश उत्पन्न हो जाता है। हास्य-व्यंग्य की कविताएँ सुनकर भ्रष्टाचारी तिलमिलाकर रह जाते हैं। इसी तरह पेंटिंग, नृत्य, अभिनय-ये तभी सफलता व प्रसिद्धि को प्राप्त करते हैं जब वे जीवन से जुड़ते हैं। संगीत पर हजारों व्यक्तियों को एक साथ झूमते देखा जा सकता है।

प्रश्न 12:चर्चा करें- कलाओं का अस्तित्व व्यवस्था का मोहताज नहीं हैं।

उत्तर -कला अपने बूते पर जीवित रहती है। कोई इसे मिटाना चाहे तो भी यह जीवित रहती है। फिर चाहे इसका रूप ही क्यों न बदल जाए। व्यवस्थाएँ कला को विकासशील बना सकती है लेकिन कला उन पर आश्रित बिलकुल नहीं। कई बार तो कला ही व्यवस्था को सुव्यवस्थित कर देती है। कला एक अमर और शाश्वत सत्य है जिसे निराश्रित नहीं किया जा सकता।

प्रश्न 13:'ढोल में तो जैसे पहलवान की जान बसी थी -'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए।

उत्तर -लुट्टन सिंह जब जवानी के जोश में आकर चाँद सिंह नामक मंजे हुए पहलवान को ललकार बैठा तो सारा जनसमूह, राजा और पहलवानों का समूह आदि की यह धारणा थी कि यह कच्चा किशोर जिसने कुश्ती कभी सीखी नहीं है, पहले दाँव में ही ढेर हो जाएगा। हालाँकि लुट्टन सिंह की नसों में बिजली और मन में जीत का जज्बा उबाल खा रहा था। उसे किसी की परवाह न थी। हाँ, ढोल की थाप में उसे एक-एक दाँव-पेंच का मार्गदर्शन जरूर मिल रहा था। उसी थाप का अनुसरण करते हुए उसने 'शेर के बच्चे' को खूब धोया, उठा-उठाकर पटका और हरा दिया। इस जीत में एकमात्र ढोल ही उसके साथ था। अत: जीतकर वह सबसे पहले ढोल के पास दौड़ा और उसे प्रणाम किया।

प्रश्न 14:'पहलवान की ढोलक' कहानी के प्रारंभ में चित्रित प्रकृति का स्वरूप कहानी की भयावहता की ओर संकेत करता है। इस कथन पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर -कहानी के प्रारंभ में प्रकृति का स्वरूप कहानी की भयावहता की ओर संकेत करता है। रात के भयावह वर्णन में बताया गया है कि चारों तरफ सन्नाटा है। सियारों का क्रंदन व उल्लू की डरावनी निस्तब्धता को कभी-कभी भंग कर देती थी। गाँव की झोपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाज सुनाई पड़ती थी। बच्चे भी कभी-कभी निर्बल कंठों से 'माँ-माँ' पुकारकर रो पड़ते थे। इससे रात्रि की निस्तब्धता में बाधा नहीं पड़ती थी।

प्रश्न 15:पहलवान लुट्टन के सुख-चैन भरे दिनों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर -पहलवान लुट्टन के सुख-चैन के दिन तब शुरू हुए जब उसने चाँद सिंह को कुश्ती में हराकर अपना नाम रोशन किया। राजा ने उसे दरबार में रखा। इससे उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। पौष्टिक भोजन

व राजा की स्नेह-दृष्टि मिलने से उसने सभी नामी पहलवानों को जमीन सुंघा दी। अब वह दर्शनीय जीव बन गया। मेलों में वह लंबा चोंगा पहनकर तथा अस्त-व्यस्त पगड़ी बाँधकर मस्त हाथी की तरह चलता था। हलवाई उसे मिठाई खिलाते थे।

प्रश्न 16:*लुट्टन के राज-पहलवान बन जाने* के बाद की दिनचर्या पर प्रकाश डालिए।

उत्तर -लुट्टन जब राज-पहलवान बन गया तो उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। पौष्टिक भोजन मिलने से वह राज-दरबार का दर्शनीय जीव बन गया। ठाकुरबाड़े के सामने पहलवान गरजता-'महावीर'। लोग समझ लेते पहलवान बोला। मेलों में वह घुटने तक लंबा चोंगा पहनकर तथा अस्त-व्यस्त पगड़ी बाँधकर मतवाले हाथी की तरह चलता था। मेले के दंगल में वह लंगोट पहनकर, शरीर पर मिट्टी मलकर स्वयं को साँड़ या भैंसा साबित करता रहता था।

प्रश्न 17:'पहलवान की ढोलक' कहानी का प्रतिपाद्य/उद्देश्य बताइए।

उत्तर - पहलवान की ढोलक' कहानी व्यवस्था के बदलने के साथ लोक-कला और इसके कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने की कहानी है। राजा साहब की जगह नए राजकुमार का आकर जम जाना सिर्फ़ व्यक्तिगत सत्ता-परिवर्तन नहीं, बल्कि जमीनी पुरानी व्यवस्था के पूरी तरह उलट जाने और उस पर सभ्यता के नाम पर एकदम नयी व्यवस्था के आरोपित हो जाने का प्रतीक है। यह 'भारत' पर 'इंडिया' के छा जाने की समस्या है जो लुट्टन पहलवान को लोक-कलाकार के आसन से उठाकर पेट-भरने के लिए हाय-तौबा करने वाली निरीहता की भूमि पर पटक देती है।

ऐसी स्थिति में गाँव की गरीबी पहलवानी जैसे शौक को क्या पालती? फिर भी, पहलवान जीवट ढोल के बोल में अपने आपको न सिर्फ़ जिलाए रखता है, बल्कि भूख व महामारी से दम तोड़ रहे गाँव को मौत से लड़ने की ताकत भी प्रदान करता है। कहानी के अंत में भूख-महामारी की शक्ल में आए मौत के षड्यंत्र जब अजेय लुट्टन की भरी-पूरी पहलवानी को फटे ढोल की पोल में बदल देते हैं तो इस करुणा/त्रासदी में लुट्टन हमारे सामने कई सवाल छोड़ जाता है। वह पोल पुरानी व्यवस्था की है या नई व्यवस्था की ? क्या कला की प्रासंगिक व्यवस्था की मुखापेक्षी है अथवा उसका कोई स्वतंत्र मूल्य भी है? मनुष्यता की साधना और जीवन-सौंदर्य के लिए लोक-कलाओं को प्रासंगिक बनाए रखने हेतु हमारी क्या भूमिका हो सकती है? यह पाठ ऐसे कई प्रश्न छोड़ जाता है।

प्रश्न 18:लुट्टन पहलवान का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर लुट्टन का चरित्र- चित्रण कीजिए।
उत्तर -लुट्टन पहलवान के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

1. **व्यक्तित्व**-लुट्टन सिंह लंबा-चौड़ा व ताकतवर व्यक्ति था। वह लंबा चोंगा पहनता था तथा अस्त-व्यस्त पगड़ी बाँधता था। वह इकलौती एवं अनाथ संतान था। अत: उसका पालन-पोषण उसकी विधवा सास ने किया था।
2. **भाग्यहीन**-लुट्टन का भाग्य शुरू से ही खराब था। बचपन में माता-पिता गुजर गए। पत्नी युवावस्था में ही चल बसी थी। उसके दोनों लड़के महामारी की भेंट चढ़ गए। इस प्रकार वह सदैव पीड़ित रहा।
3. **साहसी**-लुट्टन साहसी था। उसने अपने साहस के बल पर चाँद सिंह जैसे पहलवान को चुनौती दी तथा उसे हराया। उसने 'काला खाँ' जैसे पहलवान को भी चित कर दिया। महामारी में भी वह सारी रात ढोल बजाता था।
4. **संवेदनशील**-लुट्टन में संवेदना थी। वह अपनी सास पर हुए अत्याचारों को सहन नहीं कर सका और पहलवान बन गया। गाँव में महामारी के समय निराशा का माहौल था। ऐसे में वह रात में ढोल बजाकर लोगों में जीने के प्रति उत्साह पैदा करता था।

प्रश्न 19:'पहलवान की ढोलक' कहानी का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -'पहलवान की ढोलक' कहानी व्यवस्था के बदलने के साथ लोक-कला और इसके कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने को रेखांकित करती है। राजा साहब के मरते ही नयी व्यवस्था ने जन्म लिया। पुराने संबंध समाप्त कर दिए गए। पहलवानी जैसा लोकखेल समाप्त कर दिया गया। यह 'भारत' पर 'इंडिया' के छा जाने का प्रतीक है। यह व्यवस्था लोक-कलाकार को भूखा मरने पर मजबूर कर देती है।

प्रश्न 20:'लुट्टन को गाँव वापस क्यों आना पडा?

उत्तर -तत्कालीन राजा कुश्ती के शौकीन थे, परंतु उनकी मृत्यु के बाद विलायत से शिक्षा प्राप्त करके आए राजकुमार ने सत्ता संभाली। उन्होंने राजकाज से लेकर महल के तौर-तरीकों में भी परिवर्तन कर दिए। मनोरंजन के साधनों में कुश्ती का स्थान घुड़-दौड़ ने ले लिया। अत: पहलवानों पर राजकीय खर्च का बहाना बनाकर उन्हें जवाब दे दिया गया। इस कारण लुट्टन को गाँव वापस आना पड़ा।

प्रश्न 21:पहलवान के बेटों की मृत्यु पर गाँव वालों की हिम्मत क्यों टूट गई?

उत्तर -पहलवान के दोनों बेटे गाँव में फैली महामारी की चपेट में आकर चल बसे। इस घटना से गाँव वालों की हिम्मत टूट गई क्योंकि वे पहलवान को अपना सहारा मानते थे। अब उन्हें लगा कि पहलवान अंदर से टूट जाएगा तथा उनकी सहायता करने वाला कोई नहीं रहेगा।

प्रश्न 22:'पहलवान की ढोलक' कहानी में किस प्रकार पुरानी व्यवस्था और नई व्यवस्था के टकराव से उत्पन्न समस्या को व्यक्त किया गया है?लिखिए।

उत्तर -'पहलवान की ढोलक' कहानी में पुरानी व्यवस्था और नई व्यवस्था के टकराव से उत्पन्न समस्या यह है-

1. पुरानी व्यवस्था में कलाकारों और पहलवानों को राजाओं का आश्रय एवं संरक्षण प्राप्त था। वे शाही खर्च पर जीवित रहते थे, पर नई व्यवस्था में ऐसा न था।
2. पुरानी व्यवस्था में राज-दरबार और जनता द्वारा इन कलाकारों को मान-सम्मान दिया जाता था, पर नई व्यवस्था में उन्हें सम्मान देने का प्रचलन न रहा।

नमक (रजिया सज्जाद जहीर)

<u>प्रतिपादय-</u>'नमक' कहानी भारत-पाक विभाजन के बाद सरहद के दोनों तरफ के विस्थापित पुनर्वासित जनों के दिलों को टटोलती एक मार्मिक कहानी है। दिलों को टटोलने की इस कोशिश में अपने-पराये, देस-परदेस की कई प्रचलित धारणाओं पर सवाल खड़े किए गए हैं। विस्थापित होकर आई सिख बीवी आज भी लाहौर को ही अपना वतन मानती हैं और सौगात के तौर पर वहाँ का नमक लाए जाने की फ़रमाइश करती हैं। कस्टम अधिकारी नमक ले जाने की इजाजत देते हुए देहली को अपना वतन बताता है। इसी तरह भारतीय कस्टम अधिकारी सुनील दास गुप्ता का कहना है, "मेरा वतन ढाका है। राष्ट्र-राज्यों की नयी सीमा-रेखाएँ खींची जा चुकी हैं और मजहबी आधार पर लोग इन रेखाओं के इधर-उधर अपनी जगहें मुकर्रर कर चुके हैं, इसके बावजूद जमीन पर खींची गई रेखाएँ उनके अंतर्मन तक नहीं पहुँच पाई हैं। एक अनचाही, अप्रीतिकर बाहरी बाध्यता ने उन्हें अपने-अपने जन्म-स्थानों से विस्थापित तो कर दिया है, पर वह उनके दिलों पर कब्जा नहीं कर पाई है। नमक जैसी छोटी-सी चीज का सफ़र पहचान के इस मार्मिक पहलू को परत-दर-परत उघाड़ देता है। यह पहलू जब तक सरहद के आर-पार जीवित है, तब तक यह उम्मीद की जा सकती है कि राजनीतिक सरहदें एक दिन बेमानी हो जाएँगी।"

लाहौर के कस्टम अधिकारी का यह कथन बहुत सारगर्भित है-"उनको यह नमक देते वक्त मेरी तरफ से कहिएगा कि लाहौर अभी तक उनका वतन है और देहली मेरा, तो बाकी सब रफ्ता-रफ्ता ठीक हो जाएगा।"
<u>सारांश-</u>सफ़िया अपने पड़ोसी सिख-परिवार के यहाँ कीर्तन में गई थी। वहाँ एक सिख बीवी को देखकर वह हैरान हो गई क्योंकि उसकी आँखें, भारी भरकम जिस्म, वस्त्र आदि सब सफ़िया की माँ की तरह थे। सफ़िया की प्रेम-दृष्टि से प्रभावित होकर सिख बीवी ने उसके बारे में अपनी बहू से पूछा। जब उसे पता चला कि वह सुबह लाहौर जा रही है तो वह लेखिका के पास आकर लाहौर की बातें करने लगी। उसने बताया कि वह विभाजन के बाद भारत आई थी। उनका वतन तो जी लाहौर ही है। कीर्तन समाप्त होने के समय सफ़िया ने लाहौर से कुछ लाने के लिए पूछा। उसने हिचकिचाहट के साथ लाहौरी नमक लाने के लिए कहा।

वह लाहौर में पंद्रह दिन रुकी। उसके भाइयों ने खूब खातिरदारी की। मिलने वाले अनेक उपहार लेकर आए। उसके सामने सेर भर लाहौरी नमक की पुड़िया ले जाने की समस्या थी। पुलिस अफ़सर भाई ने इसे गैर-कानूनी बताया तथा व्यंग्य किया कि भारत के हिस्से में अधिक नमक आया था। लेखिका इस पर झुंझला गई तथा नमक ले जाने की जिद की। भाई ने कस्टम की जाँच का हवाला दिया तथा बेइज्जती होने का डर दिखाया। लेखिका उसे चोरी से नहीं ले जाना चाहती थी। वह प्रेम की चीज को शालीनता से ले जाना चाहती थी, परंतु भाई ने कानून की सख्ती के विषय में बताया। अंत में वह रोने लगी तथा भाई सिर हिलाकर चुप हो गया।

अगले दिन दो बजे दिन को उसे रवाना होना था। उसने सारी रात पैकिंग की। सारा सामान सूटकेस व बिस्तरबंद में आ गया। अब कीनू की टोकरी तथा नमक की पुड़िया ही शेष रह गई थीं। गुस्सा उतरने पर भावना के स्थान पर बुद्धि धीरे-धीरे हावी हो रही थी। उसने कीनुओं के ढेर के नीचे नमक की पोटली छिपा दी। आते समय उसने देखा था कि भारत से केले जा रहे थे तथा पाकिस्तान से कीनू आ रहे थे। कोई जाँच नहीं हो रही थी। इस तरह नमक सुरक्षित पहुँच जाएगा। फिर वह सो गई। वह लाहौर के सौंदर्य, माहौल व सगे-संबंधियों के बारे में स्वप्न देख रही थी। यहाँ उसके तीन सगे भाई, चाहने वाले दोस्त, नन्हे-नन्हे भतीजे-भतीजियाँ-सब याद आ रहे थे। कल वह लाहौर से जा रही थी। शायद फिर वह न आ सके। फिर उसे इकबाल का मकबरा, लाहौर का किला, सूरज की डूबती किरणें आदि दिखाई दीं।

अचानक उसकी आँखें खुल गई क्योंकि उसका हाथ कीनुओं की टोकरी पर जा पड़ा था। उसके दोस्त ने कहा था कि यह हिंदुस्तान व पाकिस्तान की एकता का मेवा है। वह फर्स्ट क्लास के वेटिंग रूम में बैठी थी। उसके भाई ने उसे दिल्ली तक का टिकट खरीद दिया था। वह सोच रही थी कि आस-पास टहल रहे लोगों में सिर्फ़ वही जानती थी कि टोकरी की तह में कीनुओं के नीचे नमक की पुड़िया है। जब सामान कस्टम जाँच के लिए जाने लगा तो उसने फैसला किया कि मुहब्बत का यह तोहफ़ा वह चोरी से नहीं ले जाएगी। उसने जल्दी से पुड़िया निकाली और हैंडबैग में रख ली। जब सामान जाँच के बाद रेल की तरफ़ चला तो वह एक कस्टम अफ़सर की तरफ बढ़ी। वह लंबा, पतला, खिचड़ी बालों वाला था। उसने उसके वतन के बारे में पूछा। उसने हैरान होकर अपना वतन दिल्ली बताया। लेखिका ने हैंडबैग मेज पर रख दिया और नमक की पुड़िया निकालकर उसके सामने रख दी तथा उसे सब कुछ बता दिया।

सारी बातें सुनकर उसने पुड़िया को अच्छी तरह लपेटकर स्वयं सफ़िया के बैग में रख दिया तथा कहा कि मुहब्बत तो कस्टम से इस तरह गुजर जाती है कि कानून हैरान रह जाता है। उसने जामा मस्जिद की सीढ़ियों को सलाम देने को कहा तथा सिख बीवी को भी संदेश देने को कहा-"लाहौर अभी तक उनका वतन है और देहली मेरा, तो बाकी सब रफ्ता-रफ़्ता ठीक हो जाएगा।"

सफ़िया कस्टम के जंगले से निकलकर दूसरे प्लेटफ़ॉर्म पर आ गई। यहाँ सभी ने उसे भावपूर्ण विदाई दी। अटारी में भारतीय पुलिस रेल में चढ़ी। एक जैसी भाषा, सूरत, वस्त्र, लहजा, अंदाज व गालियों आदि के कारण लाहौर खत्म होने व अमृतसर शुरू होने का पता नहीं चला। अमृतसर में कस्टम की जाँच शुरू हुई तो वह कस्टम अफ़सर के पास पहुँची तथा अपने पास नमक होने की पूरी बात कह सुनाई। अफ़सर ने उसे साथ चलने को कहा। एक कमरे में जाकर उसने उसे बैठाया तथा दो चाय लाने का ऑर्डर दिया। उसने मेज की दराज से एक किताब निकाली। उसके पहले पन्ने पर लिखा था-"शमसुल इसलाम की तरफ से सुनील दास गुप्ता को प्यार के साथ, ढाका 1946 ।"

लेखिका के पूछने पर उसने अपने वतन का नाम ढाका बताया। विभाजन के समय वह ढाका में था। जिस दिन वह भारत आ रहा था, उससे एक वर्ष पहले उसकी सालगिरह पर उसके दोस्त ने यह किताब दी थी। फिर वे कलकत्ता में रहकर पढ़े तथा नौकरी करने लगे। उन्होंने बताया कि हम वतन आते-जाते थे। सफ़िया 'वतन' की बात पर हैरान थी। कस्टम अफ़सर ने कहा कि अब वहाँ भी कस्टम हो गया। उसने अपने वतन की 'डाभ' की प्रशंसा की। चलते वक्त उसने पुड़िया सफ़िया के बैग में रख दी तथा खुद उस बैग को उठाकर आगे-आगे चलने लगा। जब सफ़िया अमृतसर के पुल पर चढ़ रही थी तब वह पुल की सबसे निचली सीढ़ी

के पास सिर झुकाए चुपचाप खड़ा था। लेखिका सोच रही थी कि किसका वतन कहाँ है? वह जो इस कस्टम के इस तरफ़ है या उस तरफ़ ?

<u>प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न 1:सफ़िया के भाई ने नमक की पुड़िया ले जाने से क्यों मना कर दिया?

अथवा

नमक की पुड़िया को लेकर सफ़िया के मन में क्या द्ववद्व था? सफ़िया के भाई ने नमक ले जाने के लिए मना क्यों कर दिया था?

उत्तर- सफिया के सामने सेर भर लाहौरी नमक की पुड़िया ले जाने की समस्या थी। वह उसे कैसे ले जाए? सफ़िया का भाई एक बहुत बड़ा पुलिस अफ़सर था। वह कानून-कायदों से भली-भाँति परिचित था। वह जानता था कि लाहौरी नमक ले जाना सर्वथा गैरकानूनी है। यदि कोई व्यक्ति दूसरे देश में इसे ले जाए तो यह कानून के खिलाफ किया हुआ कार्य बन जाता है। इसलिए उसने अपनी बहन सफ़िया को नमक की पुड़िया ले जाने से मना कर दिया। वह नहीं चाहता था कि उसकी बहन कस्टम कार्यों की जाँच में पकड़ी जाए।

प्रश्न 2:*नमक की पुड़िया ले जानेके संबंध में सफ़िया के मन काद्वंद्व स्पष्ट कीजिए।*

अथवा

नमक की पुड़िया ले जाने, न ले जाने के बारे में सफ़िया के मन का द्ववद्व स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-नमक की पुड़िया ले जाने के संबंध में सफ़िया के मन में यह द्वंद्व था कि वह नमक की पुड़िया को चोरी से छिपाकर ले जाए या कस्टम अधिकारियों को दिखाकर ले जाए। पहले वह इसे कीनुओं की टोकरी में सबसे नीचे रखकर कीनुओं से ढँक लेती है। फिर वह निर्णय करती है कि वह प्यार के इस तोहफ़े को चोरी से नहीं ले जाएगी। वह नमक की पुड़िया को कस्टम वालों को दिखाएगी।

प्रश्न 3:जब सफ़िया अमृतसर पुल पर चढ़ रही थी तो कस्टम आफिसर निचली सीढ़ी के पास सिर झुकाए चुपचाप क्यों खड़े थे?

उत्तर-कस्टम ऑफ़िसर जो कि बंगाली था उसे सफ़िया की संवेदनाएँ बहुत अच्छी लगीं। उसे महसूस हुआ कि कानून बाद में है। इंसानियत पहले। कानून को इंसानियत के आगे झुकना ही पड़ता है। सफ़िया की ईमानदारी और वायदे को देखकर कस्टम अधिकारी ने अपना सिर झुका लिया। उसे सफ़िया द्वारा किए गए कार्य पर नाज था। वह सिर झुकाकर अपनी श्रद्धा सफ़िया के प्रति व्यक्त करना चाहता था।

प्रश्न 4:लाहौर अभी तक उनका वतन है और **देहली मेरा** या **मेरा वतन ढाका** है जैसे उदगार किन सामाजिक यथार्थ का संकेत करते हैं?

उत्तर- लाहौर अभी तक उनका वतन है और **देहली मेरा** या **मेरा वतन ढाका** है -ये कथन उस सामाजिक यथार्थ का संकेत करते हैं कि राजनीतिक तौर पर लोग भले ही विस्थापित हो जाते हों, परंतु भावनात्मक लगाव मातृभूमि से ही रहता है। राजनीतिक बँटवारे लोगों के दिलों को बाँट नहीं पाते। वे लोगों को अलग रहने पर मजबूर कर सकते हैं, परंतु उनका प्रेम अंतिम समय तक मातृभूमि से रहता ही है।

प्रश्न 5:नमक ले जाने के बारे में सफ़िया के मन में उठे द्वंद्व के आधार पर उसकी चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर-नमक ले जाने की बात सोचकर सफ़िया द्वंद्वग्रस्त हो जाती है। उसके भाई ने जब उसे यह बताया कि नमक ले जाना गैरकानूनी है तो वह और अधिक परेशान हो जाती है। चूंकि वह आत्मविश्वास से भरी हुई है इसलिए वह मन में ठान लेती है कि नमक पाकर ही रहेगी। उसमें किसी भी प्रकार का दुराव या छिपाव नहीं है। वह देश प्रेमिका है। दूसरों की भावनाओं का ख्याल वह रखती है, उसमें भावुकता है इसी कारण भाई जब नमक ले जाने से मना कर देता है तो वह रो देती है।

प्रश्न 6:" मानचित्र पर एक लकीर खींच देने भर से ज़मीन और जनता बँट नहीं जाती हैं। " -उचित तर्कों व उदाहरणों के जरिये इसकी पुष्टि करें।

उत्तर-मानचित्र पर एक लकीर खींच देने भर से जमीन और जनता बँट नहीं जाती है।-लेखिका का यह कथन पूर्णतया सत्य है। राजनीतिक कारणों से मानचित्र पर लकीर खींचकर देश को दो भागों में बाँट दिया जाता है। इससे जमीन व जनता को अलग-अलग देश का लेवल मिल जाता है, परंतु यह कार्य जनता की भावनाओं को नहीं बाँट पाता। उनका मन अंत तक अपनी जन्मभूमि से जुड़ा रहता है। पुरानी यादें उन्हें हर समय घेरे रहती हैं। जैसे ही उन्हें मौका मिलता है, वे प्रत्यक्ष तौर पर उभरकर सामने आ जाती हैं। 'नमक' कहानी में भी सिख बीवी लाहौर को भुला नहीं पातीं और 'नमक' जैसी साधारण चीज वहाँ से लाने की बात कहती हैं। कस्टम अधिकारी नौकरी अलग देश में कर रहे हैं, परंतु अपना वतन जन्म-प्रदेश को ही मानते हैं। सभी का अपनी जन्म-स्थली के प्रति लगाव है।

प्रश्न 7:" नमक " कहानी में भारत व पाक की जनता के आरोपित भेदभावों के बीच मुहब्बत का नमकीन स्वाद घुला हुआ हैं, कैसे?

उत्तर- दोनों देशों को यद्यपि भूगोल ने विभाजित कर दिया है लेकिन लोगों में वही मुहब्बत अब भी समाई हुई है। यद्यपि यह आरोप लगाया जाता है कि इन देशों के बीच नफ़रत है लेकिन ऐसा नहीं है। इन दोनों के बीच रिश्ते मधुर और पवित्र हैं। इनमें मुहब्बत ही वह डोर है जो एक-दूसरे को बाँधे हुए है। मुहब्बत का नमकीन स्वाद इनके रिश्तों में घुला हुआ है। सिख बीबी, बंगाली अधिकारी और सफ़िया के माध्यम से कहानीकार ने इसी बात को सिद्ध किया है।

प्रश्न 8:क्या सब कानून हुकूमत के ही होते हैं, कुछ मुहब्बत, मुरौवत, आदमियत, इंसानियत के नहीं होते? क्यों कहा गया?

उत्तर-सफ़िया का भाई पुलिस अफ़सर है। जब उसने लाहौर का नमक भारत ले जाने की बात अपने भाई को बताई तो उसने यह कार्य गैर-कानूनी बताया। उसने यह भी बताया कि पाकिस्तान और भारत के बीच नमक का व्यापार प्रतिबंधित है। तब लेखिका ने यह तर्क दिया कि क्या सब कानून हुकूमत के ही होते हैं, कुछ मुहब्बत, मुरौवत, आदमियत, इंसानियत के नहीं होते ?

प्रश्न 9:भावना के स्थान पर बुद्धि धीरे-धीरे उम पर हावी हो रही थी?

उत्तर-जब भावनाओं से काम नहीं चला तो सफ़िया ने दिमाग से काम लिया। उसने बुद्धि से नमक हिंदुस्तान ले जाने की युक्ति सोची। वह निडर हो गई और निर्णय लिया कि मैं नमक अवश्य ले जाऊँगी।

प्रश्न 10:मुहब्बत तो कस्टम से इस तरह गुजर जाती हैं कि कानून हैरान रह जाता है।

उत्तर-पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी सफ़िया से कहता है कि मुहब्बत के सामने कस्टम वाले भी लाचार हैं। उनके सम्मुख कानून निष्प्रभावी हो जाते हैं। मुहब्बत कानून को धत्ता बताकर आगे चली जाती है। वह स्वयं नमक की पुड़िया को लेखिका के बैग में रखकर उपर्युक्त वाक्य कहता है।

प्रश्न 11:हमारी ज़मीन, हमारे पानी का मज़ा ही कुछ और है।
उत्तर-यह बात सफ़िया को ईस्ट बंगाल का कस्टम अधिकारी कहता है। वह बताता है कि उसके देश की ज़मीन बहुत ऊपजाऊ है। यहाँ का पानी मीठा और ठंडा है। मेरे देश की मिट्टी बहुत कुछ पैदा करती है। वहाँ चारों ओर खुशहाली बसी हुई

समझाइए तो ज़रा

प्रश्न 12:फिर पलकों से कुछ सितारे टूटकर दूधिया आँचल में समा जाते हैं।

उत्तर-सिख बीवी को लाहौर की याद आ रही थी। वह लेखिका को वहाँ के जीवन, दिनचर्या आदि के बारे में बताती हुई यादों में खो जाती है। भावुकता के कारण उसकी आँखों से आँसू निकलकर उसके सफ़ेद मलमल के दुपट्टे पर टपक जाते हैं।

प्रश्न 13:किसका वतन कहाँ हैं-वह जो कस्टम के इस तरफ हैं या उस तरफ।

उत्तर-जब सफ़िया अमृतसर स्टेशन पर पहुँची तो वह यह बात सोचने लगती है। उसे समझ में नहीं आता कि वतन कहाँ है अर्थात् पाकिस्तान अथवा हिंदुस्तान कहाँ है। ये दोनों देश तो एक हैं केवल कस्टम ने इन दोनों को बाँटा हुआ है। मेरी समझ में तो यही आता है।

प्रश्न 14:'नमक' कहानी में हिंदुस्तान-पाकिस्तान में रहने वाले लोगों की भावनाओं, संवेदनाओं को उभारा गया है। वर्तमान संदर्भ में इन संवेदनाओं की स्थिति को तर्क सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-लोगों की भावनाएँ और संवेदनाएँ आज भी वैसी ही हैं जैसी 60-65 वर्ष पहले थीं। लोग आज भी उतनी ही मुहब्बत एक-दूसरे मुल्कों के बाशिंदों की करते हैं। आज हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनों ही देशों ने आपसी भाईचारे को बढ़ाने और कायम रखने के लिए नई-नई योजनाएँ बनाए हैं। बस, रेल यातायात पुनः बहाल कर दिया है। जो दोनों देशों की एकता को प्रस्तुत करता है। दोनों मुल्कों के लोग आ जा सकते हैं। आपसी दुख दर्द बाँटते हैं। पिछले कुछ वर्षों में तो दोनों के बीच रिश्ते अधिक मजबूत हुए हैं। दोनों में आपसी सौहार्द बढ़ा है।

प्रश्न 15:सफ़िया की मनःस्थिति को कहानी में एक विशिष्ट संदर्भ में अलग तरह से स्पष्ट किया गया है। अगर आप सफ़िया की जगह होते/होतीं तो क्या आपकी मनःस्थिति भी वैसी ही होती? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-अगर मैं सफ़िया की जगह होता तो मेरी मन:स्थिति भी सफ़िया की तरह ही होती। सफ़िया लेखिका है, अत: वह अपनी भावनाओं को साहित्यिक रूप से व्यक्त कर सकी है, परंतु मैं सीधे तौर पर अपनी भावनाएँ जता देता। मैं सिख बीवी को माँ का दर्जा दे देता। दूसरे, लाहौर से नमक लाने के लिए मैं हर संभव तरीके का प्रयोग करता।

प्रश्न 16:भारत-पाकिस्तान के आपसी संबधों को सुधारने के लिए दोनों सरकारें प्रयासरत हैं। व्यक्तिगत तौर पर आप इसमें क्या योगदान दे सकते/सकती हैं?

उत्तर-हम व्यक्तिगत तौर पर कला और साहित्य से संबंधित गोष्ठियाँ, सेमिनार आयोजित कर सकते हैं। अपनी भावनाओं को कविता या लेखों के माध्यम से व्यक्त कर इन दोनों के संबंधों को सुधार सकते हैं। हम उनकी भावनाओं को समझकर यथासंभव उनकी सहायता कर सकते हैं ताकि भाईचारे और सौहार्द का माहौल कायम हो सके।

प्रश्न 17:लेखिका ने विभाजन से उपजी विस्थापन की समस्या का चित्रण करते हुए सफ़िया व सिख बीवी के माध्यम से यह भी परोक्ष रूप से संकेत किया है कि इसमें भी विवाह की रीति के कारण स्त्री सबसे अधिक विस्थापित हैं । क्या आप इससे सहमत हैं?

उत्तर-कहानी में ऐसा संकेत कहीं नहीं है कि विभाजन के कारण हुए विस्थापन से नारी ही अधिक विस्थापित हुई है। सिख बीवी व सफ़िया परिवार के साथ ही विस्थापित हुई हैं। यही स्थिति पाकिस्तान में भी है। दूसरी बात इस रूप में सही है कि विवाह के कारण स्त्री ही सबसे अधिक विस्थापित होती है। इस विस्थापन के कारण उसका अपनी जन्मभूमि से लगाव कभी कम नहीं होता। स्मृतियाँ उसे घेरे रहती हैं।

प्रश्न 18:विभाजन के अनेक स्वरूपों में बँटी जनता को मिलाने की अनेक भूमियाँ हो सकती हैं-**रक्त संबंध, विज्ञान, साहित्य व कला।** इनमें से कौन सबसे ताकतवर हैं और क्यों?

उत्तर-जनता को मिलाने की यद्यपि अनेक भूमिकाएँ हो सकती हैं लेकिन इनमें साहित्य और कला की भूमिका सबसे ज्यादा ताकतवर है क्योंकि इन दोनों क्षेत्रों से हम एक-दूसरे तक अपनी भावनाएँ अधिक आसानी से पहुँचा सकते हैं। साहित्य से एक-दूसरे की संस्कृति रहन-सहन, आचार-व्यवहार का पता चल जाता है। कला के माध्यम से हम उनके अंतर्मन में झाँक सकते हैं। भारतीय साहित्य और कला पिछले कई वर्षों से पाकिस्तान को रुचिकर लगता रहा है। यही बात पाकिस्तानी साहित्य के संदर्भ में भी कहीं जा सकती है।

प्रश्न 19:मान लीजिए आप अपने मित्र के पास विदेश जा रहे/रही हैं।आप सौगात के तौर पर भारत की कौन-सी चीज़ ले जाना पसंद करेंगे/करेंगी और क्यों?

उत्तर-मैं अपने मित्र के पास विदेश जा रहा हूँ। सौगात के तौर मैं भारत से निम्नलिखित चीज़ें ले जाना पसंद करूँगा ताकि मेरे मित्र खुश हो और हमारे बीच प्रगाढ़ मित्रता का सम्बंध कायम रहे -

(i) ताजमहल की प्रतिकृति।

(ii) अच्छे साहित्यकारों की रचनाएँ।

(iii) रामायण।

(iv) मित्र की पसंद की खाने की चीजें।

प्रश्न 20:*सिख बीवी के प्रति सफ़िया के आकर्षण का क्या कारण था? 'नमक' पाठ के आधार पर बताइए।*
उत्तर-जब सफ़िया ने सिख बीवी को देखा, तो वह हैरान रह गई। सिख बीवी का वैसा ही चेहरा था, जैसा सफ़िया की माँ का था। बिलकुल वही कद, वही भारी शरीर, वही छोटी-छोटी चमकदार आँखें, जिनमें नेकी, मुहब्बत और रहमदिली की रोशनी जगमगा रही थी। चेहरा खुली किताब जैसा था। बीवी ने वैसी ही सफ़ेद मलमल का दुपट्टा ओढ़ रखा था, जैसा सफ़िया की अम्मा मुहर्रम में ओढ़ा करती थीं, इसीलिए सफ़िया बीवी की तरफ बार-बार बड़े प्यार से देखने लगी। उसकी माँ तो बरसों पहले मर चुकी थीं, पर यह कौन? उसकी माँ जैसी हैं, इतनी समानता कैसे है? यही सोचकर सफ़िया उनके प्रति आकर्षित हुई।

प्रश्न 21:*लाहौर और अमृतसर के कस्टम अधिकारियों ने सफ़िया के साथ कैसा व्यवहार किया?*
उत्तर- ***लाहौर और अमृतसर*** के कस्टम अधिकारियों ने सफ़िया और उसकी नमक रूपी सद्भावना का सम्मान किया। केवल सम्मान ही नहीं, उसे यह भी जानकारी मिली कि उनमें से एक देहली को अपना वतन मानते हैं और दूसरे ढाका को अपना वतन कहते हैं। उन दोनों ने सफ़िया के प्रति पूरा सद्भाव दिखाया, कानून का उल्लंघन करके भी उसे नमक ले जाने दिया। अमृतसर वाले सुनील दास गुप्त तो उसका थैला उठाकर चले और उसके पुल पार करने तक वहीं पर खड़े रहे। उन अधिकारियों ने यह साबित कर दिया कि कोई भी कानून या सरहद प्रेम से ऊपर नहीं है।

प्रश्न 22:*नमक की पुड़िया के सबध में सफ़िया के मन में क्या द्वद्व था? उसका क्या समाधान निकला?*
उत्तर-नमक की पुड़िया ले जाने के संबंध में सफ़िया के मन में यह द्वंद्व था कि वह नमक की पुड़िया को चोरी से छिपाकर ले जाए या कस्टम अधिकारियों को दिखाकर ले जाए। पहले वह इसे कीनुओं की टोकरी में सबसे नीचे रखकर कीनुओं से ढँक लेती है। फिर वह निर्णय करती है कि वह प्यार के तोहफ़े को चोरी से नहीं ले जाएगी। वह नमक की पुड़िया को कस्टम वालों को दिखाएगी।

प्रश्न 23:*सफ़िया को अटारी में समझ ही नहीं आया कि कहाँ लाहौर खत्म हुआ और किस जगह अमृतसर शुरू हो गया, ऐसा क्यों?*

उत्तर-अमृतसर व लाहौर दोनों की सीमाएँ साथ लगती हैं। दोनों की भौगोलिक संरचना एक जैसी है। दोनों तरफ के लोगों की भाषा एक है। एक जैसी शक्लें हैं तथा उनका पहनावा भी एक जैसा है। वे एक ही लहजे से बोलते हैं तथा उनकी गालियाँ भी एक जैसी ही हैं। इस कारण सफ़िया को अटारी में समझ ही नहीं आया कि कहाँ लाहौर खत्म हुआ और किस जगह अमृतसर शुरू हो गया।

प्रश्न 24:*'नमक' कहानी में क्या सन्देश छिपा हुआ है? स्पष्ट कीजिए।*

उत्तर-'नमक' कहानी में छिपा संदेश यह है कि मानचित्र पर एक लकीर मात्र खींच देने से वहाँ रहने वाले लोगों के दिल नहीं बँट जाते। जमीन बँटने से लोगों के आवागमन पर प्रतिबंध और पाबंदियाँ लग जाती हैं परंतु लोगों का लगाव अपने मूल स्थान से बना रहता है। पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी द्वारा दिल्ली को तथा भारतीय कस्टम अधिकारी द्वारा ढाका को अपना वतन मानना इसका प्रमाण है।

प्रश्न 25:*'नमक' कहानी का प्रतिपाद्य बताइए।*

उत्तर- 'नमक' कहानी भारत-पाक विभाजन के बाद सरहद के दोनों तरफ के विस्थापित पुनर्वासित जनों के दिलों को टटोलती एक मार्मिक कहानी है। दिलों को टटोलने की इस कोशिश में अपने-पराये, देस-परदेस की कई प्रचलित धारणाओं पर सवाल खड़े किए गए हैं। विस्थापित होकर आई सिख बीवी आज भी लाहौर को ही अपना वतन मानती हैं और सौगात के तौर पर वहाँ का नमक लाए जाने की फ़रमाइश करती हैं। कस्टम अधिकारी नमक ले जाने की इजाजत देते हुए देहली को अपना वतन बताता है। इसी तरह भारतीय कस्टम अधिकारी सुनील दास गुप्ता का कहना है, "मेरा वतन ढाका है। राष्ट्र-राज्यों की नयी सीमा-रेखाएँ खींची जा चुकी हैं और मजहबी आधार पर लोग इन रेखाओं के इधर-उधर अपनी जगहें मुकर्रर कर चुके हैं, इसके बावजूद जमीन पर खींची गई रेखाएँ उनके अंतर्मन तक नहीं पहुँच पाई हैं। एक अनचाही, अप्रीतिकर बाहरी बाध्यता ने उन्हें अपने-अपने जन्म-स्थानों से विस्थापित तो कर दिया है, पर वह उनके दिलों पर कब्जा नहीं कर पाई है। नमक जैसी छोटी-सी चीज का सफ़र पहचान के इस मार्मिक पहलू को परत-दर-परत उघाड़ देता है। यह पहलू जब तक सरहद के आर-पार जीवित है, तब तक यह उम्मीद की जा सकती है कि राजनीतिक सरहदें एक दिन बेमानी हो जाएँगी।"

लाहौर के कस्टम अधिकारी का यह कथन बहुत सारगर्भित है-"उनको यह नमक देते वक्त मेरी तरफ से कहिएगा कि लाहौर अभी तक उनका वतन है और देहली मेरा, तो बाकी सब रफ्ता-रफ्ता ठीक हो जाएगा।"
प्रश्न 26:*'नमक' कहानी में 'नमक' किस बात का प्रतीक है? इस कहानी में 'वतन' शब्द का भाव किस प्रकार दोनों तरफ के लोगों को भावुक करता है?*

उत्तर-'नमक' कहानी में 'नमक' भारत और पाकिस्तान के विभाजन के बाद इन अलग-अलग देशों में रह रहे लोगों के परस्पर प्यार का प्रतीक है जो विस्थापित और पुनर्वासित होकर भी एक-दूसरे के दिलों से जुड़े हैं। इस कहानी में 'वतन' शब्द का भाव एक-दूसरे को याद करके अतीत की मधुर यादों में खो देने का भाव उत्पन्न करके दोनों तरफ के लोगों को भावुक कर देता है। दोनों देशों के राजनीतिक संबंध अच्छे-बुरे जैसे भी हों, इससे उनका कुछ लेना-देना नहीं होता।

श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा, मेरी कल्पना का आदर्श समाज

(बाबा साहब भीमराव आंबेडकर**)**

1. श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा

<u>प्रतिपादय-</u>यह पाठ आंबेडकर के विख्यात भाषण 'एनीहिलेशन ऑफ़ कास्ट'(1936) पर आधारित है। इसका अनुवाद ललई सिंह यादव ने 'जाति-भेद का उच्छेद' शीर्षक के अंतर्गत किया। यह भाषण 'जाति-पाँति तोड़क

मंडल' (लाहौर) के वार्षिक सम्मेलन (1936) के अध्यक्षीय भाषण के रूप में तैयार किया गया था, परंतु इसकी क्रांतिकारी दृष्टि से आयोजकों की पूर्ण सहमति न बन सकने के कारण सम्मेलन स्थगित हो गया।

सारांश-लेखक कहता है कि आज के युग में भी जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं है। समर्थक कहते हैं कि आधुनिक सभ्य समाज कार्य-कुशलता के लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक मानता है। इसमें आपत्ति यह है कि जाति-प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन का भी रूप लिए हुए है।

श्रम-विभाजन सभ्य समाज की आवश्यकता हो सकती है, परंतु यह श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती। भारत की जाति-प्रथा श्रमिकों के अस्वाभाविक विभाजन के साथ-साथ विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है। जाति-प्रथा को यदि श्रम-विभाजन मान लिया जाए तो यह भी मानव की रुचि पर आधारित नहीं है। सक्षम समाज को चाहिए कि वह लोगों को अपनी रुचि का पेशा करने के लिए सक्षम बनाए। जाति-प्रथा में यह दोष है कि इसमें मनुष्य का पेशा उसके प्रशिक्षण या उसकी निजी क्षमता के आधार पर न करके उसके माता-पिता के सामाजिक स्तर से किया जाता है। यह मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है। ऐसी दशा में उद्योग-धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में परिवर्तन से भूखों मरने की नौबत आ जाती है। हिंदू धर्म में पेशा बदलने की अनुमति न होने के कारण कई बार बेरोजगारी की समस्या उभर आती है।

जाति-प्रथा का श्रम-विभाजन मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं रहता। इसमें व्यक्तिगत रुचि व भावना का कोई स्थान नहीं होता। पूर्व लेख ही इसका आधार है। ऐसी स्थिति में लोग काम में अरुचि दिखाते हैं। अत: आर्थिक पहलू से भी जाति-प्रथा हानिकारक है क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा, रुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें स्वाभाविक नियमों में जकड़कर निष्क्रिय बना देती है।

2. मेरी कल्पना का आदर्श समाज

प्रतिपादय-इस पाठ में लेखक ने बताया है कि आदर्श समाज में तीन तत्व अनिवार्यत: होने चाहिए-समानता, स्वतंत्रता व बंधुता। इनसे लोकतंत्र सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया के अर्थ तक पहुँच सकता है।

सारांश-लेखक का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भ्रातृत्त पर आधारित होगा। समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए कि कोई भी परिवर्तन समाज में तुरंत प्रसारित हो जाए। ऐसे समाज में सबका सब कार्यों में भाग होना चाहिए तथा सबको सबकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सबको संपर्क के साधन व अवसर मिलने चाहिए। यही लोकतंत्र है। लोकतंत्र मूलत: सामाजिक जीवनचर्या की एक रीति व समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। आवागमन, जीवन व शारीरिक सुरक्षा की स्वाधीनता, संपत्ति, जीविकोपार्जन के लिए जरूरी औजार व सामग्री रखने के अधिकार की स्वतंत्रता पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होती, परंतु मनुष्य के सक्षम व प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए लोग तैयार नहीं हैं। इसके लिए व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता देनी होती है। इस स्वतंत्रता के अभाव में व्यक्ति 'दासता' में जकड़ा रहेगा।

'दासता' केवल कानूनी नहीं होती। यह वहाँ भी है जहाँ कुछ लोगों को दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार व कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। फ्रांसीसी क्रांति के नारे में 'समता' शब्द सदैव विवादित रहा है। समता के आलोचक कहते हैं कि सभी मनुष्य बराबर नहीं होते। यह सत्य होते हुए भी महत्व नहीं रखता क्योंकि समता असंभव होते हुए भी नियामक सिद्धांत है। मनुष्य की क्षमता तीन बातों पर निर्भर है -

1. शारीरिक वंश परंपरा,
2. सामाजिक उत्तराधिकार,
3. मनुष्य के अपने प्रयत्न।

इन तीनों दृष्टियों से मनुष्य समान नहीं होते, परंतु क्या इन तीनों कारणों से व्यक्ति से असमान व्यवहार करना चाहिए। असमान प्रयत्न के कारण असमान व्यवहार अनुचित नहीं है, परंतु हर व्यक्ति को विकास करने के अवसर मिलने चाहिए। लेखक का मानना है कि उच्च वर्ग के लोग उत्तम व्यवहार के मुकाबले में निश्चय ही जीतेंगे क्योंकि उत्तम व्यवहार का निर्णय भी संपन्नों को ही करना होगा। प्रयास मनुष्य के वश में है, परंतु वंश व सामाजिक प्रतिष्ठा उसके वश में नहीं है। अत: वंश और सामाजिकता के नाम पर असमानता अनुचित है। एक राजनेता को अनेक लोगों से मिलना होता है। उसके पास हर व्यक्ति के लिए अलग व्यवहार करने का समय नहीं होता। ऐसे में वह व्यवहार्य सिद्धांत का पालन करता है कि सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार किया जाए। वह सबसे व्यवहार इसलिए करता है क्योंकि वर्गीकरण व श्रेणीकरण संभव नहीं है। समता एक काल्पनिक वस्तु है, फिर भी राजनीतिज्ञों के लिए यही एकमात्र उपाय व मार्ग है।

<u>प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न 1:जाति - प्रथा को श्रम - विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के क्या तर्क हैं ?

अथवा

जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का आधार क्यों नहीं माना जा सकता? पाठ से उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर -जातिप्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के निम्नलिखित तर्क हैं -

1. जाति प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन भी कराती है। सभ्य समाज में श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में विभाजन अस्वाभाविक है।
2. जाति प्रथा में श्रम विभाजन मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। इसमें मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा निजी क्षमता का विचार किए बिना किसी दूसरे के द्वारा उसके लिए पेशा निर्धारित कर दिया जाता है। यह जन्म पर आधारित होता है।
3. भारत में जाति प्रथा मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है, भले ही वह पेशा उसके लिए अनुपयुक्त या अपर्याप्त क्यों न हो। इससे उसके भूखों मरने की नौबत आ जाती है।

प्रश्न 2:जाति-प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती रही हैं? क्या यह स्थिति आज भी हैं?

उत्तर -जाति-प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का कारण भी बनती रही है। भारत में जाति-प्रथा के कारण व्यक्ति को जन्म के आधार पर एक पेशे से बाँध दिया जाता था। इस निर्णय में व्यक्ति की रुचि,

योग्यता या कुशलता का ध्यान नहीं रखा जाता था। उस पेशे से गुजारा होगा या नहीं, इस पर भी विचार नहीं किया जाता था। इस कारण भुखमरी की स्थिति आ जाती थी। इसके अतिरिक्त, संकट के समय भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की अनुमति नहीं दी जाती थी। भारतीय समाज पैतृक पेशा अपनाने पर ही जोर देता था। उद्योग-धंधों की विकास प्रक्रिया व तकनीक के कारण कुछ व्यवसायी रोजगारहीन हो जाते थे। अत: यदि वह व्यवसाय न बदला जाए तो बेरोजगारी बढ़ती है।

आज भारत की स्थिति बदल रही है। सरकारी कानून, सामाजिक सुधार व विश्वव्यापी परिवर्तनों से जाति-प्रथा के बंधन काफी ढीले हुए हैं, परंतु समाप्त नहीं हुए हैं। आज लोग अपनी जाति से अलग पेशा अपना रहे हैं।

प्रश्न 3:लेखक के मत से 'दासता' की व्यापक परिभाषा क्या हैं? समझाइए।

उत्तर -लेखक के अनुसार, दासता केवल कानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता। 'दासता' में वह स्थिति भी सम्मिलित है। जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है।

प्रश्न 4:शारीरिक वंश - परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह क्यों करते हैं? इसके पीछे उनके क्या तर्क हैं?

उत्तर -शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद आंबेडकर 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह करते हैं क्योंकि समाज को अपने सभी सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता तभी प्राप्त हो सकती है जब उन्हें आरंभ से ही समान अवसर एवं समान व्यवहार उपलब्ध कराए जाएँ। व्यक्ति को अपनी क्षमता के विकास के लिए समान अवसर देने चाहिए। उनका तर्क है कि उत्तम व्यवहार के हक में उच्च वर्ग बाजी मार ले जाएगा। अत: सभी व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए।

प्रश्न 5:सही में आंबेडकर ने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा हैं, जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन-सुविधाओं का तर्क दिया हैं। क्या इससे आप सहमत हैं?

उत्तर -आंबेडकर ने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा, जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन सुविधाओं का तर्क दिया है।

हम उनकी इस बात से सहमत हैं। आदमी की भौतिक स्थितियाँ उसके स्तर को निर्धारित करती है। जीवन जीने की सुविधाएँ मनुष्य को सही मायनों में मनुष्य सिद्ध करती हैं। व्यक्ति का रहन सहन और चाल चलन काफी हद तक उसकी जातीय भावना को खत्म कर देता है।

प्रश्न 6:आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक 'भ्रातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया हैं अथवा नहीं? आप इस 'भ्रातृता' शब्द से कहाँ तक सहमत हैं? यदि नहीं, तो आप क्या शब्द उचित समझेंगे/ समझेगी?

उत्तर -आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक 'भ्रातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है। लेखक समाज की बात कर रहा है और समाज स्त्री-पुरुष दोनों से मिलकर बना है।

उसने आदर्श समाज में हर आयुवर्ग को शामिल किया है। 'भ्रातृता' शब्द संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ है-भाईचारा। यह सर्वथा उपयुक्त है। समाज में भाईचारे के सहारे ही संबंध बनते हैं। कोई व्यक्ति एक-दूसरे से अलग नहीं रह सकता। समाज में भाईचारे के कारण ही कोई परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचता है।

प्रश्न 7: आंबेडकर की कल्पना का समाज कैसा होगा?

उत्तर -आंबेडकर की कल्पना का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भाईचारे पर आधारित होगा। सभी को विकास के समान अवसर मिलेंगे तथा जातिगत भेदभाव का नामोनिशान नहीं होगा। समाज में कार्य करने वाले को सम्मान मिलेगा।

प्रश्न 8:मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर होती है ?

उत्तर -मनुष्य की क्षमता निम्नलिखित बातों पर निर्भर होती है -

1. जाति-प्रथा का श्रम-विभाजन अस्वाभाविक है।
2. शारीरिक वंश-परंपरा के आधार पर।
3. सामाजिक उत्तराधिकार अर्थात सामाजिक परंपरा के रूप में माता-पिता की प्रतिष्ठा, शिक्षा, ज्ञानार्जन आदि उपलब्धियों के लाभ पर।
4. मनुष्य के अपने प्रयत्न पर।

प्रश्न 9:लेखक ने जाति-प्रथा की किन-किन बुराइयों का वर्णन किया हैं?

उत्तर -लेखक ने जाति-प्रथा की निम्नलिखित बुराइयों का वर्णन किया है -

1. यह श्रमिक-विभाजन भी करती है।
2. यह श्रमिकों में ऊँच-नीच का स्तर तय करती है।
3. यह जन्म के आधार पर पेशा तय करती है।
4. यह मनुष्य को सदैव एक व्यवसाय में बाँध देती है भले ही वह पेशा अनुपयुक्त व अपर्याप्त हो।
5. यह संकट के समय पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती, चाहे व्यक्ति भूखा मर जाए।
6. जाति-प्रथा के कारण थोपे गए व्यवसाय में व्यक्ति रुचि नहीं लेता।

प्रश्न 10:लेखक की दृष्टि में लोकतंत्र क्या है ?

उत्तर -लेखक की दृष्टि में लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति नहीं है। वस्तुत: यह सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति और समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। इसमें यह आवश्यक है कि अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो।

प्रश्न 11:आर्थिक विकास के लिए जाति-प्रथा कैसे बाधक है?

उत्तर -भारत में जाति-प्रथा के कारण व्यक्ति को जन्म के आधार पर मिला पेशा ही अपनाना पड़ता है। उसे विकास के समान अवसर नहीं मिलते। जबरदस्ती थोपे गए पेशे में उनकी अरुचि हो जाती है और वे काम को टालने या कामचोरी करने लगते हैं। वे एकाग्रता से कार्य नहीं करते। इस प्रवृत्ति से आर्थिक हानि होती है और उद्योगों का विकास नहीं होता।

प्रश्न 12:डॉ० अबेडकर 'समता' को कैसी वस्तु मानते हैं तथा क्यों?

उत्तर -डॉ० आंबेडकर 'समता' को कल्पना की वस्तु मानते हैं। उनका मानना है कि हर व्यक्ति समान नहीं होता। वह जन्म से ही । सामाजिक स्तर के हिसाब से तथा अपने प्रयत्नों के कारण भिन्न और असमान होता है। पूर्ण समता एक काल्पनिक स्थिति है, परंतु हर व्यक्ति को अपनी क्षमता को विकसित करने के लिए समान अवसर मिलने चाहिए।

प्रश्न 13:जाति और श्रम-विभाजन में बुनियादी अंतर क्या है? 'श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा' के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर -जाति और श्रम विभाजन में बुनियादी अंतर यह है कि -

1. जाति-विभाजन, श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिकों का भी विभाजन करती है।
2. सभ्य समाज में श्रम-विभाजन आवश्यक है परंतु श्रमिकों के वर्गों में विभाजन आवश्यक नहीं है।
3. जाति-विभाजन में श्रम-विभाजन या पेशा चुनने की छूट नहीं होती जबकि श्रम-विभाजन में ऐसी छूट हो सकती है।
4. जाति-प्रथा विपरीत परिस्थितियों में भी रोजगार बदलने का अवसर नहीं देती, जबकि श्रम-विभाजन में व्यक्ति ऐसा कर सकता है।

प्रश्न 14: लेखक भीमराव आंबेडकर के 'जाति -प्रथा एवं श्रम-विभाजन' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- श्रम-विभाजन सभ्य समाज की आवश्यकता हो सकती है, परंतु यह श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती। भारत की जाति-प्रथा श्रमिकों के अस्वाभाविक विभाजन के साथ-साथ विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है। जाति-प्रथा को यदि श्रम-विभाजन मान लिया जाए तो यह भी मानव की रुचि पर आधारित नहीं है। सक्षम समाज को चाहिए कि वह लोगों को अपनी रुचि का पेशा करने के लिए सक्षम बनाए। जाति-प्रथा में यह दोष है कि इसमें मनुष्य का

पेशा उसके प्रशिक्षण या उसकी निजी क्षमता के आधार पर न करके उसके माता-पिता के सामाजिक स्तर से किया जाता है। यह मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है। ऐसी दशा में उद्योग-धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में परिवर्तन से भूखों मरने की नौबत आ जाती है। हिंदू धर्म में पेशा बदलने की अनुमति न होने के कारण कई बार बेरोजगारी की समस्या उभर आती है।

प्रश्न 15: लेखक भीमराव आंबेडकर के 'एक आदर्श समाज की कल्पना' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- लेखक का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भ्रातृत्त पर आधारित होगा। समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए कि कोई भी परिवर्तन समाज में तुरंत प्रसारित हो जाए। ऐसे समाज में सबका सब कार्यों में भाग होना चाहिए तथा सबको सबकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सबको संपर्क के साधन व अवसर मिलने चाहिए। यही लोकतंत्र है। लोकतंत्र मूलत: सामाजिक जीवनचर्या की एक रीति व समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। आवागमन, जीवन व शारीरिक सुरक्षा की स्वाधीनता, संपत्ति, जीविकोपार्जन के लिए जरूरी औजार व सामग्री रखने के अधिकार की स्वतंत्रता पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होती, परंतु मनुष्य के सक्षम व प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए लोग तैयार नहीं हैं। इसके लिए व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता देनी होती है। इस स्वतंत्रता के अभाव में व्यक्ति 'दासता' में जकड़ा रहेगा।

'दासता' केवल कानूनी नहीं होती। यह वहाँ भी है जहाँ कुछ लोगों को दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार व कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। फ्रांसीसी क्रांति के नारे में 'समता' शब्द सदैव विवादित रहा है।

प्रश्न 16: भारत की जाति - प्रथा की क्या विशेषता है ? श्रम-विभाजन व श्रमिक-विभाजन में क्या अंतर हैं?

उत्तर- भारत की जाति-प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन तो करती ही है, साथ ही वह इन वर्गों को एक-दूसरे से ऊँचा-नीचा भी घोषित करती है।

'श्रम-विभाजन' का अर्थ है-अलग-अलग व्यवसायों का वर्गीकरण। 'श्रमिक-विभाजन' का अर्थ है-जन्म के आधार पर व्यक्ति का व्यवसाय व स्तर निश्चित कर देना।

प्रश्न 17: आधुनिक युग में पेशा बदलने की जरूरत क्यों पड़ती हैं? पेशा बदलने की स्वतंत्रता न होने से क्या परिणाम होता हैं?

उत्तर - आधुनिक युग में उद्योग-धंधों का स्वरूप बदलता रहता है। तकनीक के विकास से किसी भी व्यवसाय का रूप बदल जाता है। इस कारण व्यक्ति को अपना पेशा बदलना पड़ सकता है।

तकनीक व विकास-प्रक्रिया के कारण उद्योगों का स्वरूप बदल जाता है। इस कारण व्यक्ति को अपना व्यवसाय बदलना पड़ता है। यदि उसे अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो तो उसे भूखा ही मरना पड़ेगा।

प्रश्न 18 : लेखक ने किन विशेषताओं को आदर्श समाज की धुरी माना हैं और क्यों? भ्रातृता के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - लेखक उस समाज को आदर्श मानता है जिसमें स्वतंत्रता, समानता व भाईचारा हो। उसमें इतनी गतिशीलता हो कि सभी लोग एक साथ सभी परिवर्तनों को ग्रहण कर सकें। ऐसे समाज में सभी के सामूहिक हित होने चाहिएँ तथा सबको सबकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए।

'भ्रातृता' का अर्थ है-भाईचारा। लेखक ऐसा भाईचारा चाहता है जिसमें बाधा न हो। सभी सामूहिक रूप से एक-दूसरे के हितों को समझे तथा एक-दूसरे की रक्षा करें।

प्रश्न 19: लेखक किस बात को निष्पक्ष निर्णय नहीं मानता? न्याय का तकाजा क्या हैं?

उत्तर - लेखक कहता है कि उत्तम व्यवहार प्रतियोगिता में उच्च वर्ग बाजी मार जाता है क्योंकि उसे शिक्षा, पारिवारिक ख्याति, पैतृक संपदा व व्यावसायिक प्रतिष्ठा का लाभ प्राप्त है। ऐसे में उच्च वर्ग को उत्तम व्यवहार का हकदार माना जाना निष्पक्ष निर्णय नहीं है।

न्याय का तकाजा यह है कि व्यक्ति के साथ वंश परंपरा व सामाजिक उत्तराधिकार के आधार पर असमान व्यवहार न करके समान व्यवहार करना चाहिए।

प्रश्न 20: पेशा बदलने की स्वतंत्रता न होने से क्या परिणाम होता हैं? हिन्दू धर्म की क्या स्थिति है ?

उत्तर - तकनीक व विकास-प्रक्रिया के कारण उद्योगों का स्वरूप बदल जाता है। इस कारण व्यक्ति को अपना व्यवसाय बदलना पड़ता है। यदि उसे अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो तो उसे भूखा ही मरना पड़ेगा।

हिंदू धर्म में जाति-प्रथा दूषित है। वह किसी भी व्यक्ति को ऐसा पेशा चुनने की आजादी नहीं देती जो उसका पैतृक पेशा न हो, भले ही वह उसमें पारंगत हो।

अनुपूरक पाठ्य-पुस्तक वितान भाग-दो

प्रश्न संख्या सात के लिए ध्यान देने योग्य बातें–

- `वितान' को `आरोह' की तरह ही महत्व दें।
- वितान के दोनों पाठों को एक बार ध्यान से अवश्य पढ़ें। जिससे कहानी समझ में आ जाए।
- प्रश्न संख्या सात में पठित पाठों पर विकल्प सहित तीन अंक का एक एवं दो अंक का एक प्रश्न पूछा जाएगा | (1X3) (1X2) कुल 5 अंक
- निर्देशों को यदि ध्यान पूर्वक पढ़कर उसका पालन किया जाए तो अच्छे अंक प्राप्त किए जा सकते हैं।
- अनुपूरक पाठ्य-पुस्तक वितान भाग-दो के द्वितीय टर्म में केवल दो पाठ हैं| विद्यार्थी चाहे तो कोई एक पाठ चयन कर सकता है जिसको वह अच्छे से समझ चुका है क्योंकि दोनों पाठ से केवल विकल्प सहित दो -दो प्रश्न ही पूछे जाएँगे |

- वितान के दोनों पाठों के सार फिल्म की कहानी की तरह याद कर लें।
- मुख्य बिन्दुओं को लिख कर अवश्य याद कर लें।
- इन प्रश्नों के उत्तर बिंदुओं में लिखें। एवं उत्तर लिखते समय भाषा की शुद्धता का ध्यान रखें।
- पाठ को अच्छी तरह समझने के लिए यू ट्यूब के वीडियो की मदद ले सकते हैं |

पाठ-3 अतीत में दबे पाँव (ओम थानवी)

पाठ का सार -यहओम थानवी के यात्रा-वृत्तांत और रिपोर्ट का मिला-जुला रूप है| उन्होंने इस पाठ में विश्व के सबसे पुराने और नियोजित शहरों-मुअनजो-दड़ो तथा हड़प्पा का वर्णन किया है। पाकिस्तान के सिंध प्रांत में मुअनजो-दड़ो ओर पंजाब प्रांत में हड़प्पा नाम के दो नगरों को पुरातत्वविदों ने खुदाई के दौरान खोज निकाला था| मुअनजो-दड़ो ताम्रकाल का सबसे बड़ा शहर था| मुअनजो-दड़ो अर्थात मुर्दों का टीला | यह नगर मानव निर्मित छोटे-छोटे टीलों पर बना था| मुअनजो-दड़ो में प्राचीन और बड़ा बौद्ध स्तूप है | इसकी नगर योजना अद्वितीय है |लेखक ने खंडहर हो चुके टीलों , स्नानागार ,मृद-भांडों ,कुओं-तालाबों ,मकानों व मार्गों का उल्लेख किया है जिनसे शहर की सुंदर नियोजन व्यवस्था का पता चलता है | बस्ती में घरों के दरवाजे मुख्य सड़क की ओर नहीं खुलते , हर घर में जल निकासी की व्यवस्था है ,सभी नालियाँ की ढकी हुई हैं ,पक्की ईंटों का प्रयोग किया गया है |

नगर में चालीस फुट लम्बा ओर पच्चीस फुट चौड़ा एक महाकुंड भी है| इसकी दीवारें ओर तल पक्की ईंटों से बने हैं | कुंड के पास आठ स्नानागार हैं | कुंड में बाहर के अशुद्ध पानी को न आने देने का ध्यान रखा गया | कुंड में पानी की व्यवस्था के लिए कुंआ है | एक विशाल कोठार भी है जिसमें अनाज रखा जाता था| उन्नत खेती के भी निशान दिखते हैं- कपास ,गेहूं ,जौ ,सरसों ,बाजरा आदि के प्रमाण मिले हैं |मोहनजोदड़ो की सभ्यता-संस्कृति से संबन्धित वस्तुओं को अब कराची, लाहौर, दिल्ली और लंदन के संग्रहालयों में रखा गया है।

खुदाई में प्राप्त वस्तुएँ – मुहरें, चौपड़ की गोटियाँ, बाट, मिट्टी के बर्तन, मिट्टी के गहने, खिलौने, औज़ार आदि है ।

सिंधु घाटी सभ्यता में न तो भव्य राजमहल मिलें हैं ओर ही भव्य मंदिर |नरेश के सर पर रखा मुकुट भी छोटा है |मुअनजो-दड़ो सिंधु घाटी का सबसे बड़ा नगर है फिर भी इसमें भव्यता व आडम्बर का अभाव रहा है |उस समय के लोगों ने कला ओर सुरुचि को महत्त्व दिया |नगर-नियोजन ,धातु एवं पत्थर की मूर्तियाँ ,मृद-भांड, उन पर चित्रित मानव ओर अन्य आकृतियाँ, मुहरें ,उन पर बारीकी से की गई चित्रकारी |एक पुरातत्त्ववेत्ता के मुताबिक सिंधु सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध है जो "राजपोषित या धर्मपोषित न होकर समाजपोषित था"|

प्रश्नोत्तर

1. **संसार की प्रमुख प्राचीन सभ्यताएँ कौन-कौन सी हैं? प्राचीनतम सभ्यता कौन-सी है उसकी विशिष्ट पहचान क्या है?**

उत्तर- मिस्र की नील घाटी की सभ्यता, मेसोपोटामिया की सभ्यता, बेबीलोन की सभ्यता, सिन्धु घाटी की सभ्यता। सबसे प्राचीनतम सभ्यता सिन्धु घाटी की सभ्यता है। इसके प्रमाणस्वरूप 1922 में मिले हड़प्पा व मुअनजो-दड़ोनगरों नगरों के अवशेष हैं । ये नगर ईसा पूर्व के हैं। इस सभ्यता की विशिष्ट पहचान के आधार हैं: एक जैसे आकार की पक्की ईटों का प्रयोग,जल निकासी की उत्कृष्ट व्यवस्था, तत्कालीन वास्तुकला, नगर का श्रेष्ठ नियोजन।

2. 'सिन्धु घाटी की सभ्यता की विशेषता उसका सौन्दर्य बोध है जो राजपोषित या धर्मपोषित न होकर समाज-पोषित था।' ऐसा क्यों कहा गया है? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- सिन्धु सभ्यता में औजार तो बहुत मिले हैं, परंतु हथियारों का प्रयोग नहीं के बराबर मिला है । इसका कोई प्रमाण नहीं मिला है कि सिंधु घाटी सभ्यता के लोग हथियारों का प्रयोग भी करते थे । वे लोग अनुशासनप्रिय थे परन्तु यह अनुशासन किसी ताकत के बल पर आधारित नहीं था, बल्कि लोग अपने मन और कर्म से ही अनुशासन प्रिय थे। मुअनजो-दड़ो की खुदाई में एक दाढ़ी वाले नरेश की छोटी मूर्ति मिली है परन्तु यह मूर्ति किसी राजतंत्र या धर्मतंत्र का प्रमाण नहीं कही जा सकती क्योंकि नरेश का जो मुकुट मिला है वह बहुत ही छोटे आकार का था । इससे पता चलता है कि वहाँ राजा का शासन तो था परंतु वह सिंधु सभ्यता की जनता द्वारा संचालित था । विश्व की अन्य सभ्यताओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन से भी यही अनुमान लगाया जा सकता है कि सिन्धु सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्यबोध है जो कि समाज पोषित है, राजपोषित या धर्मपोषित नहीं है।

3. **किन अर्थों में सिंधु घाटी सभ्यता को जल संस्कृति कहा जा सकता है ? स्पष्ट कीजिए** ।

उत्तर- सिंधु घाटी सभ्यता में बेजोड़ जल निकासी व्यवस्था, नदी, कुएँ, स्नानागार आदि को देखते हुए इस सभ्यता 'जल संस्कृति' कहा जा सकता है । आज यदि हम बात करें भारत के बड़े शहरों की जैसे: दिल्ली, मुम्बई आदि तो हम पाएँगे कि वहाँ पर एक बड़ी समस्या जल की उपलब्धता एवं निकासी से जुड़ी हुई है. लेकिन यदि हम हजारों वर्ष पूर्व की सिंधु घाटी सभ्यता की बात करें तो वहाँ पर जल का प्रबंधन अत्यंत ही उच्च स्तरीय था ।

सिंधु सभ्यता में सामूहिक स्नान हेतु बने हुए स्नानागार भी उत्कृष्ट वास्तुकला के उदाहरण रहे हैं, जो कि उस समय की जल प्रबंधन व्यवस्था का अत्यंत ही उत्कृष्ट उदाहरण हैं। सिंधु घाटी सभ्यता में सड़कों के साथ बनी हुई नालियाँ पक्की ईंटों से ढँकी हुई है, यह जल निकासी अत्यंत ही सुव्यवस्थित उदाहरण है । इस सभ्यता में एक ही पंक्ति में आठ स्नानागार मिले हैं जिनमें से किसी का भी द्वार एक-दूसरे के सामने नहीं खुलता है । इस सभ्यता में पानी के जितने भी कुंड बने हुए हैं, उनमें पक्की ईंटों व उनके बीच में चिराड़ी का प्रयोग हुआ है, जिससे कि कुंड का पानी बाहर न जा सके व बाहर का गंदा पानी कुंड के अंदर न आ सके। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सिंधु घाटी सभ्यता एक जल संस्कृति थी ।

4. मुअन्जो-दड़ो की गृह निर्माण योजना पर संक्षिप्त में प्रकाश डालिए ?

उत्तर- नगर की मुख्य सड़क के दोनों ओर घर हैं, परन्तु किसी भी घर का मुख्य द्वार सड़क पर नहीं खुलता| घर जाने के लिए मुख्य सड़क से गलियों में जाना पड़ता है| सभी घरों में जल निकासी की व्यवस्था है| घर पक्की ईंटों के बने हैं| छोटे घरों में खिड़कियाँ नहीं हैं परन्तु बड़े दुर्गों में खिड़कियाँ एवम् रोशनदान बने हुए हैं| सब घर कतार में बने हैं| नगर में बस्तियों की व्यवस्था भी बड़ी ही सुंदर है| छोटे व कामगार लोगों की बस्तियाँ सिन्धु के किनारे पर बनी थी और बड़े लोगों की बस्तियाँ ऊपर के दुर्गों पर बनी हुई थी| देखा जाए तो इस प्रकार की नगर रचना आज के समय में भी दुर्लभ है।

5. 'सिन्धु सभ्यता साधन सम्पन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था '| प्रस्तुत कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर- दूसरी सभ्यताएँ राजतंत्र और धर्मतंत्र द्वारा संचालित थी । वहाँ बड़े-बड़े सुन्दर महल, पूजा स्थल, भव्य मूर्तियाँ, पिरामिड और मन्दिर मिले हैं। राजाओं ,धर्माचार्यों की समाधियाँ भी मौजूद हैं। किंतु सिन्धु सभ्यता ,एक साधन-सम्पन्न सभ्यता थी परन्तु उसमें राजसत्ता या धर्म सत्ताके चिह्न नहीं मिलते। वहाँ की नगर योजना, वास्तुकला, मुहरों, ठप्पों, जल-व्यवस्था, साफ-सफाई और सामाजिक व्यवस्था आदि की एकरूपता द्वारा उनमें अनुशासन देखा जा सकता है| सांस्कृतिक धरातल पर यह तथ्य सामने आता है कि सिन्धु घाटी की सभ्यता, दूसरी सभ्यताओं से अलग एवं स्वाभाविक, किसी प्रकार की कृत्रिमता एवं आडंबर रहित थी जबकि अन्य सभ्यताओं में राजतंत्र और धर्मतंत्र की ताकत को दिखाते हुए भव्य महल , मंदिर ओर मूर्तियाँ बनाई गईं किंतु सिन्धु घाटी सभ्यता की खुदाई में छोटी-छोटी मूर्तियाँ ,खिलौने ,मृद-भांड ,नावें मिली हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सिन्धु सभ्यता सम्पन्न थी परन्तु उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था।

6. 'सिन्धु सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्य बोध है जो राजपोषित न होकर समाज-पोषित था। 'ऐसा क्यों कहा गया है?

उत्तर- सिन्धु सभ्यता में औजार तो बहुत मिले हैं, परंतु हथियारों का भी प्रयोग होता रहा होगा, इसका कोई प्रमाण नहीं है। वे लोग अनुशासनप्रिय थे परन्तु यह अनुशासन किसी ताकत के बल के द्वारा कायम नहीं किया गया, बल्कि लोग अपने मन और कर्म से ही अनुशासन प्रिय थे। मुअनजो-दड़ो की खुदाई में एक दाढ़ी वाले नरेश की छोटी मूर्ति मिली है परन्तु यह मूर्ति किसी राजतंत्र या धर्मतंत्र का प्रमाण नहीं कही जा सकती। विश्व की अन्य सभ्यताओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन से भी यही अनुमान लगाया जा सकता है कि सिन्धु सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्यबोध है जो कि समाज पोषित है, राजपोषित या धर्मपोषित नहीं है।

7. 'यह सच है कि यहाँ किसी आँगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँ अब आप को कहीं नहीं ले जातीं, वे आकाश की तरफ अधूरी रह जाती हैं। लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर हैं, वहाँ से आप इतिहास को नहीं उस के पार झाँक रहे हैं।' इसके पीछे लेखक का क्या आशय है?

उत्तर- इस कथन से लेखक का आशय है कि इन टूटे-फूटे घरों की सीढ़ियों पर खड़े होकर आप विश्व की सभ्यता के दर्शनकर सकते हैं क्योंकि सिन्धु सभ्यता विश्व की महान सभ्यताओ में से एक है। सिन्धु सभ्यता आडंबररहित एवं अनुशासनप्रिय है। खंडहरों से मिले अवशेषों और इन टूटे-फूटे घरों से केवल सिन्धु सभ्यता का इतिहास ही नहीं देखा जा सकता है बल्कि उससे कहीं आगे मानवता

के चिह्न ओर मानवजाति के क्रमिक विकास को भी देखा जा सकता है। कई प्रश्न - ऐसे कौन से कारण रहे होंगे कि ये महानगर आज केवल खंडहर बन कर रह गए हैं ,?वे बड़े महानगर क्यों उजड़ गए ,?उस जमाने के लोगों की वास्तुकला ,कला ओर ज्ञान में रुचि ,समाज के लिए आवश्यक मूल्य -अनुशासन ,सादगी ,स्वच्छता ,सहभागिता आदि में मानवजाति के क्रमिक विकास पर पुनः चिंतन करने पर मजबूर कर देते हैं । इस प्रकार हम इन सीढ़ियों पर चढ़कर किसी इतिहास की ही खोज नहीं करना चाहते बल्कि सिन्धु सभ्यता के सभ्य मानवीय समाज को देखना चाहते हैं।

8. आज जल संकट एक बड़ी समस्या है |ऐसे में सिन्धु सभ्यता के महानगर मुअनजो-दड़ो की जल व्यवस्था से क्या प्रेरणा ली जा सकती है ? भावी जल संकट से निपटने के लिए आप क्या सुझाव देंगे?

उत्तर- सिन्धु सभ्यता के महानगर मुअनजो-दड़ो की जल व्यवस्था विकसित थी प्रत्येक घर में एक स्नानघर था । घर के भीतर से पानी या मैला पानी नालियों के माध्यम से बाहर हौदी में आता है और फिर बड़ी नालियों में चला जाता है। कहीं-कहीं नालियाँ ऊपर से खुली हैं परन्तु अधिकतर नालियाँ ऊपर से बंद हैं। आज यदि हम बात करें भारत के बड़े शहरों की जैसे: दिल्ली, मुम्बई आदि तो हम पाएँगे कि वहाँ पर एक बड़ी समस्या जल की उपलब्धता एवं निकासी से जुड़ी हुई है| परन्तु इनकी जल निकासी व्यवस्था बहुत ही ऊँचे दर्जे की था | नगर में कुओं का प्रबंध था । ये कुएँ पक्की ईटों के बने थे। सिन्धु सभ्यता से जुड़े इतिहासकारों का मानना है कि यह सभ्यता विश्व में पहली ज्ञात संस्कृति है जो कुएँ खोदकर भू-जल तक पहुँची। अकेले मुअनजो-दड़ों नगर में सात सौ कुएँ हैं। यहाँ का महाकुंड लगभग चालीस फुट लम्बा ओर पच्चीस फुट चौड़ा है |इस प्रकार मुअनजो-दड़ों में पानी की व्यवस्था सभ्य समाज की पहचान है। पानी का समुचित उपयोग एवं संरक्षण की विधि आज भी बड़े महानगरों के लिए अनुकरणीय है |

9. टूटे फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास केसाथ धड़कती जिंदगियों के अनछूए समयों का भी दस्तावेज़ होते हैं -इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए |

उत्तर -1पूरा अवशेष उस संस्कृति कि रहन सहन व्यवस्था केसाथ ही उन पूर्वजोके जीवन स्ंद्रभो से परिचित कराती है |

2 हम कल्पना केसहारे उस समय मे प्रवेश कर उस काल खंड की अनुभूति प्राप्त करते है|

3. खंडहरों से उस सभ्यता की प्रामाणिकता सिद्ध होती है |

10. मुअनजो-दड़ो की गृह-निर्माण योजना पर संक्षेप में प्रकाश डालिए|

उत्तर- मुअनजो-दड़ो नगर की मुख्य सड़क के दोनों ओर घर हैं परंतु किसी भी घर का दरवाजा मुख्य सड़क पर नहीं खुलता। घर जाने के लिए मुख्य सड़क से गलियों में जाना पड़ता है, सभी घरों के लिए उचित जल निकासी व्यवस्था है। घर पक्की ईंटों के बने हैं |छोटे घरों में खिड़कियाँ नहीं थीं किंतु बड़े घरों में आंगन के भीतर चारों तरफ बने कमरों में खिड़कियाँ हैं |घर छोटे भी हैं ओर बड़े भी किंतु सभी घर कतार में बने हैं|

11. 'सिन्धु सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी'- स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- खुदाई से प्राप्त अवशेषों में औजार तो मिले हैं किंतु हथियार नहीं |कोई खड्ग,भाला ,धनुष-बाण नहीं मिला तथा भव्य महलों व समाधियों के न होने से कह सकते हैं कि सिन्धु सभ्यता ताकत से नहीं समझ से अनुशासित थी।

12. संसार की मुख्य प्राचीन सभ्यताएँ कौन-कौन सी हैं?प्राचीनतम सभ्यता कौन-सी है उसकी प्रमाणिकता का आधार क्या है ?

उत्तर- मिस्र की नील घाटी की सभ्यता, मेसोपोटामिया की सभ्यता, बेबीलोन की सभ्यता, सिन्धु घाटी की सभ्यता। सबसे प्राचीन है सिन्धु घाटी की सभ्यता। प्रमाण है 1922 में मिले हड़प्पा व मुअनजो-दड़ोनगरों के अवशेष। ये नगर ईसा पूर्व के हैं।

13.सिन्धु घाटी की सभ्यता की विशिष्ट पहचान क्या है?

उत्तर- 1. एक जैसे आकार की पक्की ईटों का प्रयोग,

2. जल निकासी की उत्कृष्ट व्यवस्था,

3. तत्कालीन वास्तुकला,

4. नगर का श्रेष्ठ नियोजन।

14. मोहनजोदड़ो में पर्यटक क्या-क्या देख सकते हैं?

उत्तर- 1.बौद्ध स्तूप2. महाकुंड 3.अजायबघर आदि

15. कुलधरा कहाँ है? मुअनजो-दड़ो के खण्डहरों को देख कुलधरा की याद क्यों आती है?

उत्तर- कुलधरा जैसलमेर के मुहाने पर पीले पत्थरों से बने घरों वाला सुन्दर गाँव है। कुलधरा के निवासी 150 वर्ष पूर्व राजा से तकरार होने पर गाँव खाली करके चले गए। उनके घर अब खण्डहर बन चुके हैं, परंतु ढ़हे नहीं| घरों की दीवारें और खिड़कियाँ ऐसी हैं मानो सुबह लोग काम पर गए हैं और साँझ होते ही लौट आएंगें| मुअनजो-दड़ोके खण्डहरों को देखकर कुछ ऐसा ही आभास होता है वहाँ घरों के खण्डहरों में घूमते समय किसी अजनबी घर में अनधिकार चहल-कदमी का अपराधबोध होता है | पुरातात्विक खुदाई अभियान की यह खूबी रही है कि सभी वस्तुओं को बड़े सहेज कर रखा गया | अतः कुलधरा की बस्ती और मुअनजो-दड़ोके खण्डहर अपने काल के इतिहास का दर्शन कराते हैं।

16. 'सिंधु सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्य-बोध है' ऐसा क्यों कहा गया?

उत्तर- उस काल के लोगो मे कला या सुरुचि बहुत अधिक थी |जो उस काल के मनुष्यो की दैनिक प्रयोग की वस्तुओ मे स्पष्ट दिखाई देती है |यथा वहाँ कि वास्तु कला तथा नियोजन धातु व पत्थर कि मूर्तियाँ, मिट्टी के बरतन और उन पर बने चित्र, वनस्पति और पशु -पक्षियो कि छवियाँ मोहरे उन पर उत्कीर्ण आकृतियाँ खिलौने केश - विन्यास आभूषण सुघड़ लिपियाँ इस सभ्यता के सौंदर्य बोध को इंगित करती है जो पूरी तरह राज पोषित ,धर्म पोषित न हो कर समाज पोषित है |

17. अतीत मे दबे पाँव में वर्णित महाकुंड का वर्णन कीजिए -

उत्तर- मुआन -जोदड़ो मे प्राप्त महाकुंड कि लंबाई 40 फुट ,चौड़ाई 25 फुट तथा गहराई 7 फुट है |कुंड मे उत्तर -दक्षिण से सीढ़ियाँ उतरती है | इसमे आठ स्नानागार हैं यह सिंधु गति सभ्यता के अद्‌वितीय वास्तु कौशल का अनुपम उदाहरण है, कुंड के तीन तरफ साधुओं के कक्ष कुंड के दीवारों पर पक्की ईंटों के बीच में चूने और चिरोडी के गारे का इस्तेमाल हुआ है| कुंड में पानी ले जाने और निकालने की व्यवस्था है। इस कुंड को पवित्र मानते हैं |

<u>पाठ 4 : डायरी के पन्ने :ऐन फ्रैंक</u>

<u>पाठ का सार</u>‘ -_डायरी के पन्ने ’पाठ में‘ द डायरी ऑफ ए यंग गर्ल ’नामक ऐन फ्रैंक की डायरी के कुछ अंश दिए गए हैं‘ |द डायरी ऑफ ए यंग गर्ल ’ऐन फ्रैंक द्‌वारा दो साल अज्ञातवास के दरम्यान लिखी गई थी |1933 में फ्रैंकफर्ट के नगरनिगम चुनाव में हिटलर की नाजी पार्टी जीत गई |तत्पश्चात यहूदी-विरोधी प्रदर्शन बढ़ने लगे | ऐन फ्रैंक का परिवार असुरक्षित महसूस करते हुए नीदरलैंड के एम्सटर्डम शहर में जा बसा| द्‌वितीय विश्वयुद्‌ध की शुरुआत तक) 1939 (तो सब ठीक था |परंतु 1940 में नीदरलैंड पर जर्मनी का कब्ज़ा हो गया ओर यहूदियों के उत्पीड़न का दौर शुरु हो गया |इन परिस्थितियों के कारण 1942 के जुलाई मास में फ्रैंक परिवार जिसमें माता-पिता,तेरह वर्ष की ऐन, उसकी बड़ी बहन मार्गोट तथा दूसरा परिवार-वानदान परिवार ओर उनका बेटा पीटर तथा इनके साथ एक अन्य व्यक्ति मिस्टर डसेल दो साल तक गुप्त आवास में रहे |गुप्त आवास में इनकी सहायता उन कर्मचारियों ने की जो कभी मिस्टर फ्रैंक के दफ्तर में काम करते थे‘|द डायरी ऑफ ए यंग गर्ल ’ऐन फ्रैंक द्‌वारा उस दो साल अज्ञातवास के दरम्यान लिखी गई थी| अज्ञातवास उनके पिता मिस्टर ऑटो फ्रैंक का दफ्तर ही था |ऐन फ्रैंक को तेरहवें जन्मदिन पर एक डायरी उपहार में मिली थी ओर उसमें उसने अपनी एक गुड़िया-किट्‌टी को सम्बोधित किया है|

ऐन अज्ञातवास में पूरा दिन -पहेलियाँ बुझाती ,अंग्रेज़ी व फ्रेंच बोलती ,किताबों की समीक्षा करती ,राजसी परिवारों की वंशावली देखती ,सिनेमा ओर थिएटर की पत्रिका पढ़ती और उनमें से नायक-नायिकाओं के चित्र काटते बिताती थी |वह मिसेज वानदान की हर कहानी को बार-बार सुनकर बोर हो जाती थी और मि .डसेल भी पुरानी बातें -घोड़ों की दौड़ ,लीक करती नावें ,चार बरस की उम्र में तैर सकने वाले बच्चे आदि सुनाते रहते|

उसने युद्‌ध संबंधी जानकारी भी दी है -कैबिनेट मंत्री मि .बोल्के स्टीन ने लंदन से डच प्रसारण में यह घोषणा की थी कि युद्‌ध के बाद युद्‌ध के दौरान लिखी गईं डायरियों का संग्रह किया जाएगा ,वायुयानों से तेज़ गोलाबारी ,हज़ार गिल्डर के नोट अवैध घोषित किए गए | हिटलर के घायल सैनिकों में हिटलर से हाथ मिलाने का जोश , अराजकता का माहौल -कार ,साईकिल की चोरी ,घरों की खिड़की तोड़ कर चोरी ,गलियों में लगी बिजली से चलने वाली घड़ियाँ ,सार्वजनिक टेलीफोन चोरी कर लिए गए |

ऐन फ्रैंक ने नारी स्वतंत्रता को महत्त्व दिया,उसने नारी को एक सिपाही के बराबर सम्मान देने की बात कही |एक तेरह वर्षीय किशोरी के मन की बेचैनी को भी व्यक्त किया -जैसे मि .डसेल की झाँट-फटकार ओर उबाऊ भाषण ,दूसरों की बातें सुनकर मिसेज फ्रैंक का उसेडाँटना ओर उस पर अविश्वास करना ,बड़ों के द्‌वारा उसके काम ओर केशसज्जा पर टीका-टिप्पणी करना ,सिनेमा की पत्रिका खरीदने पर फिज़ूलखर्ची का आरोप लगाना ,पीटर द्‌वारा उसके प्रेम को उजागर न करना आदि|

ऐन फ्रैंक की डायरी के द्वारा द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका ,हिटलर एवं नाजियों द्वारा यहूदियों का उत्पीड़न ,डर ,भुखमरी ,गरीबी ,आतंक ,मानवीय संवेदनाएँ ,प्रेम ,घृणा ,तेरह साल की उम्र के सपने ,कल्पनाएँ , बाहरी दुनिया से अलग-थलग पड़ जाने की पीड़ा ,मानसिक ओर शारीरिक जरूरतें ,हँसी-मज़ाक ,अकेलापन आदि का जीवंत रूप देखने को मिलता है|

<u>प्रश्नोत्तर-</u>

1. **"ऐन की डायरी अगर एक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज है, तो साथ ही उसके निजी सुख-दुःख और भावनात्मक उथल-पुथल का भी। इन पृष्ठों में दोनों का फर्क मिट गया है। " इस कथन पर विचार करते हुए अपनी सहमति या असहमति तर्कपूर्वक व्यक्त करें।**

उत्तरः ऐन की डायरी अगर एक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज है, तो साथ ही उसके निजी सुख-दुःख और भावनात्मक उथल-पुथल का भी क्योंकि इसमें ऐन ने द्वितीय विश्वयुद्ध के समय हॉलैंड के यहूदी परिवारों की अकल्पनीय यंत्रणाओं का वर्णन करने के साथ-साथ, वहाँ की राजनैतिक स्थिति एवं युद्ध की विभीषिका का जीवंत वर्णन किया है।वायुयानों से तेज़ गोलाबारी ,हज़ार गिल्डर के नोट अवैध घोषित किए गए , हिटलर के घायल सैनिकों में हिटलर से हाथ मिलाने का जोश , अराजकता का माहौलआदि | साथ ही यह डायरी ,ऐन के पारिवारिक सुख-दुःख और भावनात्मक स्थिति को प्रकट करती है -गरीबी , भुखमरी,अज्ञातवास में जीवन व्यतीत करना ,दुनिया से बिलकुल कट जाना, पकड़े जाने का डर ,आतंक। यह डायरी एक ओर वहाँ के **राजनैतिक वातावरण** में सैनिकों की स्थिति, आचरण व जनता पर होने वाले अत्याचार दिखाती हैं तो दूसरी ओर एक तेरह वर्ष की किशोरी की मानसिकता ,कल्पना का संसार ओर उलझन **को भी** दिखाती है जो ऐन की आपबीती है। इस तरह यह डायरी ऐतिहासिक दस्तावेज होने के साथ-साथ ऐन के जीवन के सुख-दुख का चित्रण भी है ।

2. **"यह साठ लाख लोगों की तरफ से बोलने वाली एक आवाज है। एक ऐसी आवाज जो किसी सन्त या कवि की नहीं, बल्कि एक साधारण-सी लड़की की है।" इल्या इहरनबुर्ग की इस टिप्पणी के संदर्भ में ऐन फ्रैंक की डायरी के पठित अंशों पर विचार करें।**

उत्तरः उस समय यूरोप में लगभग साठ लाख यहूदी थे। द्वितीय विश्वयुद्ध में नीदरलैंड पर जर्मनी का कब्ज़ा हो गया और हिटलर की नाजी फौज ने यहूदियों को विभिन्न प्रकार से यंत्रणाएं देने लगे | उन्हें तरह-तरह के भेदभाव पूर्ण ओर अपमानजनक नियम-कायदों को मानने के लिए बाध्य किया जाने लगा |गेस्टापो) हिटलर की खुफिया पुलिस (छापे मारकर यहूदियों को अज्ञातवास से ढूँढ़ निकालती ओर यातनागृह में भेज देती |अतः चारों तरफ अराजकता फैली हुई थी। यहूदी अज्ञातवास में निरंतर अंधेरे कमरों में जीने को मजबूर थे।उन्हें एक अमानवीय जीवन जीने को बाध्य होना पड़ा| हिटलर की नाजी फौज का खौफ उन्हें हर वक्त आतंकित करता रहता था | ऐन ने डायरी के माध्यम से न केवल निजी सुख-दुःख और भावनाओं को व्यक्त किया,बल्कि लगभग साठ लाख यहूदी समुदाय की दुख भरी जिन्दगी को लिपिबद्ध किया है। इसलिए इल्या इहरनबुर्ग की यह टिप्पणी कि "यह साठ लाख लोगों की तरफ से बोलने वाली एक आवाज है। एक ऐसी आवाज जो किसी संत या कवि की नहीं, बल्कि एक साधारण-सी लड़की की है।'सर्वमान्य एवं सत्य है।

3. ऐन फ्रैंक कौन थी? उसने अपनी डायरी में किस काल की घटनाओं का चित्रण किया है? यह क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर: ऐन फ्रैंक एक यहूदी लड़की थी। उसने अपनी डायरी में द्वितीय विश्वयुद्ध) 1939-1945) के दौरान हिटलर की नाजी फौज ने यहूदियों को विभिन्न प्रकार से यंत्रणाएं दीं |यह डायरी युद्ध के दौरान फैली अराजकता और राजनेतिक परिदृश्य को दर्शाती है |यह नाजियों द्वारा यहूदियों पर किए गए जुल्मों का एक प्रामाणिक दस्तावेज है और साथ ही साथ एक तेरह वर्षीय किशोरी की भावनाएँ और मानसिकता को समझाने में सहायक है।

4. डायरी के पन्ने पाठ में मि .डसेल एवं पीटर का नाम कई बार आया है। इन दोनों का विवरणात्मक परिचय दें।

उत्तरः मि.डसेल -ऐन के पिता के साथ काम करते थे। वे ऐन व परिवार के साथ अज्ञातवास में रहे थे। डसेल उबाऊ लंबे-लंबे भाषण देते थे और अपने जमाने के किस्से सुनाते रहते थे। ऐन को अक्सर डाँटते थे । वे चुगलखोर थे और ऐन की मम्मी से ऐन की सच्ची-झूठी शिकायतें करते थे ।

पीटर -मिस्टर और मिसेज वानदान का बेटा था| वह ऐन का हमउम्र था। ऐन का उसके प्रति आकर्षण बढ़ने लगा था और वह यह मानने लगी थी कि वह उससे प्रेम करती है।ऐन के जन्मदिन पर पीटर ने उसे फूलों का गुलदस्ता भेंट किया था |किंतु पीटर सबके सामने प्रेम उजागर करने से डरता था |वह साधारणतया शांतिप्रिय, सहज व आत्मीय व्यवहार करने वाला था।

5. किट्टी कौन थी? ऐनफ्रैंक ने किट्टी को संबोधित कर डायरी क्यों लिखी?

उत्तरः 'किट्टी'ऐन फ्रैंक की गुड़िया थी। गुड़िया को मित्र की भाँति संबोधित करने से गोपनीयता भंग होने का डर न था।अन्यथा नाजियों द्वारा अत्याचार बढ़ने का डर व उन्हें अज्ञातवास का पता लग सकता था। | ऐन ने स्वयं) एक तेरह वर्षीय किशोरी (के मन की बेचैनी को भी व्यक्त करने का ज़रिया किट्टी को बनाया| वह हृदय में उठ रही कई भावनाओं को दूसरों के साथ बाँटना चाहती थी किंतु अज्ञातवास में उसके लिए किसी के पास समय नहीं था |मि .डसेल की झाँट-फटकार ओर उबाऊ भाषण, दूसरों के द्वारा उसके बारे में सुनकर मम्मी) मिसेज फ्रैंक (का उसेझाँटना ओर उस पर अविश्वास करना ,बड़ों का उसे लापरवाह और तुनकमिजाज मानना और उसे छोटी समझकर उसके विचारों को महत्त्व न देना , उसके हृदय को कचोटता था| अतः उसने किट्टी को अपना हमराज़ बनाकर डायरी में उसे ही संबोधित किया|

6. 'ऐन फ्रैंक की डायरी यहूदियों पर हुए जुल्मों का जीवंत दस्तावेज है'पाठ के आधार पर यहूदियों पर हुए अत्याचारों का विवरण दें।

उत्तरः हिटलर की नाजी सेना ने यहूदियों को कैद कर यातना शिविरों में डालकर यातनाएँ दी। उन्हें गैस चैंबर में डालकर मौत के घाट उतार दिया जाता था। कई यहूदी भयग्रस्तहोकर अज्ञातवास में चले गए जहाँ उन्हें अमानवीय परिस्थितियों में जीना पड़ा |अज्ञातवास में उन्हें सेन्धमारों से भी निबटना पड़ा।। उनकी यहूदी संस्कृति को भी कुचल डाला गया।

7. 'डायरी के पन्ने'पाठ किस पुस्तक से लिया गया है? वह कब प्रकाशित हुई? किसने प्रकाशित कराई?

उत्तरः यह पाठ ऐनफ्रैंक द्वारा डच भाषा में लिखी गई **'द डायरी ऑफ ए यंग गर्ल'** नामक पुस्तक से लिया गया है। यह **1947** में ऐन फ्रैंक की मृत्यु के बाद उसके पिता मिस्टर ऑटो फ्रैंक ने प्रकाशित कराई।

8. "ऐन की डायरी अगर एक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज़ है, तो साथ ही उसके निजी सुख-दुःख और भावनात्मक उथल-पुथल का भी | इन पृष्ठों में दोनों का फर्क मिट गया है|" इस कथन के पक्ष या विपक्ष में उत्तर दीजिए|

उत्तर- ऐतिहासिक पक्ष-

द्वितीय विश्व-युद्ध के समय होलेन्ड के यहूदी परिवारों पर हुए अत्याचार , वहाँ की राजनीतिक स्थिति, युद्ध की विभीषिका का जीवंत वर्णन इसमें है |

गोलाबारी, सैनिकों में हिटलर से हाथ मिलाने का जोश, अराजकता का माहौल आदि भी इसमें वर्णित है|

व्यक्तिगत पक्ष-

गरीबी, भुखमरी, अज्ञातवास के जीवन की समस्याएँ, पकड़े जाने का डर, तेरह वर्ष की किशोरी की मानसिकता, कल्पना का संसार और उलझन |

9.. ऐन फ्रैंक ने अपनी डायरी में स्त्रियो के बारे में क्या कहा है ? उसकी समीक्षा करते हुए बताइए स्थितियो में कितना परिवर्तन आया है?

उत्तर: ऐन यह मानती है कि पुरुष अपनी शारीरिक क्षमता के कारण नारियों पर शासन करते है नारी को वह समान और अधिकार प्रपट नहीं होता जिसकी वह अधिकारिणी है प्रसव के समय नारी जिस पीड़ा से गुजरती है वह पीड़ा युद्ध में घायल सैनिक से कम नहीं। प्रकृति प्रदत्त प्रजनन शक्ति का अधिकार स्त्री को ही प्राप्त है , किन्तु यह अधिकार और सम्मान पुरुषों ने छीन लिया है जिससे संसार जनाधिक्य और उससे उत्पन्न समस्या से जूझ रहा है। ऐन मानती है की संसार में खूबसूरत और सौंदर्यमयी औरतों का बहुत योगदान है। ऐन अपने समय से बहुत आगे देखती है और वह समस्या का गहराई से विश्लेषण करती है।

वर्तमान स्थिति की प्रष्ठभूमि में छात्र अपना विचार व्यक्त करें

10. **'ऐन की डायरी अगर एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है तो साथ ही उसके निजी जीवन के भावनात्मक उथल-पुथल का भी लेकिन दोनों का फर्क दिखाई नहीं पड़ता' द्वितीय विश्व युद्ध की प्रष्ठभूमि में इस कथन की समीक्षा कीजिये?**

उत्तर द्वितय विश्व युद्ध के समय हिटलर और उसकी नाजी सेना के द्वारा यहूदियों पर भयावह अत्याचार किए गए थे। फ्रैंक परिवार अपनी प्राण रक्षा के लिए अज्ञात वास में रहने के लिए विवश हो गया था लगभग तीन साल के मानसिक यातना से गुजरने वाली फ्रैंक की छोटी बेटी ऐन ने कित नामक गुड़िया को संबोधित करते हुए लिखी गई है। इस डायरी में भय ,आतंक, भूख, प्यार, मानवीय संवेदनाएं, प्रेम, घृणा,बढ़ती उम्र की तकलीफ़ें, हवाई हमले का डर, तेरह साल की उम्र के सपने, कल्पनाएं, बाहरी दुनिया

से अलग-थलग पड़ जाने की पीड़ा, मानसिक और शारीरिक जरूरतें, हंसी मज़ाक, युद्ध की पीड़ा, अकेलापन सब कुछ है। इस प्रकार दोनों में भेद करना संभव नहीं है।

11. ऐन के अनुसार युद्ध में घायल सैनिक गर्व का अनुभव क्यों कर रहे थे ?

उत्तर -ऐन के अनुसार युद्ध में घायल सैनिक अपने जख्मों को दिखाते हुए गर्व का अनुभव कर रहे थे | जिसके जितने ज्यादा घाव थे वे उतने ज्यादा गर्व कर रहे थे | जिन्होंने देश की रक्षा के लिए जो गोलियां खाई थी या फिर बर्फ पर चलते-चलते अपने पाँव गवां दिए थे उसे लेकर वे गर्व का अनुभव कर रहे थे |

12. पाठ में ऐन द्वारा औरत द्वारा बच्चे को जन्म देने की पीड़ा की तुलना किससे की है ? क्या यह ?ठीक है

उत्तर -औरत द्वारा बच्चे को जन्म देने की पीड़ा की तुलना सिपाही से की गई है औरत की पीड़ा | सिपाही से बढकर है| हमारे विचार से दोनों के कर्म क्षेत्र भिन्न हैं इसलिए इनकी तुलना नहीं की जा सकती स्त्री बच्चे को जन्म देकर नया जन करती है जबकि सिपाही अपने देश के लिए बलिदान दे देता है।

13. आपकी दृष्टि में स्त्री को माँ बनते समय किन किन स्थितियों से गुजरना पड़ता है ?अपने विचार स्पष्ट करें|

उत्तर- हमारी दृष्टि में स्त्री को माँ बनते समय शारीरिक और मानसिक यंत्रणा से गुज़रना पड़ता है उसे अपना सौंदर्य भी दांव पर लगाना पड़ता है। अपना सर्वस्व लुटाकर भी वह बच्चे को जन्म देकर प्रसन्नता का अनुभव कराती है।

14. "काश, कोई तो होता जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से समझ पाता। अफ़सोस, ऐसा व्यक्ति मुझे अब तक नहीं मिला...।" क्या आपको लगता है कि ऐन के इस कथन में उसके डायरी लेखन का कारण छिपा है?

उत्तर :हमें लगता है कि अकेलापन ही ऐन फ्रैंक के डायरी लेखन का कारण बना। यद्यपि वह अपने परिवार और वॉन दंपत्ति के साथ अज्ञातवास में दो वर्षों तक रही लेकिन इस दौरान किसी ने उसकी भावनाओं को समझने का प्रयास नहीं किया। पीटर यद्यपि उससे प्यार करता है लेकिन केवल दोस्त की तरह। जबकि हर किसी की शारीरिक जरूरतें होती हैं लेकिन पीटर उसकी इस ज़रूरत को नहीं समझ सका। मातापिता और बहन ने भी कभी उसकी भाव- को गंभीरता से नहीं समझी शायद इसी कारण वह डायरी लिखने लगी।

15. "प्रकृति-प्रदत्त प्रजनन-शक्ति के उपयोग का अधिकार बच्चे पैदा करें या न करें अथवा कितने बच्चे पैदा करें-इसकी स्वतंत्रता स्त्री से छीन कर हमारी विश्व-व्यवस्था ने न सिर्फ स्त्री को व्यक्तित्व-विकास के अनेक अवसरों से वंचित किया है बल्कि जनांधिक्य की समस्या भी पैदा की है।" ऐन की डायरी

के 13 जून, 1944 के अंश में व्यक्त विचारों के संदर्भ में इस कथन का औचित्य ढूँढ़ें।
उत्तर-ऐन का मानना है कि पुरुषों ने औरतों पर शुरू में शारीरिक बल:, आर्थिक आजादी आदि के आधार पर शासन किया। वे अपनी मर्जी से हर कार्य करते रहे हैं। औरतें अब तक अपनी बेवकूफ़ी के कारण यह अन्याय सहती रही हैं। अब यह स्थिति बदल गई है। शिक्षा, काम और प्रगति ने औरतों को जागरूक किया है। कुछ देशों ने उन्हें बराबरी का हक दिया है। समाज में संवेदनशील पुरुषों व औरतों ने इस अन्याय को गलत माना है। आज औरतें पूर्ण आजादी चाहती हैं।

16.संवाद-योजना की दृष्टि से यह डायरी सर्वथा सफल एवं सार्थक रही है, सिद्ध कीजिए।
उत्तर- यद्यपि डायरी में संवाद-योजना नहीं होती। लेखक या लेखिका केवल आत्मपरक शैली में घटनाओं का क्रम से वर्णन करते हैं। लेकिन ऐन की इस डायरी की संवाद-योजना अनूठी है। 19 मार्च, 1943 को लिखी चिट्ठी में उसने संवाद-योजना का प्रयोग किया है। जब हिटलर घायल सैनिकों से बातचीत कर रहे थे और हालचाल जान रहे थे तब संवाद-योजना का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत है इस संवाद-योजना का एक उदाहरण"मेरा नाम हैनरिक शापेल है।" "आप कहाँ जख्मी हुए थे?" "स्नालिनग्राद के पास।" 'किस किस्म का घाव है यह?" "दोनों पाँव बर्फ की वजह से गल गए हैं और बाएँ बाजू में हड्डी टूट गई है। इस प्रकार इस डायरी की संक्षिप्त संवाद योजना स्वाभाविक एवं सार्थक बन पड़ी है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन रायपुर संभाग

प्रथम प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2021-22

विषय-हिंदी (आधार) विषय-कोड-302

कक्षा -12वीं

निर्धारित अवधि-2 घंटे   कुल अंक 40

*निम्नलिखित निर्देशों को सावधानी से पढ़िए, और उनका पालन कीजिए।

*इस प्रश्न-पत्र में कुल 7 प्रश्न पूछे गए हैं| सभी के वर्णनात्मक उत्तर लिखने है|

*प्रश्नों में आन्तरिक विकल्प भी दिए गए हैं, निर्देशानुसार उत्तर लिखिए |

प्रश्न संख्या	कार्यालयी हिंदी एवं रचनात्मक लेखन	कुल अंक 20
1.	निम्नलिखित दिए गए 3 शीर्षकों में से किसी 1 शीर्षक का चयन कर लगभग 200 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए | क. ऑनलाइन शिक्षा	5X1=5

	ख. हर समस्या का हल है ग. कोरोना एवं मास्क	
2.	कोरोना वायरस महामारी के इस समय में अपने इलाके में स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु अपने राज्य के स्वास्थ्य विभाग के सचिव को एक पत्र लिखिए। **अथवा** भारतीय युवाओं में क्रिकेट के प्रति अत्याधिक लगाव की चर्चा करते हुए अन्य खेलों के प्रति उदासीनता पर किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।	5X1=5
3.(i)	कहानी के पात्रों के संवाद लिखते समय क्या-क्या ध्यान रखना चाहिए-? **अथवा** .साहित्य की अन्य विधाओं और नाटकों में प्रमुख अंतर बताइए|	3X1=3
(ii)	कथानक किसे कहते हैं? **अथवा** एक नाटककार को रचनाकार होने के साथ कुशल संपादक होना क्यों आवश्यक है?	2X1=2
4.(i)	फीचर और समचार में क्या अंतर है? **अथवा** संपादकीय किसे कहते हैं?	3X1=3
(ii)	फ्रीलांसर या स्वतंत्र पत्रकार किसे कहते हैं ? **अथवा** समाचार किस शैली में लिखे जाते है?	2X1=2
प्रश्न संख्या	**पाठ्य पुस्तक आरोह भाग - 2 तथा अनुपूरक पाठ्य-पुस्तक वितान भाग-2**	**कुल अंक 20**
5.	**निम्नलिखित 3 प्रश्न में से कोई 2 प्रश्नों के उत्तर लिखिए |**	**3X2=6**
(i)	उषा का जादू कैसा है और कैसे टूटता है ?	3
(ii)	करूण रस में वीर रस की अनुभुति से क्या अर्थ है ?	3
(iii)	रूबाइयाँ पाठ में कवि ने चाँद का टुकड़ा किसे कहा है और क्यों ?	3
6.	**निम्नलिखित 4 प्रश्न में से कोई 3 प्रश्नों के उत्तर लिखिए |**	**3X3=9**
(i)	सफ़िया को अटारी में समझ ही नहीं आया कि कहाँ लाहौर खत्म हुआ और किस जगह अमृतसर शुरू हो गया, ऐसा क्यों?	
(ii)	अंबेडकर की कल्पना का समाज कैसा होगा?	

(iii)	लुट्टन ने अपना गुरु किसे माना और क्यों?	
(iv)	नमक' कहानी में 'नमक' किस बात का प्रतीक है? इस कहानी में 'वतन' शब्द का भाव किस प्रकार दोनों तरफ के लोगों को भावुक करता है?	
7.	**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए |**	**3+2=5**
(i)	"टूटे फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों के भी दस्तावेज होते हैं।" इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए ? **अथवा** "ऐन की डायरी अगर एक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज़ है, तो साथ ही उसके निजी सुख-दुःख और भावनात्मक उथल-पुथल का भी | इन पृष्ठों में दोनों का फर्क मिट गया है|" इस कथन के पक्ष या विपक्ष में उत्तर दीजिए|	3
(ii)	ऐन फ्रैंक ने अपनी डायरी में स्त्रियो के बारे में क्या कहा है ? उसकी समीक्षा करते हुए बताइए कि वर्तमान स्थितियो में कितना परिवर्तन आया है? **अथवा** सिन्धु सभ्यता साधन सम्पन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था '| प्रस्तुत कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं?	2

प्रथम प्रतिदर्श प्रश्न पत्र (2021-22)
अंक योजना हिन्दी (केन्द्रिक)
कक्षा-बारहवीं
उत्तर-संकेत/ बिंदु /निर्धारित अंक विभाजन

1. क).विषय वस्तु -2अंक
   ख).भाषा शैली -1 अंक
   ग).रचनात्मकता -2अंक

2..क)आरम्भ और अंत की औपचारिकता- 1अंक

ख)विषय वस्तु -3 अंक

ग)भाषा शैली -1अंक

3.(i) उत्तर-पात्रों के संवाद ,उनके स्वभाव और पूरी पृष्ठभूमि के अनुकूल ही होने चाहिए\| वह उनके विश्वासों, आदर्शों तथा स्थितियों के भी अनुकूल होने चाहिए\|इन्हें सुनकर ही श्रोता को पता चल जाए कि कौन बोल रहा है, और उसकी पृष्ठभूमि क्या है?

अथवा

उत्तर- साहित्य की अन्य विधाओं जैसे कहानी या कविता को पढ़ते हुए या सुनते हुए कभी भी बीच में हम इसे रोक सकते हैं और अपने समय के अनुसार उसे फिर शुरू कर सकते हैं| नाटकों में ऐसे नहीं होता|नाटक का कोई भाग देख कर शेष भाग बाद में नहीं देखा जा सकता है|

(ii) उत्तर-कथानक कहानी का केंद्रीय बिंदु होता है | यह कहानी का वह संक्षिप्त रूप होता है जिसमें प्रारंभ से अंत तक कहानी की सभी घटनाओं और पात्रों का उल्लेख किया गया हो |

अथवा

उत्तर -एक नाटककार को पहले अनेक घटनाओं, स्थितियों व दृश्य का चुनाव करने वाला होना चाहिए| फिर उसे ऐसे क्रम में रखा जाए कि कहानी का उचित विकास हो और घटनाएं आगे बढ़े, इसलिए नाटककार एक कुशल संपादक भी होता है|

4.(i) - उत्तर- फीचर और समचार में अंतर: समाचार में रिपोर्टर को अपने विचरों को डालने की स्वतंत्रता नहीं होती, जबकि फीचर में लेखक को अपनी राय , दृष्टिकोण और भावनाओं को जाहिर करने का अवसर होता है । समाचार उल्टा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं, जबकि फीचर लेखन की कोई सुनिश्चित शैली नहीं होती । फीचर में समाचारों की तरह शब्दों की सीमा नहीं होती। आमतौर पर फीचर , समाचार रिपोर्ट से बड़े होते हैं । पत्र-पत्रिकाओं में प्राय: 250 से 2000 शब्दों तक के फीचर छपते हैं ।

अथवा

उत्तर- संपादक द्वारा किसी प्रमुख घटना या समस्या पर लिखे गए विचारात्मक लेख को, जिसे संबंधित समाचारपत्र की राय भी कहा जाता है, संपादकीय कहते हैं। इसे अग्रलेख व समाचार पत्र की आत्मा भी कहा जाता है।

(ii) **फ्रीलांसर या स्वतंत्र पत्रकार**- ये स्वतंत्र पत्रकार होते हैं, जो भुगतान के बदले समाचार उपलब्ध कराते हैं।

अथवा

उत्तर- समाचार उलटा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं, यह समाचार लेखन की सबसे उपयोगी और लोकप्रिय शैली है। इस शैली का विकास अमेरिका में गृह-यद्ध के दौरान हुआ। इसमें महत्त्वपूर्ण घटना का वर्णन पहले प्रस्तुत किया जाता है, उसके बाद महत्त्व की दृष्टि से घटते क्रम में घटनाओं को प्रस्तुत कर समाचार का अंत होता है। समाचार में इंट्रो, बॉडी और समापन के क्रम में घटनाएँ प्रस्तुत की
जाती हैं |

5.(i) उत्तर-संकेत- उषा का जादू बहुत ही आकर्षक है | इस जादू के कारण आकाश में प्रतिपल परिवर्तन हो रहा है | सूर्योदय होने पर उषा का यह जादू टूट जाता है |

(ii) उत्तर-संकेत- करुण रस का स्थायीभाव शोक होता है, जबकि वीर रस का उत्साह | इस प्रकार जब शोक या दुःख में डूबे हुए व्यक्ति के साथ कुछ ऐसी घटना हो कि उसमें उत्साह का संचार हो जाए, तो इसे करूण रस में वीर रस की अनुभुति कहते हैं | जिसप्रकार संजीवनी लेकर आते हनुमान को देखकर शोक से व्याकुल समस्त बन्दर-भालुओं में उत्साह का संचार हो जाता है |

(iii) **उत्तर-संकेत-** कवि ने चाँद का टुकड़ा बच्चे कहा है, क्योंकि अपनी माँ की गोद में खेलता और खिलखिलाता हुआ बच्चा चाँद के टुकड़े की तरह अमूल्य, सुंदर और आकर्षक होता है |

6.(i) उत्तर-अमृतसर व लाहौर दोनों की सीमाएँ साथ लगती हैं। दोनों की भौगोलिक संरचना एक जैसी है। दोनों तरफ के लोगों की भाषा एक है। एक जैसी शक्लें हैं तथा उनका पहनावा भी एक जैसा है। वे एक ही लहजे से बोलते हैं तथा उनकी गालियाँ भी एक जैसी ही हैं। इस कारण सफ़िया को अटारी में समझ ही नहीं आया कि कहाँ लाहौर खत्म हुआ और किस जगह अमृतसर शुरू हो गया।

(ii) उत्तर –अंबेडकर का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भाईचारे पर आधारित होगा। सभी को विकास के समान अवसर मिलेंगे तथा जातिगत भेदभाव का नामोनिशान नहीं होगा। समाज में कार्य करने वाले को सम्मान मिलेगा।

(iii) उत्तर-लुट्टन ने कुश्ती के दांव पेच किसी गुरु से नहीं बल्कि ढोल की आवाज से सीखे थे। ढोल से निकले हुए ध्वनियाँ उसे दावं पेंच सीखती हुई और आदेश देती हुई प्रतीत होती थी। जब ढोल पर थाप पढ़ती थी तो पहलवान की नसें उत्तेजित हो जाती थी। वह लड़ने के लिए मचलने लगता था।

(iv) उत्तर-'नमक' कहानी में 'नमक' भारत और पाकिस्तान के विभाजन के बाद इन अलग-अलग देशों में रह रहे लोगों के परस्पर प्यार का प्रतीक है जो विस्थापित और पुनर्वासित होकर भी एक-दूसरे के दिलों से जुड़े हैं। इस कहानी में 'वतन' शब्द का भाव एक-दूसरे को याद करके अतीत की मधुर यादों में खो देने का भाव उत्पन्न करके दोनों तरफ के लोगों को भावुक कर देता है। दोनों देशों के राजनीतिक संबंध अच्छे-बुरे जैसे भी हों, इससे उनका कुछ लेना-देना नहीं होता।

7 (i) ऐतिहासिक इमारतों में बीते हुए जीवन के चिन्ह महसूस होते हैं।

अथवा

उत्तर- ऐतिहासिक पक्ष-द्वितीय विश्व-युद्ध के समय होलेन्ड के यहूदी परिवारों पर हुए अत्याचार , वहाँ की राजनीतिक स्थिति, युद्ध की विभीषिका का जीवंत वर्णन इसमें है |

गोलाबारी, सैनिकों में हिटलर से हाथ मिलाने का जोश, अराजकता का माहौल आदि भी इसमें वर्णित है|

व्यक्तिगत पक्ष- गरीबी, भुखमरी, अज्ञातवास के जीवन की समस्याएँ, पकड़े जाने का डर, तेरह वर्ष की किशोरी की मानसिकता, कल्पना का संसार और उलझन |

(ii)उत्तर: ऐन यह मानती है कि पुरुष अपनी शारीरिक क्षमता के कारण नारियों पर शासन करते है नारी को वह समान और अधिकार प्रपट नहीं होता जिसकी वह अधिकारिणी है प्रसव के समय नारी जिस पीड़ा से गुजरती है वह पीड़ा युद्ध में घायल सैनिक से कम नहीं। प्रकृति प्रदत्त प्रजनन शक्ति का अधिकार स्त्री को ही प्राप्त है , किन्तु यह अधिकार और सम्मान पुरुषों ने छीन लिया है जिससे संसार जनाधिक्य और उससे उत्पन्न समस्या से जूझ रहा है। ऐन मानती है की संसार में खूबसूरत और सौंदर्यमयी औरतों का बहुत योगदान है। ऐन अपने समय से बहुत आगे देखती है और वह समस्या का गहराई से विश्लेषण करती है।

अथवा

उत्तर- दूसरी सभ्यताएँ राजतंत्र और धर्मतंत्र द्वारा संचालित थी । वहाँ बड़े-बड़े सुन्दर महल, पूजा स्थल, भव्य मूर्तियाँ, पिरामिड और मन्दिर मिले हैं। राजाओं ,धर्माचार्यों की समाधियाँ भी मौजूद हैं। किंतु सिन्धु सभ्यता , एक साधन-सम्पन्न सभ्यता थी परन्तु उसमें राजसत्ता या धर्मसत्ताके चिह्न नहीं मिलते। वहाँ की नगर योजना,वास्तुकला,मुहरों,ठप्पों,जल-व्यवस्था,साफ-सफाई और सामाजिक व्यवस्था आदि की एकरूपताद्वारा उनमें अनुशासन देखा जा सकता है| सांस्कृतिक धरातलपर यह तथ्य सामने आता है कि सिन्धु घाटी की सभ्यता, दूसरीसभ्यताओं से अलग एवं स्वाभाविक, किसी प्रकार की कृत्रिमता एवं आडंबररहितथी जबकि अन्य सभ्यताओं में राजतंत्र और धर्मतंत्र की ताकत को दिखाते हुए भव्य महल , मंदिर ओर मूर्तियाँ बनाई गईं किंतु सिन्धु घाटी सभ्यता की खुदाई में छोटी-छोटी मूर्तियाँ ,खिलौने ,मृद-भांड ,नावें मिली हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सिन्धु सभ्यता सम्पन्न थी परन्तु उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था।

==========

केंद्रीय विद्यालय संगठन ,रायपुर संभाग

द्वितीय आदर्श प्रश्न पत्र द्वितीय सत्र 2022

कक्षा - बारहवीं

समय 2:00 घण्टे विषय – हिंदी आधार (302) अंक- 40

सामान्य निर्देश:

1.दिए गए निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उनका अनुपालन कीजिए ।

2. इस प्रश्नपत्र में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं ।

3. इस प्रश्नपत्र में कुल 7 प्रश्न हैं , सभी प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है ।

4. प्रश्नों में आंतरिक विकल्प भी दिए गए हैं , उत्तर सावधानीपूर्वक लिखिए।

कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन

प्रश्न1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए। **5**

क-काम पर जाते बच्चे

ख- उगता सूरज

ग- सजग नागरिक

प्रश्न2. समाज में मास्क पहनने और दो गज दूरी के प्रति लोगों को जागरूक करते हुए किसी दैनिक समाचार के संपादक को पत्र लिखिए । 5

अथवा

कोविद -19 अनलॉक में विद्यालयों को पुन: शुरू करने का निवेदन करते हुए अपने राज्य के मुख्यमंत्री को पत्र लिखिए ।

प्रश्न3. (क).कहानी और नाटक में क्या-क्या असमानताएँ होती है ? **3**

अथवा

कहानी का नाट्य रुपांतरण करते समय दृश्य विभाजन कैसे करते हैं ?

(ख) नाटक , साहित्य की अन्य विधाओं से अलग है, कैसे ? **2**

अथवा

रेडियो नाटक में किन –किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है ?

प्रश्न4. (क) समाचार लेखन की उल्टा पिरामीड शैली से आप क्या समझते हैं ? **2**

अथवा

किसी घटना को समाचार बनने के लिए किन बातों का होना जरुरी है ?

(ख) एक आदर्श फीचर लेखन की विशेषताएँ लिखिए । **3**

अथवा

विशेष लेखन से आप क्या समझते हैं ,विशेष लेखन कब लिखा जाता है ?

पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-दो एवं पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-दो

प्रश्न 5. 'आरोह भाग दो' के 'काव्य - खण्ड' से निम्नलिखित में से दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :- 6

(क) 'उषा" कविता के आधार पर सूर्योदय से ठीक पहले के प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण कीजिए।

(ख) फिराक गोरखपुरी रचित रुबाइयाँ की विशेषताएँ लिखिए

(ग) शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है?

प्रश्न 6. 'आरोह भाग दो' के 'गद्य - खण्ड' से निम्नलिखित में से तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :- 9

(क) 'पहलवान की ढोलक' कहानी में महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में क्या अंतर होता था ?

(ख) जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का आधार क्यों नहीं माना जा सकता? 'जातिप्रथा और श्रम विभाजन पाठ से उदाहरण देकर समझाइए।

(ग) आदर्श समाज की क्या-क्या विशेषताएँ होती हैं?-'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' अंश के आधार पर लिखिए।

(घ) नमक ले जाने के बारे में साफिया के मन में उठे द्वंद्वो के आधार पर उनकी चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए ?

प्रश्न7. पाठ्य पुस्तक 'वितानभाग 2' के निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

(क)'किट्टी कौन थी ? ऐन फ्रैंक ने किट्टी को संबोधित करते हुए डायरी क्यों लिखी ? **3**

अथवा

'सिंधु घाटी की सभ्यता' साधन सम्पन्न थी। कैसे?

(ख) 'अतीत में दबे पाँव' पाठ में लेखक ने प्राचीन लैंडस्कैप किसे कहा है ? इसकी क्या विशेषता है ? **2**

अथवा

'ऐन की डायरी' के अंश से प्राप्त होने वाली तीन महत्वपूर्ण जानकारियों का उल्लेख कीजिए।

केंद्रीय विद्यालय संगठन ,रायपुर संभाग

द्वितीय आदर्श प्रश्न पत्र द्वितीय सत्र 2022

कक्षा - बारहवीं

समय2:00 घण्टे **विषय – हिंदी आधार (302)** **अंक- 40**

अंक योजना

सामान्य निर्देश :-

-अंकयोजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अत्यधिक वस्तुनिष्ट बनाना है ।

- वर्णनात्मक प्रश्नों के अंकयोजना में दिए गए उत्तर केवल सुझावात्मक एवं सांकेतिक है ।

- इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न उपयुक्त उत्तर पर भी अंक दिए जाने चाहिए ।

- मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं बल्कि अंक योजना के अनुसार किया जाना चाहिए ।

कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन

प्रश्न1. किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए। **5**

भूमिका -1 अंक

विषय्वस्तु-3 अंक

भाषा-शैली-1 अंक

प्रश्न2. दो में से किसी एक ऑपचारिक विषय पर पत्र लेखन । 5

आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ – 1 अंक
विषयवस्तु - 3 अंक
भाषा - 1 अंक

प्रश्न3. (क).कहानी और नाटक में असमानताएँ **3**

-कहानी कही या पढी जाती है नाट्क मंच पर प्रस्तुत किया जाता है , कहानी का सम्बंध लेखक और पाठक से जबकि नाटक लेखक,निर्देशक,पात्र,दर्शक,श्रोता से , नाटक में मंच सज्जा , प्रकाश व्यवस्था जबकि कहानी के लिए नहीं । नाटक में अलग –अलग दृश्य होते हैं , अभिनय होता है ।

अथवा

कहानी का नाट्य रुपांतरण करते समय दृश्य विभाजन निम्न प्रकार से किया जाता है :-
-कहानी की कठावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित करके दृश्य बनाए जाते हैं।
-प्रत्येक दृश्य कथानक के अनुसार होते हैं ।
-एक स्थान और समय पर घट रही घटना को एक ही दृश्य में दिखाया जाता है ।
-प्रत्येक दृश्य का पूरा विवरण एक साथ होता है । सावधानी पूर्वक सभी बातों का समावेश ।

(ख) नाटक , साहित्य की अन्य विधाओं से अलग है- **2**

नाटक एक दृश्य विधा है । अन्य विधाओं की अपेक्षा नाटक के तत्त्व भिन्न होते हैं , नाटक लिखित रुप में अपनी दृश्यता की ओर बढ़ता है ।नाटक बहु आगामी होता है , यह पढ़ने, सुनने ,देखने में आनंद की अनुभूति कराता है । नाटक का मंचन ही उसकी संपूर्णता है ।

अथवा

रेडियो नाटक में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है :

-कोई घटना प्रधान कहानी न हो ।
-रेडियो नाटक की अवधि 15-30 मिनट ।
- पात्रों की सीमित संख्या ।

प्रश्न4. (क) समाचार लेखन की उल्टा पिरामिड शैली **2**

समाचार लेखन की बुनियादी, लोकप्रिय तथा उपयोगी शैली को उल्टा पिरामिड – शैली कहा जाता है ।

इसके तीन भाग होते हैं – इंट्रो या मुखड़ा , बाँडी , समापन ।

अथवा

किसी घटना को समाचार बनने के लिए नवीनता, निकटता, जनरुचि , प्रभाव आदि का होना जरुरी है ।

(ख) एक आदर्श फीचर लेखन की विशेषताएँ :- **3**

- पात्रों की मौजुदगी से सजीव बनाया जा सकता है ।, कहानी को पात्रों के माध्यम से कहने की कोशिश करनी चाहिए । पाठक को देखने की अनुभूति का अहसास कराना चाहिए । फीचर को मनोरंजक के साथ-साथ सूचनात्मक भी होना चाहिए । फीचर का कोई तथ्यगत ढ़ाँचा नहीं होता ।

अथवा

विशेष लेखन :- किसी खास विषय पर सामान्य से हटकर किया गया लेखन । ।किसी खास मुद्दे को जीवंत करने के लिए लिखा जाता है । समसामयिक ज्वलंत मुद्दे या किसी विशेष विषय जैसे व्यापार, राजनीति,विदेश नीति, अर्थ, खेल, वाणिज्य आदि विषयों के लिए विशेष लेख लिखे जाते हैं ।

पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-दो एवं पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-दो

प्रश्न 5. 'आरोह भाग दो' के 'काव्य - खण्ड' से निम्नलिखित में से दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :- 6

(क) 'उषा" कविता के आधार पर सूर्योदय से ठीक पहले के प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण सुबह समय सूर्य उदित होते समय ऐसा लगता है मानो कोई नीले सरोवर में स्नान करके बाहर आ रहा हो । किरणें धीरे-धीरे आसमान में छा जाती है । ओस के कणों पर सूऊर्य की किरनें अदभुत दृश्य उत्पन्न करती है, प्रकृति के दृश्य पल-पल बदलते हैं। पक्षी चहचहाने लगते हैं जीवन सजीव हो उठता है ।

जैसे-जैसे शाम होती है सूर्य एक थके हुए पथिक की भाँति धीमि गति से अस्त होने लगता है । पक्षी घोंसले की तरफ लौटने लगते हैं । सारा जीव-जगत भी आराम करने की तैयारी करने लगताहै ।

(ख) फिराक गोरखपुरी रचित रुबाइयाँ की विशेषताएँ

फिराक की रुबाई में हिंदी का एक घरेलू रुप दिखता है । सामान्य बोलचाल के शब्दों के प्रयोग तथा भारतीय परम्परा व जीवन पद्धति को विषय बनाया गया है रुबाई ऊर्दू फारसी का एक छंद या लेखन शैली है । इसकी पहली, दूसरी और चौंथी पंक्ति में तुक (काफिया) मिलाया जाता है। तथा इसकी तीसरी पंक्ति स्वतंत्र होती है।

(ग) शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव कहा गया है क्योंकि लक्ष्मण के मूर्छित होने के कारण राम विलाप करने लगते हैं तो सम्पूर्ण वानर वीर भी शोक ग्रस्त हो विलाप करते हुए राम के चारों ओर एकत्र हो गए। इसी बीच हनुमान का हिमालय पर्वत लेकर आगमन नई आशा का संचार कर देता है। वानर वीर उत्साहित होकर उछल-कूद करने लगते हैं ।

प्रश्न 6. 'आरोह भाग दो' के 'गद्य - खण्ड' से निम्नलिखित में से तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए:- 9

(क) 'पहलवान की ढोलक' कहानी में महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में अंतर होता था –

सूर्योदय का दृश्य-महामारी फैलने की वजह गाँव में सूर्योदय होते ही लोग काँखते-कूंखते, कराहते अपने घरों से निकलकर अपने पड़ोसियों व आत्मीयों को ढाँडस देते थे। इस प्रकार उनके चेहरे पर चमक बनी रहती थी। वे बचे हुए लोगों को शोक न करने की बात कहते थे।

सूर्यास्त का दृश्य-सूर्यास्त होते ही सभी लोग अपनी-अपनी झोपड़ियों में घुस जाते थे। उस समय वे चूँ तक नहीं करते थे। उनके बोलने की शक्ति भी जाती रहती थी। यहाँ तक कि माताओं में दम तोड़ते पुत्र को अंतिम बार 'बेटा!" कहकर पुकारने की हिम्मत भी नहीं होती थी। ऐसे समय में पहलवान की ढोलक की आवाज रात्रि की विभीषिका को चुनौती देती रहती थी।

(ख) जातिप्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के निम्नलिखित तर्क हैं –

2. जाति प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन भी कराती है। सभ्य समाज में श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में विभाजन अस्वाभाविक है।
3. जाति प्रथा में श्रम विभाजन मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। इसमें मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा निजी क्षमता का विचार किए बिना किसी दूसरे के द्वारा उसके लिए पेशा निर्धारित कर दिया जाता है। यह जन्म पर आधारित होता है।
4. भारत में जाति प्रथा मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है, भले ही वह पेशा उसके लिए अनुपयुक्त या अपर्याप्त क्यों न हो। इससे उसके भूखों मरने की नौबत आ जाती है।

(ग) लेखक का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भ्रातृत्त पर आधारित होगा। समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए कि कोई भी परिवर्तन समाज में तुरंत प्रसारित हो जाए। ऐसे समाज में सबका सब कार्यों में भाग होना चाहिए तथा सबको सबकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सबको संपर्क के साधन व अवसर मिलने चाहिए। यही लोकतंत्र है। लोकतंत्र मूलत: सामाजिक जीवनचर्या की एक रीति व समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। आवागमन, जीवन व शारीरिक सुरक्षा की स्वाधीनता, संपत्ति, जीविकोपार्जन के लिए जरूरी औजार व सामग्री रखने के अधिकार की स्वतंत्रता पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होती, परंतु मनुष्य के सक्षम व प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए लोग तैयार नहीं हैं। इसके लिए व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता देनी होती है। इस स्वतंत्रता के अभाव में व्यक्ति 'दासता' में जकड़ा रहेगा।

(घ) नमक ले जाने की बात सोचकर सफ़िया द्वंद्वग्रस्त हो जाती है। उसके भाई ने जब उसे यह बताया कि नमक ले जाना गैरकानूनी है तो वह और अधिक परेशान हो जाती है। चूंकि वह आत्मविश्वास से भरी हुई है इसलिए वह मन में ठान लेती है कि नमक पाकर ही रहेगी। उसमें किसी भी प्रकार का दुराव या छिपाव नहीं है। वह देश प्रेमिका है। दूसरों की भावनाओं का ख्याल वह रखती है, उसमें भावुकता है इसी कारण भाई जब नमक ले जाने से मना कर देता है तो वह रो देती है।

प्रश्न7. पाठ्य पुस्तक 'वितानभाग 2' के निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

(क)'किट्टी ऐन फैंक की काल्पनिक निर्जीव गुड़िया थी । ऐन फैंक ने किट्टी को सम्बोधित कर अपने मन में उठे विचारों , भावनाओं को बाँटना चाहती है। ऐन के परिवार में उनके विचारों को सुनने वाला कोई नहीं है ,वह सबसे छोटी है जिससे मन की जिज्ञासा को शांत करने वाला भी कोई नहीं है । छोटे होने के कारण उसकी बातों को कोई सुनने का

भी प्रयास नहीं करता । किशोर वय की बालिका के मन में तरह-तरह की कल्पनाएँ जन्म लेती है ,पर साथ खेलने वाले भी कोई नहीं है । **3**

अथवा

- सिंधु घाटी सभ्यता बहुत ही सम्पन्न सभ्यता थी । सिंधु घाटी सभ्यता में हर तरह के साधन जैसे पक्की सड़कें, खाद्यान्न , निवास स्थान , यातायात के साधन उपलब्ध थे । इतना होने के बाद भी इस सभ्यता में किसी तरह का दिखावा नहीं था । कोई बनावटीपन या आडंबर नहीं था । राजा महाराज के कोई भव्य प्रासाद या मुकुट प्राप्त नहीं हुआ । जो भी निर्माण कार्य इस सभ्यता के लोगों ने किया वह सुनियोजित और मनोहारी था । निर्माण शैली साधारण होने के बाद भी दिखावे से कोसों दूर थे । जो वस्तु जिस रूप में सुंदर लग सकती थी, उसका निर्माण उसी ढ़ंग से व्यवस्थित रूप में किया गया है ।

(ख) 'अतीत में दबे पाँव' पाठ में लेखक ने प्राचीन लैंडस्कैप बौद्ध स्तूप को कहा गया है । 2

मुअनजो-दड़ो के सबसे ऊँचे चबूतरे पर स्थापित है , इसी बौद्ध स्तूप की खुदाई करते हुए सिंधु-सभ्यता के बारे में ज्ञात हुआ । इस चबूतरे को गढ़ कहा जाता है ।

अथवा

'ऐन की डायरी' के अंश से प्राप्त होने वाली तीन महत्वपूर्ण जानकारियाँ निम्नलिखित हैं –

1. हिटलर द्वारा यहूदियों को यातना देने के विषय में।
2. स्त्रियों की स्वतंत्रता के विषय में आधुनिक विचार।
3. डच लोगों की प्रवृत्ति तथा प्रतिक्रिया।

तृतीय प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 2021-22

विषय- हिंदी (आधार)

(विषय कोड -302)

कक्षा-बारहवीं

निर्धारित समय : 2 घंटे अधिकतम अंक 40

सामान्य निर्देश :

- निम्नलिखित निर्देशों को सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए |
- इस प्रश्न पत्र में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे |
- इस प्रश्न पत्र में कुल 07 प्रश्न पूछे गए हैं | सभी के उत्तर देना अनिवार्य है |
- प्रश्नों के आंतरिक विकल्प भी दिए गए हैं |

<u>कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन</u>

प्रश्न 1 निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से किसी एक पर लगभग 200 शब्दों का

एक रचनात्मक लेख लिखिए | (5x1=5)

- परीक्षा के दिन
- मेरे शहर का पार्क
- लुप्त होते पारंपरिक खेल

प्रश्न 2 शहरों में सफ़ाई की अव्यवस्था के कारण दिन-प्रतिदिन बढ़ते प्रदूषण के प्रति चिंता प्रकट करते हुए नगर -पालिका अधिकारी को एक शिकायती पत्र लिखिए |

अथवा (5x1=5)

किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखकर कोरोना संकटकाल में लोगों के जीवन की रक्षा करते हुए अपना बलिदान देने वाले स्वास्थ्य कर्मियों एवं फ्रंट लाइन वर्कर की साहस और धैर्य को रेखांकित कीजिए |

7. प्रश्न 3 (क) कहानी का केंद्र बिंदु कथानक होता है | स्पष्ट कीजिए। (3x1=3)

अथवा

नाटक का शरीर किसे कहा गया है और क्यों ?

(ख) कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय किन -किन बातों को ध्यान रखना चाहिए| (2x1=2)

अथवा

नाटक की कहानी बेशक भूतकाल या भविष्य काल से संबंधित हो, तब भी उसे वर्तमानकाल में ही घटित होना पड़ता है| इस धारणा के पीछे क्या कारण है ?

प्रश्न 4 (क) समाचार लेखन से क्या अभिप्राय है ? (3x1=3)

अथवा

फीचर की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए |

(ख) समाचार लेखन के छह ककार कौन-कौन से हैं ? (2x1=2)

अथवा

आलेख लेखन में कौन-कौन सी सावधानियाँ रखना आवश्यक है ?

<u>खंड “ब”</u>

प्रश्न 5 काव्य पाठों पर आधारित दिए गए प्रश्नों में से तीन प्रश्नों के उत्तर 50-60 शब्दों में दीजिए | (3x2=6)

(क) ‘ऊषा’ कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है| स्पष्ट कीजिए|

(ख) पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है- तुलसी का यह काव्य सत्य, क्या इस समय का भी युग सत्य है?

(ग) फ़िराक की गजल में प्रकृति को किस तरह चित्रित किया है ?

प्रश्न 6 गद्य पाठों पर आधारित दिए गए प्रश्नों में से तीन प्रश्नों के उत्तर 50-60 शब्दों में दीजिए | (3x3=9)

(क) पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार बताइए कि लुट्टन सिंह ढोल को अपना गुरु क्यों मानता था?

(ख) नमक कहानी में भारत व पाक की जनता पर आरोपित भेदभावों के बीच मुहब्बत का नमकीन स्वाद घुला हुआ है ?

(ग) जाति प्रथा को श्रम -विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के क्या तर्क हैं ?

(घ) मानचित्र पर एक लकीर खींच देने भर से ज़मीन और जनता बँट नहीं जाती हैं। " नमक पाठ के आधार पर उचित तर्कों व उदाहरणों के जरिये इसकी पुष्टि करें।

प्रश्न 7 पूरक पुस्तिका से संबंधित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार दीजिए | (3x1=3)

(क) सिंधु घाटी सभ्यता-सम्पन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था| कैसे ?

अथवा

डायरी के पन्ने' पाठ के आधार पर ऐन के व्यक्तित्व की तीन विशेषताओं पर प्रकाश डालिए |

(ख) पुरातत्व के किन चिहनों के आधार पर आप यह कह सकते हैं कि-'सिंधु-सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी?" (2x1=2)

अथवा

'डायरी के पन्ने' के आधार पर औरतों की शिक्षा और उनके मानवाधिकारों के बारे में ऐन के विचारों को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए |

तृतीय प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

विषय- हिंदी (आधार)

(विषय कोड -302)

कक्षा-बारहवीं

अंक-योजना 2021-22

निर्धारित समय : 2 घंटे अधिकतम अंक 40

कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन

उत्तर 1 -

- मौलिकता -2 अंक
- विषय वस्तु -2 अंक
- भाषा की शुद्धता -1 अंक

उत्तर 2 -

- आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ -1 अंक
- प्रभावी विषयवस्तु -3 अंक
- भाषा की शुद्धता ,प्रवाह एवं लेख -1 अंक

उत्तर 3 - कहानी में प्रारंभ से अंत तक घटित सभी घटनाओं को कथानक कहते हैं | कथानक कहानी का प्रथम और महत्त्वपूर्ण तत्व होता है | इसे कहानी का प्रारंभिक नक्शा भी कहा जा सकता है | कहानी में प्रारंभ,मध्य और अंत के रूप में कथानक का सम्पूर्ण स्वरूप होता है | पूरी कहानी कथानक के इर्द -गिर्द घुमती है इसलिए हम ख सकते हैं कि कहानी का केंद्र बिंदु कथानक होता है |

अथवा

नाटक का शरीर शब्द को कहा गया है क्योंकि नाटक की दुनिया में शब्द अपनी एक नयी नीति और अलग अस्मिता के साथ आते हैं | यह शब्द कथानक का विकास करने में सक्षम होते हैं और किसी वातावरण की प्रस्तुति करने में सहायक होते हैं |

(ख) कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय निम्न बातों को ध्यान रखना चाहिए -

- कहानी के विस्तृत कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित करना |
- नाटक के दृश्य बनाने से पहले उसका एक खाका तैयार करना |
- कथानक के अनुसार नाटक के दृश्यों को तैयार करना |
- संवाद छोटे प्रभावशाली और बोलचाल की भाषा में हो |
- पात्रों की वेशभूषा चरित्र के अनुसार होना चाहिए |
- ध्वनि और प्रकाश की उचित व्यवस्था हो |

अथवा

उत्तर- नाटक भले ही भूत या भविष्यकाल से संबंधित हो , लेकिन उसका मंचन वर्तमान काल में ही करना पड़ता है | यह नाटक की एक सीमा भी है और खूबी भी कि हम काल की सीमा से परे कहानियों को भी वर्तमान काल में जाकर देख पाते हैं |

उत्तर 4 - समाचार लेखन किसी बात को लिखने का वह तरीका है जिसमें उस घटना ,विचार ,समस्या के सबसे अहम् तथ्यों ,सूचनाओं को व्यवस्थित तरीके से लिखा जाता है | इस शैली में किसी घटना का ब्यौरा कालक्रमानुसार के बजाय सबसे पहले महत्वपूर्ण तथ्य या सुचना से शुरू होता है |

अथवा

फीचर लेखन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है -

1. फीचर लेखन की शैली सरल और भावपूर्ण
2. नई जिज्ञासाएं जागृत करने की क्षमता
3. विचारों की अधिकता
4. नवीनता और ताजगी से युक्त
5. छोटा आकार

(ख) उत्तम समाचार लेखन के लिए छह सूचनाओं का प्रयोग होता है, जिसे छह ककार कहा जाता है | क्या, कहाँ ,कब ,कौन, क्यों, कैसे प्रश्नों के उत्तर में प्राप्त होती है |

किसी भी समाचार में पूर्ण संतुष्टि तभी मिलती है जब इन छह ककारों का उत्तर दिया जाए | क्या - क्या हुआ ? जिसके सम्बन्ध में समाचार लिखा जा रहा है |

कहाँ - घटना का सबंध किस नगर,गाँव ,प्रदेश से है ?

कब - समाचार का समय , दिन ,अवसर |

कौन - समाचार से कौन लोग संबंधित है |

क्यों - समाचार की पृष्भूमि |

कैसे - समाचार का पूरा विवरण |

अथवा

आलेख लेखन हेतु महत्त्वपूर्ण बातें -

1. आलेख ज्वलंत मुद्दों ,विषयों और महत्वपूर्ण चरित्रों पर लिखा जाना चाहिए |
2. आलेख जिज्ञासा पूर्ण ,नवीनता और ताजगी से परिपूर्ण होना चाहिए |
3. आलेख का आकार संक्षिप्त होना चाहिए |
4. इसमें. विचारों और तथ्यों की क्रमबद्धता रहती है ,विचार क्रमबद्ध रहना चाहिए |
5. भाषा सहज,सरल और प्रभावशाली होना चाहिए |
6. एक ही बात पुन: न लिखी जाए|
7. विश्लेषण शैली का प्रयोग करना चाहिए |

(खंड 'ब')

उत्तर 5- (क) कवि के नीले शंख, राख से लीपा हुआ गीला चौका, सिल, स्लेट, नीला जल और गोरी युवती की मखमली देह आदि उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है। इन्हीं उपमानों के माध्यम से कवि ने सूर्योदय का गतिशील वर्णन किया है। ये उपमान भी कविता को गति प्रदान करते हैं।

(ख) पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है-तुलसी का यह काव्य-सत्य कुछ हद तक इस समय का भी युग-सत्य हो सकता है किंतु यदि आज व्यक्ति निष्ठा भाव, मेहनत से काम करे तो उसकी सभी समस्याओं का समाधान हो जाता है। निष्ठा और पुरुषार्थ-दोनों मिलकर ही मनुष्य के पेट की आग का शमन कर सकते हैं। दोनों में एक भी पक्ष असंतुलित होने पर वांछित फल नहीं मिलता। अत: पुरुषार्थ की महत्ता हर युग में रही है और आगे भी रहेगी।

(ग) फिराक की गजल के प्रथम दो शेर प्रकृति वर्णन को ही समर्पित हैं। प्रथम शेर में कलियों के खिलने की प्रक्रिया का भावपूर्ण वर्णन है। कवि इस शेर को नव रसों से आरंभ करता है। हर कोमल गाँठ के खुल जाने में कलियों का खिलना और दूसरा प्रतीकात्मक अर्थ भी है कि सब बंधनों से मुक्त हो जाना, संबंध सुधर जाना। इसके बाद कवि कलियों के खिलने से रंगों और सुगंध के फैल जाने की बात करता है। पाठक के समक्ष एक बिंब उभरता है। वह सौंदर्य और सुगंध दोनों को महसूस करता है

उत्तर 6- (क) वास्तव में, लुट्न पहलवान का कोई गुरु नहीं था। जब पहली बार वह दंगल देखने गया तो वहाँ ढोल की थाप पर दांव-पेंच चल रहे थे। पहलवान ने इन थापों को ध्यान से सुना और उसमें अजीब-सी ऊर्जा भर गई। उसने चाँद सिंह को ललकारा और उसे चित कर दिया। ढोल की थाप ने उसे दंगल लड़ने की प्रेरणा दी और वह जीत गया। इसीलिए उसने कहा होगा कि उसका गुरु कोई पहलवान नहीं बल्कि यही ढोल है।

(ख) दोनों देशों को यद्यपि भूगोल ने विभाजित कर दिया है लेकिन लोगों में वही मुहब्बत अब भी समाई हुई है। यद्यपि यह आरोप लगाया जाता है कि इन देशों के बीच नफ़रत है लेकिन ऐसा नहीं है। इन दोनों के बीच रिश्ते मधुर और पवित्र हैं। इनमें मुहब्बत ही वह डोर है जो एक-दूसरे को बाँधे हुए है। मुहब्बत का नमकीन स्वाद इनके रिश्तों में घुला हुआ है। सिख बीबी, बंगाली अधिकारी और सफ़िया के माध्यम से कहानीकार ने इसी बात को सिद्ध किया है।

(ग) जातिप्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के निम्नलिखित तर्क हैं –

1. जाति प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन भी कराती है। सभ्य समाज में श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में विभाजन अस्वाभाविक है।
2. जाति प्रथा में श्रम विभाजन मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। इसमें मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा निजी क्षमता का विचार किए बिना किसी दूसरे के द्वारा उसके लिए पेशा निर्धारित कर दिया जाता है। यह जन्म पर आधारित होता है।

3. भारत में जाति प्रथा मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है, भले ही वह पेशा उसके लिए अनुपयुक्त या अपर्याप्त क्यों न हो। इससे उसके भूखों मरने की नौबत आ जाती है।

(घ) मानचित्र पर एक लकीर खींच देने भर से जमीन और जनता बँट नहीं जाती है।-लेखिका का यह कथन पूर्णतया सत्य है। राजनीतिक कारणों से मानचित्र पर लकीर खींचकर देश को दो भागों में बाँट दिया जाता है। इससे जमीन व जनता को अलग-अलग देश का लेवल मिल जाता है, परंतु यह कार्य जनता की भावनाओं को नहीं बाँट पाता। उनका मन अंत तक अपनी जन्मभूमि से जुड़ा रहता है। पुरानी यादें उन्हें हर समय घेरे रहती हैं। जैसे ही उन्हें मौका मिलता है, वे प्रत्यक्ष तौर पर उभरकर सामने आ जाती हैं। 'नमक' कहानी में भी सिख बीवी लाहौर को भुला नहीं पातीं और 'नमक' जैसी साधारण चीज वहाँ से लाने की बात कहती हैं। कस्टम अधिकारी नौकरी अलग देश में कर रहे हैं, परंतु अपना वतन जन्म-प्रदेश को ही मानते हैं। सभी का अपनी जन्म-स्थली के प्रति लगाव है।

उत्तर 7 (क) सिंधु सभ्यता बहुत संपन्न सभ्यता थी। प्रत्येक तरह के साधन इस सभ्यता में थे। इतना होने के बाद भी इस सभ्यता में दिखावा नहीं था। कोई बनवावटीपन या आडंबर नहीं था। जो भी निर्माण इस सभ्यता के लोगों ने किया, वह सुनियोजित और मनोहारी था। निर्माण शैली साधारण होने के बाद भी दिखावे से कोसों दूर थे। जो वस्तु जिस रूप में सुंदर लग सकती थी, उसका निर्माण उसी ढंग से किया गया था। इसीलिए सिंधु सभ्यता में भव्यता थी, आडंबर नहीं।

अथवा

'डायरी के पन्ने' पाठ के आधार पर ऐन के व्यक्तित्व की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

1. **चिंतक व मननशील -** ऐन का बौद्धिक स्तर बहुत ऊँचा है। वह नस्लवादी नीति के प्रभाव को प्रस्तुत करती है। उसकी डायरी भोगे हुए यथार्थ की उपज है। वह अज्ञातवास में भी अध्ययन करती है।

2. **स्त्री-संबंधी विचार -** ऐन स्त्रियों की दयनीय दशा से चिंतित है। वह स्त्री-जीवन के अनुभव को अतुलनीय बताती है। वह चाहती है कि स्त्रियों को पुरुषों के बराबर सम्मान दिया जाए। वह स्त्री-विरोधी पुरुषों व मूल्यों का विरोध करना चाहती है।

3. **संवेदनशील -** ऐन संवेदनशील लड़की है। उसे बात-बात पर सबसे डाँट पड़ती है क्योंकि उसकी भावनाओं को समझने वाला कोई नहीं है। वह लिखती भी है-"काश! कोई तो होता जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से समझ जाता।" अपनी डायरी में अपनी गुड़िया को वह पत्र लिखती है।

(ख) पुरातत्ववेत्ताओं ने जो भी खुदाई की और खोज की। उसमें उन्हें मिट्टी के बर्तन, सिक्के, मूर्तियाँ, पत्थर और लकड़ी के उपकरण मिले। इन चित्रों के फलस्वरूप यही बात सामने आई कि लोग समय के अनुरूप इन वस्तुओं का उपभोग करते थे। दूसरा उनकी नगर योजना भी उनकी समझ का पुख्ता प्रमाण है। आज की नगर योजना भी उनकी योजना के समकक्ष नहीं ठहरती। जो कुछ उन्होंने नगरों, गलियों, सड़कों को साफ़-सुथरा रखने की विधि अपनाई, वह उनकी समझ को ही दर्शाती है।

अथवा

ऐन समाज में स्त्रियो की स्थिति की अन्यायपूर्ण कहती है। उसका मानना है कि शारीरिक अक्षमता व अधिक कमजोरी के बहाने पुरुषों ने स्त्रियों को घर में बाँधकर रखा है। ऐन चाहती है कि स्त्रियों को पुरुषों के बराबर सम्मान मिले क्योकि समाज के निर्माण में उनका योगदान महत्त्वपूर्ण है। वह स्त्री–जीवन के अनुभव को अतुलनीय बताती है।